लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–27

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–4

थोमस फ्रैडैरिक केन

1885

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-27
Book Title: Italy Ki Lokpriya Kathayen-4 (Italian Popular Tales-4)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5
इटली की लोकप्रिय कथाऐं–4 7
अध्याय 5ः नर्सरी की कहानियॉ 9
76 डौन फ़िरीयूलीडू 11
77 छोटा चना 15
78 पिटिड्डा 31
79 सैक्सटन की नाक 36
81 गौडमदर लोमड़ी 48
82 बिल्ली और चूहा 56
83 दावत का एक दिन 67
84 तीन भाई 73
85 बूचैटीनो 77
86 तीन बतख बच्चियॉ 83
87 मुर्गा 92
88 मुर्गा जो पोप बनना चाहता था 96
89 बकरा और लोमड़ा 100
90 चींटी और चूहा 101
अध्याय 6ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी 104
91 रसोइया 106
92 विचारहीन ऐवौट 108
93 बास्तियानीलो 114
94 किसमस 123
95 दॉव 126

96 वह कैंची थी 129
97 डाक्टर का असिस्टैन्ट 133
98 फ़िराज़ानू की पत्नी और रानी 136
99 जियूफ़ा और प्लास्टर की मूर्ति 144
100 जियूफ़ा और जज 149
101 छोटा औमलैट 152
102 खाओ मेरे कपड़ों 155
103 जियूफ़ा के कारनामे 157
104 एक बेवकूफ 172
105 चाचा कैप्रियानो 176
106 पीटर फुलोन और अंडा 190
107 होशियार किसान 192
108 होशियार लड़की 196
109 केंकड़ा 205

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–4

यों तो हर देश की अपनी अपनी लोक कथाऐं होती है पर यूरोप महाद्वीप में ब्रिटेन जर्मनी फ्रांस और इटली अपनी एक विशेष जगह रखते हैं। इन देशों में भी यों तो सभी जगह लोक कथाऐं कही सुनी जाती रही हैं पर संगठित रूप में सबसे पहले केवल इटली देश ने ही शुरू की हैं। सन् **1313** में बोकाचाओ की "इल डैकामिरोन", इसके बाद सन् **1550** में स्ट्रापरोला की ""फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला", इसके बाद **1885** में थोमस केन की "इटली की लोकप्रिय कहानियॉ" और फिर सन् **1893** में जियामबतिस्ता की "इल पैन्टामिरोन" शुरू में लिखी गयी कहानियों का एक अच्छा संग्रह है।

इस पुस्तक से पहले इटली के एक और संग्रह "इतालो कैलवीनो की इटली की लोक कथाऐं" से जिसमें **200** कहानियॉ थीं **125** कहानियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया था जो आठ भागों में बॉट कर प्रकाशित किया गया था।[2] उस पुस्तक की लोकप्रियता को देख कर एक और पुस्तक का अनुवाद किया गया। यह पुस्तक थोमस केन की पुस्तक "इटली की लोकप्रिय कथाऐं"[3] है। इस पुस्तक में कुल मिला कर **109** कथाऐं हैं जिनको केन ने छह अध्यायों में बॉटा है। हम इसको पढ़ने की आसानी के लिये चार भागों में बॉट कर आपके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं —

भाग **1** — अध्याय **1** ः परियों की कहानियॉ
भाग **2** — अध्याय **2** ः परियों की कहानियॉ क्रमशः
अध्याय **3** ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ
भाग **3** — अध्याय **4** ः दंत कथाऐं और भूतों की कहानियॉ
भाग **4** — अध्याय **5** ः नर्सरी की कहानियॉ
अध्याय **6** ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी

इस पुस्तक की सारी कहानियॉ यहॉ अनुवादित की गयी हैं। इस पुस्तक के पहले अध्याय में दी गयी कथाऐं हमारी पुस्तक के पहले भाग में दी गयी थीं। इस पुस्तक के दूसरे और तीसरे अध्याय की कथाऐं हमारी पुस्तक के दूसरे भाग में दी गयी थीं। इस पुस्तक के चौथे अध्याय की कथाऐं हमारी पुस्तक के तीसरे भाग में दी गयी थीं। और अब यह प्रस्तुत है हमारी पुस्तक का चौथा और अन्तिम भाग यानी मूल पुस्तक का पॉचवा और छठा अध्याय।

आशा है कि आपको इटली की ये पुरानी कहानियॉ अवश्य ही पसन्द आयेंगीं।

---

[2] "Italo Calvino: Folktales of Italy". Translated by George Martin. 1980.
[3] Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

अध्याय 5ः नर्सरी की कहानियॉ

जितनी कथाऐं हमने अभी तक यहॉ दी हैं हालॉकि बच्चे उनको पढ़ सकते हैं पर वे वास्तव में ये कहानियॉ बच्चों के लिये नहीं हैं। और जो कुछ थोड़ी सी भी हम अब देने जा रहे हैं वे भी उनके लिये बहुत सारी नहीं है। इसमें कोई शक नहीं हैं कि ऐसी बहुत सारी कहानियॉ मौजूद हैं पर संग्रहकर्ताओं ने इधर की तरफ ध्यान कम दिया है। हालॉकि जियूसैप्पे पित्रे ने अपने बहुत बड़े संग्रह में बच्चों के लिये केवल 11 कहानियॉ लिखी हैं।[4] और जो दूसरे संग्रहों में भी ऐसी कहानियॉ दी गयी हैं पर वे भी पित्रे की कहानियों जैसी ही हैं पर हम यहॉ पर केवल वही कहानियॉ लेंगे जो बच्चों को बहुत पसन्द हैं।

इस पुस्तक में नीचे लिखी हुई दो कहानियों के नाम तो दिये हुए हैं पर कहानियॉ पूरी तौर पर नहीं दी हुई हैं इसलिये हम उन कहानियों को यहॉ नहीं दे पा रहे हैं। वे कहानियॉ हैं —

74 मिस्टर सावधान

75 एक नाई की कहानी[5]

[4] Giuseppe Pitre. Tales No 130-141.

[5] Mr Attentive. Tale N 74. AND Story of a Barber. Tale No 75.

76 डौन फ़िरीयूलीडू[6]

एक बार की बात है कि एक किसान था। वह अपनी बेटी के साथ रहता था। उसकी बेटी उसके लिये रोज खेत पर खाना ले कर जाती थी।

एक दिन पिता ने अपनी बेटी से कहा — "कल मैं रास्ते में भूसा बिखेरता जाऊँगा ताकि तुझे मुझे ढूँढने में कोई परेशानी न हो। तू उस भूसे के पीछे पीछे आ जाना तो तू मुझ तक आ जायेगी।" पिता यह कह कर चला गया।

इत्तफाक की बात कि उस दिन एक बूढ़ा राक्षस[7] उधर से गुजरा और रास्ते में भूसा बिखरा देखा तो सोचा यह तो बड़ी अच्छी चीज़ है। उसने वह भूसा उठा लिया और उसको अपने घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर बिखरा दिया।

जब किसान की बेटी अपने पिता के लिये खाना ले जाने लगी तो अपने पिता के कहे अनुसार वह रास्ते में पड़े भूसे के पीछे चलती गयी। इस तरह से वह अपने पिता के पास पहुँचने की बजाय उस राक्षस के घर पहुँच गयी।

---

[6] Don Firriulieddu. Tale No 75. Taken from Giuseppe Pitre. (Tale No 130).

[7] Translated for the word "Ogre"

जब राक्षस ने उस लड़की को देखा तो उसने उससे कहा — "तुमको तो मेरी पत्नी होना चाहिये।"

यह सुन कर लड़की ने रोना शुरू कर दिया।

उधर लड़की के पिता ने देखा कि उसकी बेटी तो उस दिन खाना ले कर नहीं आयी। जब वह शाम को घर पहुँचा तो वह उसको घर में भी नहीं मिली। जब वह उसको कहीं भी नहीं मिली तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसको एक और बेटा या बेटी दे दे।

एक साल बाद उसके एक बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने डौन फिरीयूलीडू रखा।

जब वह बेटा तीन दिन का हुआ तो उसने पूछा "क्या आपने

मेरे लिये शाल[8] बनाया? आप मुझे एक शाल दे दें और एक कुत्ता दे दें क्योंकि मुझे अपनी बहिन को ढूँढना है।"

सो उसने शाल ओढ़ा और कुत्ता साथ लिया और अपनी बहिन को ढूँढने चल दिया। कुछ देर चलने के बाद वह एक मैदान में आ गया जहाँ बहुत सारे आदमी खड़े हुए अपने जानवर चरा रहे थे।

उसने उन चरवाहों से पूछा — "ये इतने सारे जानवर किसके हैं?"

[8] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

चरवाहों ने जवाब दिया — "ये सब जानवर राक्षस के हैं जो न भगवान से डरता है और न किसी सेंट से। वह केवल डौन फिरीयूलीडू से डरता है जो केवल तीन दिन का है और रास्ते में है।"

यह सुन कर डौन ने अपने कुत्ते को रोटी दी और कहा — "खा मेरे कुत्ते रोटी खा। और भौंक मत क्योंकि हमको अभी बहुत अच्छे अच्छे काम करने हैं।"

यह सुन कर कि वह राक्षस डौन फिरीयूलीडू से डरता है डौन फिरीयूलीडू आगे चला तो उसको बहुत सारी भेड़ें मिलीं तो उसने वहॉ भी उनके चरवाहों से पूछा — "ये इतनी सारी भेड़ें किसकी हैं?"

भेड़ों के उन चरवाहों ने भी उसको वही जवाब दिया जो जानवरों के चरवाहों ने दिया था — "ये सब भेड़ें राक्षस की हैं जो न भगवान से डरता है और न किसी सेंट से। वह केवल डौन फिरीयूलीडू से डरता है जो तीन दिन का है और रास्ते में है।"

अब वह राक्षस के घर तक आ पहुॅचा था। वहॉ आ कर उसने राक्षस के घर का दरवाजा खटखटाया तो उसकी बहिन ने दरवाजा खोला। उसने देखा कि दरवाजे पर एक बच्चा खड़ा है तो उसने उससे पूछा — "तुम्हें कौन चाहिये?"

बच्चा बोला — "मैं तुम्हें ढूँढ रहा हूँ बहिन। मैं तुम्हारा भाई हूँ और तुम्हें घर ले जाने के लिये आया हूँ। अब तुम माँ के पास अपने घर चलो।"

जब राक्षस ने सुना कि डौन फिरीयूलीडू वहाँ है तो वह ऊपर चला गया और डर के मारे वहाँ जा कर छिप गया।

डौन ने अपनी बहिन से पूछा — "राक्षस कहाँ है?"

"ऊपर है।"

डौन ने अपने कुत्ते से कहा — "तुम ऊपर जाओ और भौंको मैं अभी आता हूँ।"

मालिक का हुक्म पाते ही कुत्ता ऊपर चला गया और जा कर भौकने लगा। डौन फिरीयूलीडू उसके पीछे पीछे चला गया और राक्षस को मार दिया। वहाँ से उसने फिर उस राक्षस का सारा पैसा लिया और अपनी बहिन को ले कर घर वापस आ गया।

सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

इस कहानी में हीरो का साइज़ और पिता की तरफ जाने के लिये भूसा डालने वाली बात हमें "टौम थम्ब" की कहानी की याद दिलाती है। इसका टस्कन रूप आगे दिया जाता है।

77 छोटा चना[9]

यह एक टस्कन कहानी है जो टौम थम्ब से बहुत मिलती जुलती है।

एक बार की बात है कि इटली में एक पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। पति बढ़ई का काम करता था और पत्नी उसका घर सँभालती थी। वह जब घर आ जाता था तो उसे कोई काम नहीं होता था सिवाय अपनी पत्नी को डॉटने के क्योंकि उसके कोई बच्चा नहीं था।

वह स्त्री भी बच्चे न होने की वजह से बहुत दुखी रहती थी और अक्सर रोती रहती थी। वह बहुत दान देती थी। चर्च में बहुत सारे त्यौहार मनाती थी पर फिर भी उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक स्त्री उसके दरवाजे पर भीख मॉगने आयी तो बढ़ई की पत्नी ने उससे कहा — "मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगी क्योंकि मैंने बहुत सारा दान दिया है, चर्च में बहुत दिनों तक बहुत सारी पूजा की हैं और वहॉ के त्यौहार मनाये हैं और फिर भी मेरे कोई बेटा नहीं है।"

"तुम मुझे दान दो तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुम्हें उतना दूँगी जितना तुम चाहोगी।"

---

[9] Little Chickpea. Tale No 77. Chickpea means Cecino.
[This story reminds us the story of "Tom Thumb". This version is the Tuscan version of the "Tom Thumb"]

"तुम मुझे एक पूरी डबल रोटी दो और फिर मैं तुमको कुछ दूँगी जिससे तुम्हारे बच्चे होंगे।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुमको दो डबल रोटियाँ दूँगी।"

"नहीं नहीं। इस समय तो मुझे केवल एक ही डबल रोटी चाहिये। तुम मुझे दूसरी डबल रोटी तब दे देना जब तुम्हारे बच्चे हो जायें।"

सो बढ़ई की पत्नी ने उसको एक डबल रोटी दे दी। वह स्त्री बोली — "ठीक है अब मैं अपने घर जाती हूँ। मुझे अपने बच्चों को भी खाना खिलाना है वे भूखे होंगे। उसके बाद मैं तुम्हारे लिये वह चीज़ ले कर आती हूँ जिससे तुम्हारे बच्चे होंगे।"

"ठीक है।"

कह कर वह स्त्री घर चली गयी। उसने अपने बच्चों को खाना खिलाया। एक थैला उठा कर उसमें कुछ सफेद चना[10] भरा और बढ़ई की पत्नी के घर चल दी।

वहाँ जा कर उसने बढ़ई की पत्नी से कहा — "लो यह चनों का थैला है। इनको तुम अपने आटा मलने वाले बर्तन में रख दो। अगले दिन इनमें से इतने ही बच्चे निकल आयेंगे।"

[10] Translated for the word "Chickpeas" – it is called "Chanaa" or "Chholaa" or "Kaabulee Chanaa" too in North India

बढ़ई की पत्नी ने उस थैले में झॉक कर देखा तो उसमे तो चने के सौ दाने थे। उसने आश्चर्य से पूछा — "पर चने के सौ दाने बच्चों में कैसे बदल सकते हैं?"

"यह तुम कल देखना।"

बढ़ई की पत्नी ने सोचा "मैं इस सबके बारे में अपने पति को कुछ नहीं बताऊँगी क्योंकि अगर किसी वजह से इन दानों में से बच्चे नहीं निकले तो वह तो मुझे बहुत डॉटेगा।"

पर उसने उन चनों को अपने आटा मलने वाले बर्तन में रख दिया और बेचैनी से सुबह का इन्तजार करने लगी।

रोज की तरह से बढ़ई घर वापस लौटा तो उसने अपनी पत्नी को खूब डॉटा। पर उस रात वह कुछ नहीं बोली और यह कहती हुई सोने चली गयी "बस अब कल देखना।"

अगली सुबह तो उसके वे चनों के 100 दाने उसके 100 बेटे बन चुके थे।

एक चिल्लाया — "पिता जी, मुझे कुछ पीने को चाहिये।"

दूसरा चिल्लाया — "पिता जी, मुझे कुछ खाने को चाहिये।"

एक दूसरा बोला — "पिता जी, मुझे गोद में उठा लो।"

इस सबको देख कर बढई ने एक डंडी उठायी, उस बर्तन की तरफ दौड़ा गया जिसमें वे सब बच्चे थे और उन सबको मार दिया। यह तो तुमको मालूम ही है कि वे सब कितने छोटे थे – केवल चने जितने बड़े।

पर किस्मत से उनमें से एक बच्चा बाहर कूद गया और जा कर उनके सोने वाले कमरे में रखे एक घड़े के हैन्डिल पर जा कर छिप गया।

जब बढ़ई अपनी दूकान पर चला गया तो उसकी पत्नी बोली — "यह भी क्या गधा है। अब तक तो वह मेरे बच्चे न होने पर नाराज था और आज जब बच्चे हुए तो उसने उन सबको मार दिया।"

यह सुन कर उस बच्चे ने जो बच कर भाग गया था अपनी मॉ से पूछा — "मॉ, क्या पिता जी गये?"

"हॉ गये।" पर यह आवाज सुन कर तो वह खुद भी चौंक गयी कि यह आवाज कहॉ से आयी क्योंकि उसको लगा कि उसके पति ने तो उसके सब बच्चों को मार डाला था।

उसने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम कैसे बच गये। कहॉ हो तुम?"

"ओह चुप मॉ चुप, मैं यहॉ घड़े के हैन्डिल पर बैठा हूॅ। बस तुम मुझे यह बता दो कि पिता जी गये क्या?"

मॉ बोली — "हॉ गये। अब तुम बाहर निकल आओ।"

सो वह बच्चा बाहर निकल आया। उसको देखते ही मॉ के मुॅह से निकला — "अरे तुम कितने सुन्दर हो। मै तुम्हें क्या कह कर पुकारूॅ?"

बच्चा बोला — "चिचीनो[11]।"

मॉ बोली — "बहुत अच्छे चिचीनो। तुम्हें पता है चिचीनो कि अब तुम्हारे पिता के खाने का समय हो गया है सो अब तुम अपने पिता को उनकी दूकान पर खाना दे आओ।"

"ठीक है। तो तुम मेरे सिर पर खाने की टोकरी रख दो मैं उनको उनकी दूकान पर खाना दे आता हूॅ।"

जब खाने का समय हुआ तो बढ़ई की पत्नी ने उसके सिर पर खाने की टोकरी रख दी और उसको अपने पति की दूकान पर उसका खाना ले कर भेज दिया।

जब चिचीनो दूकान के पास पहुॅचा तो उसने अपने पिता को ज़ोर ज़ोर से बुलाना शुरू कर दिया — "पिता जी, आइये और मुझसे मिलिये। मैं आपका खाना ले कर आ रहा हूॅ।"

उसको देख कर बढ़ई ने सोचा "क्या मैंने सबको मार नहीं दिया था या फिर उनमें से कोई बच गया?"

सो वह चिचीनो के पास गया और उससे पूछा — "अरे मेरे अच्छे बेटे, तुम मेरी मार से कैसे बच गये?"

"मैं उस बर्तन में से बाहर गिर गया था पिता जी और फिर वहॉ से में सोने वाले कमरे में चला गया। वहॉ मैं घड़े के हैन्डिल के ऊपर जा कर छिप कर बैठ गया इसी लिये मैं बच गया।"

[11] Cecino – name of the remaining child

"बहुत अच्छे चिचीनो। अब तुम ऐसा करो कि तुम देश की जनता में जाओ और वहॉ जा कर पता करो कि किसी के पास ऐसी कोई टूटी चीज़ है क्या जो वह मरम्मत करवाना चाह रहा हो।"

"ठीक है।"

कह कर बढ़ई ने चिचीनो को अपनी जेब में रख लिया और घर की तरफ चल दिया।

जब वह घर जा रहा था तो वह रास्ते भर उससे बात करता रहा। उसके आस पास किसी को न देख कर लोगों ने समझा कि वह पागल हो गया है क्योंकि उनको तो यह पता ही नहीं था कि उसकी जेब में उसका बेटा बैठा था।

जब वह घर जा रहा था तो उसको बहुत सारे लोग मिले। उसने उनसे पूछा — "क्या आपके पास कुछ मरम्मत कराने के लिये है?"

"हॉ है तो। हमारे पास हमारे बैलों की कुछ चीज़ें हैं मरम्मत कराने के लिये पर वे चीज़ें हम तुमको नहीं देंगे क्योंकि तुम तो हमको कुछ पागल से लग रहे हो।"

बढ़ई बोला — "तुम्हारा यह कहने का क्या मतलब है कि मैं तुम्हें कुछ पागल सा लगता हूॅ? मैं तुम सबसे बहुत होशियार हूॅ। तुम मुझसे यह क्यों कहते हो कि मैं पागल सा लगता हूॅ?"

"ऐसा हम इसलिये कहते हैं कि तुम्हारे पास कोई तो है नहीं पर फिर भी तुम बात किये जा रहे हो।"

"मेरे पास मेरा बेटा है। मैं उसी से बात कर रहा था।"

"तुम्हारा बेटा? पर वह है कहॉ?"

"वह मेरी जेब में है।"

"अरे वाह। यह तो बेटे को रखने की बड़ी अच्छी जगह है।"

"हॉ वह तो है। मैं तुमको अभी दिखाता हूॅ।"

कह कर उसने अपनी जेब से चिचीनो को निकाला जो इतना छोटा था कि वह अपने पिता की एक उॅगली पर खड़ा हुआ था।

"ओह कितना प्यारा बच्चा है तुम इसको हमें बेच दो।

"क्या? तुम क्या सोचते हो कि मैं अपना वह बेटा तुमको बेचूॅगा जो मेरे लिये इतना कीमती है? नहीं नहीं कभी नहीं।"

"ठीक है मत बेचो।"

तब वह क्या करेगा? उसने चिचीनो को अपने बैल के एक सींग पर बिठा दिया और उससे कहा — "तुम यहॉ थोड़ी देर बैठो मैं ज़रा घर से इसके बैलों के सामान की मरम्मत का सामान ले कर आता हूॅ।"

"हॉ हॉ आप डरिये नहीं। मैं यहॉ इस बैल के सींग पर ही बैठा रहूॅगा।" बढ़ई चिचीनो को बैल के सींग पर बिठा कर उनके बैलों के सामान की मरम्मत करने का सामान लेने घर चला गया।

इस बीच दो चोर वहॉ से गुजरे तो उन्होंने रास्ते में दो बैलों को देखा तो उनमें से एक चोर बोला — "तुम उन दो बैलों को वहॉ खड़े देख रहे हो न। चलो उनको चुरा लेते हैं।"

यह सोच कर जैसे ही वे उनके पास गये तो चिचीनो चिल्ला पड़ा — "पिता जी देखिये, यहॉ तो चोर हैं। वे आपके बैल चुरा रहे हैं।"

यह सुन कर एक चोर बोला — "अरे यह आवाज कहॉ से आयी?"

यह देखने के लिये कि यह कौन बोला वे उन बैलों के और पास गये तो उनको और पास आता देख कर चिचीनो ने और ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया — "पिता जी अपने बैल देखिये, चोर आपके बैलों को चुराने आ रहे हैं।"

पर फिर भी उनकी समझ में नहीं आया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी।

तभी बढ़ई वहॉ आ गया तो चोरों ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी यह आवाज कहॉ से आ रही थी?"

"यह मेरे बेटे की आवाज है।"

"पर तुम्हारा बेटा तो हमको कहीं दिखायी नहीं दे रहा। वह है कहॉ?"

"अरे तुमको दिखायी नहीं दे रहा वह? वह बैठा है एक बैल के सींग के ऊपर।" जब उसने उनको अपना बेटा दिखाया तो वे भी बोले — "तुम हमको अपना बेटा बेच दो। हम इसके लिये तुमको जितना तुम चाहोगे उतना पैसा देंगे।"

बढ़ई बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तो तुम्हें इसे बेच भी दूँ पर तुम नहीं जानते कि अगर मैंने इसे तुम्हें बेच दिया तो मेरी पत्नी कितनी नाराज होगी।"

"मैं बताऊँ कि तुम अपनी पत्नी से क्या कहना। तुम कहना कि वह रास्ते में मर गया।"

उन चोरों ने उसको इतना ज़्यादा लालच दिया कि उसने उनसे दो थैले भर कर पैसे ले कर चिचीनो को उन्हें बेच दिया। उनमें से एक चोर ने चिचीनो को अपनी जेब में रखा और वे आगे चल दिये।

चिचीनो और चोर

जब वे चोर चिचीनो को ले कर जा रहे थे तो वे राजा के अस्तबल के सामने से गुजरे। उनमें से एक बोला — "चलो ज़रा देखते हैं कि राजा के अस्तबल में क्या है और हम वहाँ से एक घोड़े का जोड़ा चुरा सकते हैं या नहीं।"

"हाँ ठीक है।"

फिर उन्होंने चिचीनो से कहा — "देखो तुम हमको धोखा मत देना।"

"डरो नहीं, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा।"

सो वे दोनों राजा के अस्तबल में जा पहुँचे और वहाँ से उन्होंने तीन घोड़े चुरा लिये। उनको वे अपने घर ले गये ओर उनको अपने अस्तबल में बाँध दिया।

बाद में उन्होंने चिचीनो से कहा — "देखो हम लोग बहुत थक गये हैं। तुम हमारा एक काम कर दो कि तुम नीचे जाओ और घोड़ों को ओट्स[12] खिला दो।"

सो चिचीनो उन घोड़ों को ओट्स खिलाने के लिये नीचे चला गया। वहाँ जा कर वह एक घोड़े के सिर के ऊपर लगे चमड़े के साज पर सो गया। इस बीच में एक घोड़ा उसको खा गया।

जब चिचीनो घोड़ों को ओट्स खिला कर वापस नहीं लौटा तो चोरों ने सोचा कि वह शायद अस्तबल में ही सो गया होगा सो वे उसको वहाँ देखने गये।

वहाँ जा कर उन्होंने उसको पुकारा — "चिचीनो तुम कहाँ हो?"

चिचीनो घोड़े के पेट के अन्दर से ही बोला — "मैं काले घोड़े के अन्दर हूँ।" यह सुन कर चोरों ने काले घोड़े को मार दिया पर चिचीनो तो उनको वहाँ पर कहीं भी नहीं मिला

उन्होंने उसको फिर पुकारा — "चिचीनो तुम कहाँ हो?"

[12] Oats is kind of grain. See its picture above.

अबकी बार चिचीनो बोला — "मैं कत्थई घोड़े के अन्दर हूँ।" यह सुन कर चोरों ने कत्थई घोड़े को भी मार दिया पर चिचीनो उनको वहाँ पर भी कहीं नहीं मिला।

वहाँ जा कर उन्होंने उसको फिर पुकारा — "चिचीनो तुम कहाँ हो?" पर इस बार चिचीनो चुप ही रहा बोला नहीं।

चोर बहुत दुखी हो गये। वे बोले — "कितने दुख की बात है कि वह बच्चा हमारे कितने काम का था और वह अब हमें नहीं मिल रहा।" तब उन्होंने अपने दोनों मारे गये घोड़ों को अस्तबल से खींच कर बाहर निकाल लिया।

तभी वहाँ से एक बहुत ही भूखा भेड़िया जा रहा था। उसने उन दोनों घोड़ों को वहाँ पड़ा देखा तो उसने सोचा कि आज तो उसकी घोड़ों की दावत अच्छी रहेगी।

सो उसने वहाँ उन घोड़ों का माँस खूब पेट भर कर खाया। इसी खाने के साथ साथ चिचीनो भी उसके पेट में चला गया। उसके बाद वह भेड़िया वहाँ से चला गया। दोबारा भूख लगने पर उसने सोचा कि अबकी बार वह बकरा खायेगा।

जब चिचीनो ने भेड़िये को बोलते देखा तो वह ज़ोर से चिल्लाया — "ओ बकरियों के रखवालों, देखो यह भेड़िया तुम्हारी बकरियाँ खाने आ रहा है।"

भेड़िये ने जब यह सुना तो उसको लगा कि हो सकता है कि शायद कुछ हवा उसके पेट के अन्दर चली गयी है यह वही बोल रही है।

उसने खुद को एक पत्थर से टकराया ताकि उससे उसकी हवा निकल जाये। इससे उसकी हवा और चिचीनो दोनों ही बाहर आ गये। चिचीनो एक पत्थर के नीचे छिप गया ताकि भेड़िया उसे देख न ले।

चिचीनो और डाकू

उसी समय तीन डाकू पैसों का एक थैला ले कर उधर से जा रहे थे तो वे अपने पैसों का बॅटवारा करने के लिये वहीं रुक गये।

उनमें से एक बोला — "अब देखो मैं एक एक कर के गिनता हूॅ और तुम सब लोग चुप रहना। अगर कोई बोला तो मैं उसकी जान ले लूॅगा।"

अब तुम सोच सकते हो कि सभी चुप हो कर बैठ गये क्योंकि कोई मरना नहीं चाहता था। अब उसने गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

तभी चिचीनो बोला — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

यानी उसने उस डाकू के शब्द दोहरा दिये।

गिनने वाला डाकू बोला — "तो तुम लोग चुप नहीं रहोगे। बस अब मैं तुम्हें मारने वाला हूँ।" और यह कह कर उसने एक आदमी को तो मार ही दिया।

"मैं अब देखता हूँ कि अब तुम चुप रहते हो कि नहीं। अगर अब भी तुम बोले तो मैं तुम्हारी भी जान ले लूँगा।"

कह कर उसने फिर से गिनना शुरू कर दिया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

"ध्यान रखना अगर मुझे तुमसे फिर से कहना पड़ा कि चुप रहो तो मैं तुम्हें जान से मार दूँगा।"

"तुम क्या सोचते हो कि क्या मैं बोलना चाहूँगा? मैं मरना नहीं चाहता।"

उसने फिर से गिनना शुरू कर दिया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

डाकू बोला — "तुम चुप नहीं रहोगे। अब मैं तुम्हें मारता हूँ।" और उसने दूसरे आदमी को भी मार दिया।

वह फिर बोला — "अब तो मैं अकेला हूँ अब मैं अपने आप गिन सकता हूँ। अब मेरे बीच में कोई नहीं बोलेगा।"

सो उसने फिर से गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

और चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

डाकू बोला — "लगता है कि यहॉ कोई छिपा हुआ है। मुझे यहॉ से भाग जाना चाहिये नहीं तो वह मुझे मार देगा।" यह सोचते ही डर के मारे उसने अपना पैसे का थैला तो वहीं छोड़ा और वहॉ से भाग लिया।

जब चिचीनो ने यह पक्का कर लिया कि अब वहॉ कोई नहीं है तो वह पत्थर के नीचे से निकला, पैसे का थैला अपने सिर पर रखा और अपने घर की तरफ चल दिया।

जब उसकी मॉ ने उसे आते हुए देखा तो वह उसको बाहर तक लेने के लिये आयी। उसके सिर से पैसे का थैला उतारा और बोली — "ज़रा ध्यान से चिचीनो। देखना तू कहीं इस बारिश के पानी में न डूब जाना।"

कह कर मॉ घर के अन्दर चली गयी पर वह चिचीनो को देखने के लिये मुड़ी कि वह उसके पीछे आ रहा है या नहीं तो वह तो उसे कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

उसने अपने पति को बताया कि चिचीनो ने क्या किया था। फिर उन दोनों ने उसको इधर उधर बहुत खोजा तब कहीं जा कर वह उनको बारिश के पानी के एक छोटे से गड्ढे में डूबा हुआ मिला।

उसने उसको गड्ढे में से बाहर निकाला और घर में अन्दर ले कर आयी।

एक चने से एक बच्चा बनना एक और कहानी में भी दिखाया गया है – वह है "सर पैपरकौर्न" जिसे हम अभी आगे देंगे।

अगली कहानी पूरे यूरोप में बहुत लोकप्रिय है और बच्चों के लिये लिखी गयी कविताओं का बहुत मजेदार उदाहरण है। इसके बारे में यह भी एक मजेदार बात है कि यह कहानी थोड़ी देर से आयी और लोगों से सुन कर लिखी गयी है न कि यूरोप की कहानियों से निकाली गयी है। ऐसी कहानी का सबसे अच्छा उदाहरण है "घर जो जैक ने बनाया"।[13]

यह कहानी अंग्रेजी की एक बहुत लोकप्रिय कहानी का ही एक रूप है जिसमें एक बढ़िया को एक छह पैन्स का सिक्का मिल जाता तो वह बाजार जा कर उसका एक सूअर खरीद लेती है। जब वह उसको घर ले कर आ रही होती है तो सूअर पुल पार नहीं करता। बुढ़िया उसको काटने के लिये एक कुत्ते को बुलाती है पर कुत्ता उसे काटने नहीं आता। फिर वह बारी बारी से डंडा आग पानी बैल कसाई रस्सी चूहा बिल्ली को बुलाती है।

सब उसकी सहायता करने के लिये मना कर देते हैं सिवाय बिल्ली के जो उसको एक प्याला दूध के बदले में सहायता करने के लिये तैयार हो जाती है। बुढ़िया उसके लिये दूध लेने गाय के पास जाती है तो गाय उससे कहती है कि वह पहले उसको पास के भूसे के ढेर थोड़ा सा भूसा ला दे तभी वह उसको दूध दे पायेगी।

सो स्त्री भूसे के ढेर के पास जाती है और गाय के लिये भूसा ले कर आती है। भूसा खाने के बाद गाय उसे दूध देती है तो वह उसका एक प्याला दूध ले कर बिल्ली के पास जाती है। जैसे ही बिल्ली दूध पीती है तो वह चूहे को खाने के लिये दौड़ती है। बिल्ली को अअते देख कर चूहा रस्सी काटने दौड़ता है। चूहे का आता देख कर रस्सी कसाई को फॉसी पर चढ़ाने के लिये भागतीा है। रस्सी को आता देख कर कसाई बैल को मारने दौड़ता है।

कसाई को आता देख कर बैल पानी पीने दौड़ता है। बैल को आता देख कर पानी आग बुझाने जाता है। पानी को आता देख कर आग डंडी जलाने के लिये दौड़ती है। आग को आता देख कर डंडी कुत्ते को मारने दौड़ती है। डंडी को आता देख कर कुत्ता सूअर को काटने दौड़ता है और सूअर डर के मारे पुल के ऊपर से कूद जाता है। इस तरह वह स्त्री रात तक अपने घर पहुॅच पाती है।[14]

ऐसी कहानियों के इटली में कहे सुने जाने वाले रूप दो तरह के पाये जाते हैं – पहले तो वे जिनमें किसी जानवर या बिना ज़िन्दगी वाली किसी चीज़ को किसी आदमी को सजा देने के लिये बुलाया जाता है और दूसरी तरह के वे जहॉ सब जानवर ही जानवर हैं। पहली तरह का पहला रूप जो हम अब यहॉ दे रहे हैं वह सिसिली में कहा सुना जाता है और उसका नाम है –

[13] The House That Jack Built.

[14] Halliwell's "Nursery Rhymes", p 160.

78 पिटिड्डा[15]

एक बार की बात है कि एक मॉ थी जिसके एक बेटी थी। उस बेटी का नाम था पिटिड्डा। एक दिन मॉ ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी ज़रा घर साफ कर दे।"

बेटी बोली — "मॉ पहले मुझे रोटी दे मुझे बहुत भूख लगी है उसके बाद ही मैं घर साफ करूँगी।"

मॉ बोली — "मैं अभी तुझे रोटी नहीं दे सकती।"

जब मॉ ने देखा कि यह लड़की घर साफ नहीं कर रही तो उसने भेड़िये को बुलाया और उससे कहा — "भेड़िये तू आ कर पिटिड्डा को खा ले क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

भेड़िया बोला — "मैं पिटिड्डा को नहीं खा सकता।"

यह देख कर मॉ ने कुत्ते से कहा — "आ रे कुत्ते तू आ, तू आ कर इस भेड़िये को खा ले। क्योंकि भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

कुत्ता बोला — "मैं भेड़िये को नहीं खा सकता।"

इस पर मॉ ने डंडे को बुलाया और उससे कहा — "आ रे डंडे आ और आ कर इस कुत्ते को मार। क्योंकि कुत्ता भेड़िये को नहीं

---

[15] Pitidda. Tale No 78. By Giuseppe Pitre. (Tale No 131). From Sicily.
[This story reminds us of several stories. Read many of them in my book "Bille Aur Choohe Jaisi Kahaniyan" by Sushma Gupta in Hindi language.]

खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

डंडा बोला — "मैं कुत्ते को नहीं मार सकता उसने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

मॉ ने फिर आग से कहा — "तब आ री आग तू आ। तू आ कर इस डंडे को जला दे क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

आग बोली — "मैं डंडे को नहीं जला सकती उससे मेरी कोई दुश्मनी नहीं है।"

मॉ बोली — "तो पानी आ कर तुझे बुझा जायेगा। आ रे पानी इधर आ और आ कर इस आग को बुझा जा क्योंकि आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

पानी बोला — "मैं आग नहीं बुझा सकता उसने मेरा क्या बिगाड़ा है।"

मॉ बोली — "तो गाय आ कर तुझे पी जायेगी। आ री गाय आ और इस पानी को पी जा क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

गाय बोली — "मैं पानी नहीं पी सकती उससे मेरी कोई दुश्मनी नहीं है।"

मॉ बोली — "तो रस्सी आ कर तेरा गला घोट देगी। आ री रस्सी आ और आ कर गाय का गला घोट दे क्योंकि गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

रस्सी बोली — "मैं गाय का गला नहीं घोट सकती।"

मॉ बोली — "तो चूहा आ कर तुझे काट देगा। आ रे चूहे आ और आ कर रस्सी काट जा क्योंकि रस्सी गाय का गला नहीं घोटती, गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

चूहा बोला — "मैं रस्सी को नहीं काट सकता रस्सी से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है।"

मॉ बोली — "तो बिल्ली आ कर तुझे खा जायेगी। आ री बिल्ली आ और आ कर इस चूहे को खा ले क्योंकि चूहा रस्सी नहीं काटता, रस्सी गाय का गला नहीं घोटती, गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

यह सुन कर बिल्ली चूहा खाने भागी। बिल्ली को आता देख कर चूहा रस्सी काटने भागा। चूहे को आता देख कर रस्सी गाय का गला घोटने भागी। रस्सी को आता देख कर गाय पानी पीने भागी। गाय को आता देख कर पानी आग बुझाने के लिये भागा।

पानी को आता देख कर आग डंडे को जलाने के लिये भागी। आग को आता देख कर डंडा कुत्ते को मारने भागा। डंडा आता देख कर कुत्ता भेड़िये को खाने भागा। कुत्ते को आता देख कर भेड़िया पिटिड्डा को खाने भागा।

और भेड़िये को आता देख कर पिटिड्डा घर साफ करने भागी और जब पिटिड्डा ने घर साफ कर लिया तभी उसकी मॉ ने उसको खाने के लिये रोटी दी।

इटली की इस कहानी की एक सीख भी है। कि ये जानवर आदि किसी कहना न मानने वाले बच्चे को सजा देने बुलाये जाते हैं

कहा न मानने वाला बेटा

ऐसी ही एक कहानी नैपिल्स[16] में भी कही जाती है। उस कहानी में एक मॉ अपने बेटे को जानवरों के लिये चारा लाने के लिये भेजना चाहती है पर वह जब तक नहीं जाना चाहता जब तक कि उसकी मॉ उसको खाने के लिये मैकैरोनी नहीं देती जो उसने तभी तभी पकायी है।

इस तरह वह उसके लिये कुछ मैकैरोनी बचा कर रखने का वायदा करती है और वह जानवरों के लिये चारा लाने चला जाता है। उसके जाने के बाद वह करीब करीब सारी मैकैरोनी खा जाती है। अपने बेटे के लिये बहुत थोड़ी सी ही मैकैरोनी छोड़ती है।

जब उसका बेटा जानवरों का चारा ले कर घर लौटता है तो वह उस थोड़ी सी मैकेरोनी को देख कर बहुत रोता है और उसको खाने से मना कर देता है।

तब उसकी मॉ डंडे को आग को पानी को बैल को रस्सी को चूहे को बिल्ली को उसको अपना कहा मानने के लिये बुलाती है। और तब जा कर उसका बेटा मैकैरोनी खाता है।

यह कहानी इटली के सियना और फ्लोरैन्स[17] शहरों में भी करीब करीब इसी तरीके से कही सुनी जाती है।

इटली के वेनिस शहर में कही सुनी जाने वाली लोक कथा में एक शैतान लड़का स्कूल नहीं जाता तो उसकी मॉ कुत्ता डंडा आग पानी बैल कसाई और सिपाही को बुलाती है।

[16] Naples is the port city on the South-West coast of Italy.

[17] Both Sienna and Florence cities are in Italy itself.

79 सैक्सटन की नाक[18]

यह कहानी ऊपर बताये गये दोनों तरह की कहानियों को जोड़ने के लिये एक पुल का काम करती है। वैसे देखा जाये तो इस कहानी का दूसरा हिस्सा ही केवल ऐसी कहानियों से मेल खाता है पर यहॉ हम उसके पहले हिस्से को भी संक्षेप में दे रहे हैं।

एक बार एक सैक्सटन[19] चर्च में सफाई कर रहा था कि उसको फर्श पर पड़ा एक पैसे का टुकड़ा[20] मिला। उसने वह उठा कर रख लिया और सोचने लगा कि वह उससे क्या खरीदेगा।

अगर उसने उससे बादाम या और कोई गिरी खरीदी तो चूहे उसे खाने आ जायेंगे और वह चूहों से बहुत डरता था। सो सोचते सोचते उसने उससे कुछ भुनी हुई मूँगफली खरीदीं और खा लीं। आखीर में उसके पास एक मूँगफली बच गयी।

उसको वह पास की एक बेकरी[21] में ले गया और वहॉ उसकी मालकिन से कहा कि वह उसको अपने पास सँभाल कर रख ले वह उसको अगले दिन आ कर ले जायेगा। बेकरी की मालकिन ने कहा कि वह उस दाने को बैन्च पर रख दे और वह आ कर वहॉ से उसे उठा कर ले लेगी।

---

[18] Sexton's Nose. Tale No 79. From Sicily. By Giuseppe Pitri. (Tale No 135).

[19] A sexton is an officer of a church, congregation, or synagogue charged with the maintenance of its buildings and/or the surrounding graveyard.

[20] Translated for the words "Piece of Money" – piece of money means 1/5th of the cent.

[21] Bakery is a shop or place where the bread, bun cake, biscuits etc are baked.

पर जब वह उसको लेने गयी तो उसने देखा कि वह दाना तो वहॉ नहीं है। उसको तो मुर्गा खा गया था।

अगले दिन वह सैक्सटन अपना मूँगफली का दाना मॉगने आया तो बेकरी की मालकिन ने उसको बताया कि उस दाने का क्या हुआ था।

यह जान कर सैक्सटन ने कहा कि या तो उसका मूँगफली का दाना वापस किया जाये नहीं तो वह मुर्गा उसको दे दिया जाये जिसने उसका मूँगफली का दाना खाया था।

अब क्योंकि मूँगफली का दाना तो मुर्गे ने खा लिया था तो वह तो वापस आ नहीं सकता था सो सैक्सटन को मुर्गा दे दिया गया।

सैक्सटन के पास मुर्गा रखने की कोई जगह नहीं थी तो वह उसको रखने के लिये एक चक्की वाले की पत्नी के पास ले गया और उसको अगले दिन तक रखने के लिये कहा।

चक्की वाले की पत्नी ने उसे रख लिया। चक्की वाले की पत्नी के पास एक सूअर था। उसने सैक्सटन का वह मुर्गा खा लिया।

अगले दिन सैक्सटन जब अपना मुर्गा मॉगने आया तो पता चला कि चक्की वाले की पत्नी के सूअर ने उसका मुर्गा खा लिया था।

सैक्सटन ने कहा या तो उसको उसका मुर्गा वापस किया जाये नहीं तो उसको वह सूअर दे दिया जाये जिसने उसका मुर्गा खाया था। अब क्योंकि मुर्गा तो वापस आ नहीं सकता था सो उसको सूअर दे दिया गया।

वह सूअर उसने अपने एक दोस्त के घर छोड़ा। उसका वह दोस्त पेस्ट्री बनाता था। उसके एक बेटी थी जिसकी शादी अगले दिन होने वाली थी।

उसके दोस्त की पत्नी बहुत ही नीच और एक चालाक किस्म की स्त्री थी। उसने अपनी बेटी की शादी के लिये उस सूअर को मार दिया और अगले दिन जब सैक्सटन अपना सूअर लेने आया तो उसको कह दिया कि तुम्हारा सूअर तो भाग गया। इस पर सैक्सटन ने कहा कि या तो वह उसका सूअर दे नहीं तो अपनी बेटी दे।

अब सूअर तो दिया नहीं जा सकता था क्योंकि वह तो मारा जा चुका था सो उसने उसको अपनी बेटी दे दी। सैक्सटन ने उसकी बेटी को एक थैले में रखा और चल दिया।

अब वह एक स्त्री के पास पहुँचा जो एक दूकान चलाती थी। उसने उसको वह थैला दिया और कहा कि उस थैले में भूसा था और वह उस थैले को सँभाल कर रख ले वह बाद में आ कर ले जायेगा। उस स्त्री ने उसके उस थैले को सँभाल कर रख लिया।

उस स्त्री के पास कुछ मुर्गियाँ थीं। जब सैक्सटन उस थैले को वहाँ छोड़ कर चला गया तो उसा स्त्री ने सोचा कि वह उस थैले में से थोड़ा सा भूसा निकाल कर अपनी मुर्गियों को खिला देती है।

पर जब उसने वह थैला खोला तो उसमें से तो भूसे की बजाय एक लड़की निकली। उस स्त्री ने उस लड़की को तो थैले में से बाहर निकाल लिया और उसकी जगह एक कुत्ता रख दिया।

अगले दिन सैक्सटन आ कर अपना थैला ले गया और समुद्र के किनारे चल दिया। वह सोच रहा था कि वह उस लड़की को समुद्र में फेंक देगा।

समुद्र के किनारे पहुँच कर उसने लड़की को फेंकने के लिये थैला खोला तो गुस्से में भरा कुत्ता बाहर निकला और उसकी नाक काट कर भाग गया। सैक्सटन दर्द के मारे चिल्ला पड़ा। उसकी नाक से खून बह कर उसके चेहरे पर टपकने लगा।

वह चिल्लाया — "ओ कुत्ते, मुझे अपना एक बाल तो देता जा ताकि मैं उसको अपनी नाक में लगा कर तेरे दिये हुए घाव को भर सकूँ।[22]

कुत्ता बोला — "अगर तुम्हें मेरा बाल चाहिये तो पहले मुझे डबल रोटी ला कर दो।"

सैक्सटन एक बेकरी की तरफ भागा और उसके मालिक से बोला — "मुझे थोड़ी सी डबल रोटी दे। यह डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

बेकरी का मालिक बोला — "तुमको डबल रोटी चाहिये तो पहले तुम मुझे लकड़ी ला कर दो तभी मैं तुमको डबल रोटी दे सकता हूँ।"

[22] Perhaps it is believed in Italy that whichever dog has bitten somebody, if a hair of the same dog is put on its bite, that wound is healed.

सो सैक्सटन एक लकड़ी काटने वाले के पास गया और उससे कहा — "ओ लकड़ी काटने वाले मुझे थोड़ी सी लकड़ी दे। मैं यह लकड़ी बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

लकड़ी काटने वाला बोला — "अगर तुम्हें लकड़ी चाहिये तो पहले मुझे एक कुल्हाड़ी ला कर दो।"

सैक्सटन तुरन्त ही एक लोहार के पास दौड़ा गया और उससे कहा — "लोहार लोहार, मुझे एक कुल्हाड़ी दे। मैं यह कुल्हाड़ी लकड़ी काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। वह लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

लोहार बोला — "अगर तुम्हें कुल्हाड़ी चाहिये तो पहले तुम मुझे कोयला ला कर दो।"

सैक्सटन तुरन्त ही भागा भागा कोयले वाले के पास गया और उससे कहा — "ओ कोयले वाले, मुझे कोयला दे। मैं यह कोयला लोहार को दूँगा। लोहार मुझे कुल्हाड़ी देगा। मैं यह कुल्हाड़ी लकड़ी

काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

कोयले वाला बोला — "अगर तुमको कोयला चाहिये तो पहले तुम मुझे एक गाड़ी ला कर दो।"

सैक्सटन गाड़ी लाने दौड़ा गया। वह जा कर गाड़ी वाले से बोला — "ओ गाड़ी वाले मुझे गाड़ी दे।

यह गाड़ी मैं कोयले वाले को दूँगा। कोयले वाला मुझे कोयला देगा। मैं वह कोयला लोहार को दूँगा। लोहार मुझे कुल्हाड़ी देगा।

कुल्हाड़ी मैं लकड़ी काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

गाड़ी वाले ने देखा कि सैक्सटन बहुत कष्ट में है। उसको उसके ऊपर दया आ गयी सो उसने उसको गाड़ी दे दी। गाड़ी पा कर सैक्सटन बहुत खुश हुआ।

गाड़ी ले कर वह भागा भागा कोयले वाले के पास गया। उसने वह गाड़ी कोयले वाले को दी। कोयले वाले ने उसको कोयला दिया। कोयला उसने लोहार को दिया।

लोहार ने उसे कुल्हाड़ी दी। कुल्हाड़ी ले जा कर उसने लकड़ी काटने वाले को दी। लकड़ी काटने वाले ने उसको लकड़ी दी। लकड़ी ले जा कर उसने बेकरी के मालिक को दी।

बेकरी के मालिक ने उसे डबल रोटी दी। डबल रोटी उसने कुत्ते को खिलायी। कुत्ते ने उसे अपना एक बाल दिया जिसको उसने अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखा।

और तब जा कर कहीं उसका घाव भरा।

80 मुर्गा और चूहा[23]

जैसा कि हमने बताया था कि ऐसी कहानियों की दूसरी किस्म में या तो केवल जानवर ही जानवर होते हैं और या फिर जो ज़िन्दा नहीं हैं उनको इन्सान बना कर प्रस्तुत किया जाता है। इसका पहला उदाहरण है यह मुर्गे और चूहे की कहानी।

एक बार की बात है कि एक मुर्गा और एक चूहा पास पास रहते थे। वे दोनों आपस में बड़े अच्छे दोस्त थे। एक दिन चूहे ने मुर्गे से कहा — "दोस्त मुर्गे, चलो किसी दूर के पेड़ से कुछ गिरियॉ[24] खा कर आते हैं।"

मुर्गा बोला — "चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा।"

सो दोनों एक गिरी के पेड़ के पास पहुॅचे। चूहा तो तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उसने गिरियॉ खानी शुरू कर दीं। पर बेचारा मुर्गा उड़ता रहा उड़ता रहा पर वह चूहे के पास तक नहीं पहुॅच सका।

जब उसने देखा कि उसके पेड़ के ऊपर पहुॅचने की कोई उम्मीद नहीं है तो वह चूहे से बोला — "दोस्त चूहे, तुम्हें मालूम है कि मैं चाहता हूॅ कि तुम क्या करो? तुम मुझे ऊपर से एक गिरी फेंको।"

---

[23] The Cock and the Mouse. Tale No 80. By Imbriani. p 239. There are other versions also of this story from Florence, Bologna and Venice.

[24] Translated for the word "Nuts". See their picture above.

चूहे ने एक गिरी तोड़ी और उसको मुर्गे के सिर पर फेंक दी। इससे बेचारे मुर्गे का सिर फूट गया और उसके सिर से खून बहने लगा।

यह देख कर वह एक बुढ़िया के पास गया और उससे बोला — "चाची चाची, मुझे कुछ फटे कपड़े दो ताकि मैं उनको अपने सिर पर बॉध कर अपना यह घाव ठीक कर सकूँ।"

बुढ़िया चाची बोली — "जब तुम मुझे कुत्ते के दो बाल ला कर दोगे तभी मैं तुमको फटे कपड़े दूँगी।"

मुर्गा कुत्ते के पास गया और उससे बोला — "ओ कुत्ते, तू मुझे अपने दो बाल दे। ये बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

कुत्ता बोला — "जब तुम मुझे डबल रोटी ला कर दोगे तभी मैं तुमको अपने बाल दूँगा।"

सो मुर्गा एक डबल रोटी बनाने वाले के पास गया और उससे कहा — "ओ बेकर[25] मुझे थोड़ी सी डबल रोटी दे। यह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। और तब वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

[25] Baker is a man who bakes bread, bun cake, biscuits etc. See his picture above.

बेकर बोला — "पहले तुम मुझे लकड़ी ला कर दो तब मैं तुमको डबल रोटी दूँगा।"

सो मुर्गा जंगल गया और उससे बोला — "ओ जंगल, मुझे थोड़ी सी लकड़ी दे। यह लकड़ी ले जा कर मैं बेकर को दूँगा।

बेकर मुझे डबल रोटी देगा। वह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

जंगल बोला — "जब तुम मुझे थोड़ा सा पानी ला कर दोगे तभी मैं तुमको लकड़ी दूँगा।"

सो मुर्गा एक फव्वारे के पास गया और उससे बोला — "फव्वारे फव्वारे मुझे थोड़ा सा पानी दे। यह पानी ले जा कर मैं जंगल को दूँगा। जंगल मुझे लकड़ी देगा। वह लकड़ी ले जा कर मैं बेकर को दूँगा।

बेकर मुझे डबल रोटी देगा। वह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

फव्वारे ने उसको पानी दिया।

वह पानी ले जा कर उसने जंगल को दिया।

जंगल ने उसे लकड़ी दी।

वह लकड़ी ले जा कर उसने बेकर को दी।
बेकर ने उसको डबल रोटी दी।
वह डबल रोटी उसने कुत्ते को दी।
कुत्ते ने उसे अपने दो बाल दिये।
बाल ले जा कर उसने बुढ़िया चाची को दिये।

बुढ़िया चाची ने उसे फटे कपड़े दिये जिनको अपने सिर पर बॉध कर उसने अपने सिर का घाव ठीक किया।"

ऐसी कई और कहानियॉ भी हैं जो यहॉ नहीं दी जा रही हैं। पर उनमें से वेनिस में कहा सुना जाने वाला इसका एक रूप काफ़ी बड़ा है। इस कहानी में मुर्गा और चूहा दोनों गिरी खाने जाते हैं। मुर्गा उड़ कर पेड़ के ऊपर चढ़ जाता है और ऊपर से चूहे के लिये नीचे गिरी फेंकता रहता है। चूहा सारी गिरियॉ खा जाता है।

जब मुर्गा नीचे आता है तो अपने लिये एक भी गिरी न देख कर बहुत गुस्सा होता है और अपनी चोंच चूहे के सिर में मारता है। चूहा डर के मारे वहॉ से भागता है। बाकी बची हुई कहानी वैसी ही है जैसी ऊपर लिखी है। इसमें चूहा आखिरी बार में एक बैरल बनाने वाले के पास जाता है और उससे एक बालटी बनाने के लिये कहता है ताकि वह उसे पानी भरने के लिये कुँए को दे सके। बैरल बनाने वाला उससे पैसे मॉगता है। चूहा उसके लिये कहीं से पैसे का इन्तजाम करता है और उसे बैरल बनाने वाले को दे कर कहता है "गिन लो। मैं ज़रा पानी पीने जा रहा हूँ मुझे बहुत प्यास लगी है।"

जब वह पानी पीने जाता है तो वह अपने दोस्त मुर्गे को आता देखता है तो कहता है — "हे भगवान अब तो मैं मरा।"

मुर्गा भी उसको देख लेता है तो उसके पास जाता है और उससे कहता है — "गुड डे दोस्त। क्या तुम अभी भी मुझसे डर रहे हो। चलो आपस में समझौता कर लेते हैं।"

चूहा हिम्मत करता है और कहता है — "हॉ हॉ। आओ समझौता कर लेते हैं।"

सो वे आपस में समझौता कर लेते हैं।

दोस्त चूहा दोस्त मुर्गे से कहता है — "अब जब तुम यहाँ हो तो तुम मेरी पूँछ पकड़ कर रखो ताकि में ज़रा झुक कर गड्ढे में से पानी पी लूँ। और जब मैं "स्लैपो स्लैपो" कहूँ तब तुम मुझे पीछे खींच लेना।

मुर्गा बोला — "ठीक है मैं ऐसा ही करूँगा।"

तब चूहा गड्ढे के पास चला गया और पानी पीने लगा। दोस्त मुर्गे ने उसकी पूँछ पकड़ रखी थी। जब चूहे ने पेट भर कर पानी पी लिया तो बोला — "दोस्त मुर्गे स्लैपो स्लैपो।"

मुर्गा बोला — "ठीक है अब मैं तुम्हारी पूँछ छोड़ता हूँ।"

कह कर उसने सच में ही चूहे की पूँछ छोड़ दी। उस दिन के बाद वह चूहा फिर कभी नहीं देखा गया।

81 गौडमदर लोमड़ी[26]

यह कहानी सिसिली की कहानियों की एक ऐसी किस्म की कहानी है जिसमें केवल जानवर ही जानवर हैं।

एक बार की बात है कि एक गौडमदर[27] लोमड़ी थी और एक गौडमदर बकरी थी। गौडमदर लोमड़ी के पास एक छोटा सा घर था जिसमें छोटी छोटी कुरसियॉ थीं, छोटे छोटे प्याले थे, छोटी छोटी प्लेटें थीं। थोड़े में कहो तो उसका घर बहुत अच्छा सजा हुआ था।

एक दिन गौडमदर बकरी कहीं बाहर गयी तो वह गौडमदर लोमड़ी का घर साथ ले गयी। यह देख कर गौडमदर लोमड़ी रोने लगी कि तभी वहॉ पर एक कुत्ता भौंकता हुआ आया और गौडमदर लोमड़ी से पूछा — "तुम क्यों रो रही हो गौडमदर लोमड़ी?"

गौडमदर लोमड़ी रोते हुए बोली — "गौडमदर बकरी मेरा घर ले गयी है अब मैं क्या करूॅ।"

कुत्ता बोला — "चुप हो जाओ गौडमदर लोमड़ी। तुम रोओ नहीं। मैं उससे तुम्हारा घर तुम्हें वापस दिलवा दूॅगा।"

---

[26] The Godmother Fox. Tale No 81. From Sicily. By Giuseppe Pitre. (Tale No 132).
This story from Sicily belongs to a class of tales very popular and having only animals for its actors.

[27] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

सो कुत्ता गौडमदर बकरी के पास गया और उससे कहा — "तुम गौडमदर लोमड़ी का घर क्यों ले कर आयीं तुम उसका घर वापस कर दो।"

गौडमदर बकरी बोली — "मैं गौडमदर बकरी हूँ। मेरे पास एक तलवार है और अपने सींगों से मैं तुमको फाड़ कर रख दूँगी।" जब कुत्ते ने यह सुना तो वह वहाँ से चला गया।

फिर एक भेड़ गौडमदर लोमड़ी के पास से गुजरी तो उसने भी गौडमदर लोमड़ी को रोते देखा तो उससे पूछा — "तुम क्यों रो रही हो गौडमदर लोमड़ी?"

गौडमदर लोमड़ी ने उससे भी वही कहा जो उसने कुत्ते से कहा था कि "गौडमदर बकरी मेरा घर ले गयी है अब मैं क्या करूँ।"

सुन कर भेड़ ने भी गौडमदर लोमड़ी को तसल्ली दी और वह भी गौडमदर बकरी के पास गयी और उससे गौडमदर लोमड़ी का घर वापस करने के लिये कहा तो गौडमदर बकरी ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने कुत्ते को दिया था।

"मैं गौडमदर बकरी हूँ। मेरे पास एक तलवार है और अपने सींगों से मैं तुमको फाड़ कर रख दूँगी।"

वह जवाब सुन कर भेड़ भी उससे डर कर वहाँ से वापस चली आयी।

इस तरह कई जानवर गौडमदर लोमड़ी से यह पूछने आये कि वह क्यों रो रही थी और लोमड़ी ने सबसे यही कहा कि गौडमदर बकरी उसका घर ले गयी है वह इसलिये रो रही है।

सबने गौडमदर लोमड़ी से उसका घर वापस दिलवाने का वायदा किया पर गौडमदर बकरी का जवाब सुन कर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वह गौडमदर लोमड़ी का घर गौडमदर बकरी से वापस ला सके।

गौडमदर लोमड़ी के पास आने वालों जानवरों में एक चूहा भी था। उसने भी गौडमदर लोमड़ी से पूछा — "तुम क्यों रो रही हो गौडमदर लोमड़ी?"

गौडमदर लोमड़ी रोते हुए बोली — "गौडमदर बकरी मेरा घर ले गयी है अब मैं क्या करूँ?"

चूहा बोला — "चुप हो जाओ गौडमदर लोमड़ी। रोओ नहीं। मैं उससे तुम्हारा घर तुम्हें वापस दिलवा दूँगा।"

गौडमदर लोमड़ी ने सोचा इतने बड़े बड़े जानवर तो मेरा घर वापस कराने का वायदा करके गये पर कोई मेरा घर मुझे वापस नहीं दिला सका यह छोटा सा चूहा बेचारा क्या कर पायेगा। पर उसके पास तो और कोई चारा ही नहीं था।

सो चूहा भी गौडमदर बकरी के पास गया और उससे कहा — "देखो गौडमदर बकरी, तुम गौडमदर लोमड़ी का घर तुरन्त वापस कर दो नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।"

गौडमदर बकरी बोली — "क्या? तुम देख नहीं रहे कि मैं गौडमदर बकरी हूँ। मेरे पास एक तलवार है और अपने सींगों से मैं तुमको फाड़ कर रख दूँगी।"

यह सुन कर चूहा एकदम बोला — "और तुम देख नहीं रहीं कि मैं गौडफादर चूहा हूँ। मेरे पास लोहे का एक डंडा है जिसको मैं आग में गर्म कर के तुम्हारी पूँछ पर चिपका दूँगा।"

यह सुन कर तो गौडमदर बकरी बहुत डर गयी और उसने तुरन्त ही गौडमदर लोमड़ी का घर वापस कर दिया। गौडमदर लोमड़ी अपना घर वापस पा कर बहुत खुश हुई।

सो जो काम इतने बड़े बड़े जानवर नहीं कर पाये वह काम एक छोटे से चूहे ने कर दिया।

नोट ः—

इस कहानी के एक और रूप में एक बकरी एक नन के बिस्तर के नीचे फँस जाती है। सो वहाँ से बाहर निकलने के लिये वह अपने पड़ोसियों को अपनी सहायता के लिये पुकारती है – एक कुत्ता, एक सूअर, एक मकड़ा ताकि वे उसको वहाँ से बाहर निकाल सकें पर केवल मकड़ा ही इस काम को कर पाता है। वह भी नन को ऐसी ही धमकी देता है जैसी इस कहानी में चूहे ने गौडमदर बकरी को दी थी।[28]

यह कहानी नपोली में

यह कहानी इटली के नपोली शहर में भी कही सुनी जाती है। इस कहानी में एक बुढ़िया को चर्च में झाड़ू लगाते समय एक पैनी मिल जाती है जैसे "सैक्सटन की नाक" कहानी में सैक्सटन को मिलती है। वह यह नहीं समझ पाती कि वह उससे क्या खरीदे।

[28] This story is given by Giuseppe Pitre. (Tale No 133).

अन्त में वह उसका आटा खरीद लेती है ओर उसकी पुडिंग बनाती है। पुडिंग बना कर वह उसको मेज पर रख देती है और फिर से चर्च चली जाती है पर चर्च जाते समय घर की खिड़की बन्द करना भूल जाती है। उसके जाने के बाद बकरियों का एक झुंड उधर से गुजरता है तो उस झुंड में से एक बकरी को पुडिंग की खुशबू आती है। वह खिड़की पर चढ़ जाती है ओर उस बुढ़िया की सारी पुडिंग खा जाती है।

जब वह बुढ़िया घर वापस आती है और अपने घर का दरवाजा खोलने की कोशिश करती है तो वह उसे खोल नहीं पाती क्योंकि एक बड़ी बकरी उस दरवाजे के पीछे खड़ी है। यह देख कर बुढ़िया रोने लगती है। उसको रोता देख कर बहुत सारे जानवर उसके पास रुक कर उसके रोने की वजह जानना चाहते हैं। वे भी उसके घर में घुसने की कोशिश करते हैं पर बकरी उन सबको यही जवाब देती है कि "अगर तुम यहॉ से नहीं गये तो मैं तुमको खा जाऊँगी।"

यह सुन कर सारे जानवर डर जाते हैं और वहॉ से भाग जाते हैं पर चूहा कहता है — "मैं गौडफादर चूहा हूँ। मेरे पास एक बहुत बड़ा डंडा है अगर तुम यहॉ से नहीं भागीं तो में उससे तुम्हारी ऑखें निकाल लूँगा।"

यह सुन कर बकरी वहॉ से भाग जाती है। वह बुढ़िया गौडफादर चूहे के साथ अपने घर में घुसती है फिर बाद में उससे शादी कर लेती है। उसके बाद वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहते हैं।

ऐसी ही एक कहानी फ्लोरैन्स में

ऐसी ही एक कहानी इटली के फ्लोरैन्स शहर में भी कही सुनी जाती है। वहॉ इसका नाम है "लोहे की बकरी"[29]। उसमें एक विधवा नहाने के लिये बाहर जाती है और अपने बेटे को घर छोड़ जाती है। और उससे कह जाती है कि वह घर का दरवाजा खुला न छोड़े ताकि वह लोहे के मुँह और लोहे की जीभ वाली लोहे की बकरी घर में न आ जाये।

कुछ समय बाद वह लड़का अपनी मॉ के पीछे पीछे चल देता है। जब वह आधे रास्ते पहुँचता है तो उसको ध्यान आता है कि वह तो घर का दरवाजा खुला ही छोड़ आया है। वह वापस घर जाता है। घर पहुँच कर वह देखता है कि उसके घर में तो लोहे की बकरी घुस आयी है। वह पूछता है "यहॉ कौन है?"

[29] The Iron Goat.

"यह मैं हूँ लोहे के मुँह और लोहे की जीभ वाली लोहे की बकरी। अगर तुम घर के अन्दर घुसोगे तो में तुम्हें शलगम[30] की तरह से काट दूँगी।" यह सुन कर बेचारा लड़का घर की सीढ़ियों पर ही बैठ गया और रोने लगा।

एक और बड़ी उम्र की स्त्री उधर से गुजरी तो उसने उस लड़के को रोते हुए देख कर पूछा कि वह क्यों रो रहा था। लड़के ने उसे बताया कि वह क्यों रो रहा था। वह स्त्री बोली कि वह उस बकरी को तीन बुशैल[31] अनाज के बदले में बाहर निकाल देगी। पर वह बकरी नहीं मानी।

तो उसने लड़के से कहा — "मुझे तीन बुशैल अनाज की तो परवाह नहीं थी पर अफसोस मैं इस बकरी को तुम्हारे घर से बाहर नहीं निकाल सकी।"

उसके बाद एक बूढ़े ने भी अपनी कोशिश की पर वह भी उसको उस लड़के के घर से बाहर नहीं निकाल सका।

आखीर में एक छोटी सी चिड़िया आती है और तीन बुशैल बाजरे के बदले में उस बकरी को बाहर निकालने का वायदा करती है। पर जब बकरी अपनी पुरानी बात दोहराती है तो वह छोटी चिड़िया उससे कहती है "मेरे पास बहुत तेज़ चोंच है जिससे मैं तेरा दिमाग बाहर निकाल दूँगी।" यह सुन कर लोहे की बकरी डर जाती है और उस लड़के का घर छोड़ कर चली जाती है। लड़का उस चिड़िया को तीन बुशैल बाजरा दे देता है।

हमारे पाठकों को ग्रिम की कहानी "एक मकड़ी और एक खटमल"[32] की जरूर याद होगी। एक बार एक मकड़ी और एक खटमल साथ साथ रहते थे और अपनी बीयर एक अंडे के खोल में पकाया करते थे। एक दिन मकड़ी जब अपनी बीयर चला रही थी तो वह बीयर में गिर गयी और जल कर मर गयी।

इस पर खटमल ने चिल्लाना शुरू कर दिया तो दरवाजे ने पूछा — "खटमल क्यों चिल्ला रहे हो।" खटमल बोला — "क्योंकि मेरी छोटी मकड़ी बीयर के टब में डूब कर मर गयी है।" यह सुन कर दरवाजे ने चीं चीं की आवाज शुरू कर दी जैसे कि वह बहुत दुखी हो। कोने में खड़ी झाड़ू ने जब यह देखा तो उसने दरवाजे से पूछा कि वह इतनी ज़ोर ज़ोर से चीं चीं क्यो

---

[30] Translated or the word "Turnip". See its picture above.

[31] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See its picture above.

[32] Grimms. The Spider and the Flea. (Tale No

कर रहा था।" तो दरवाजे ने कहा — "मैं क्यों चीं चीं न करूँ क्योंकि खटमल की छोटी मकड़ी बीयर के टब में डूब कर मर गयी है और खटमल रो रहा है।" सो वह झाड़ू घर भर में घूमने लग जाती है।

एक छोटी गाड़ी भागने लग जाती है। राख अपने आप ही जलने लग जाती है। पेड़ अपने पत्ते गिराने लग जाता है। एक स्त्री अपना घड़ा तोड़ देती है। एक नाला इतनी ज़ोर से बहता है कि एक एक लड़की को बहा ले जाता है। बाद में सब – पेड़ राख गाड़ी झाड़ू दरवाजा खटमल और मकड़ी सब एक साथ हो जाते हैं।

इसका एक मजेदार रूप हान ने भी दिया है।[33] यह कहानी स्मिरना में कही सुनी जाती है।

काली मिर्च

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। जिनके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन बुढ़िया खेत पर गयी और वहॉ से एक टोकरी भर कर बीन्स तोड़ीं। जब उसने बीन्स तोड़ लीं तो उसने बीन्स से भरी हुई टोकरी की तरफ देखा तो उसके मुँह से निकला — "काश ये सारी बीन्स मेरे बच्चे होतीं।" जैसे ही उसने यह शब्द कहे कि उस टोकरी की सारी बीन्स बच्चे बन गये। वे सब टोकरी में से कूद गये और बाहर नाचने लगे।

बुढ़िया को अपना यह परिवार बहुत बड़ा लगा सो वह जल्दी से बोली "मेरी इच्छा है कि तुम सब फिर से बीन्स बन जाओ।" यह कहते ही सारे बच्चे टोकरी में कूद गये और फिर से बीन्स बन गये। केवल एक बच्चा बीन बनने से रह गया। वह इतना छोटा था कि सब लोग उसको छोटी काली मिर्च कह कर बुलाया करते थे। वह इतना सुन्दर और आकर्षक था कि सभी उसको बहुत प्यार करते थे।

एक दिन बुढ़िया अपने लिये सूप बना रही थी कि छोटा काली मिर्च बर्तन पर चढ़ गया और उसमें झॅकने लगा कि देखूँ इसमें क्या पक रहा है। वह ज़रा सा नीचे झुका और बर्तन के अन्दर फिसल पड़ा। वह सूप में गिर गया और जल कर मर गया। बुढ़िया को तब तक पता नहीं चला जब तक कि खाने का समय नहीं हो गया क्योंकि तब उसको पता चला कि वह तो कहीं नहीं मिल रहा। उसकी मॉ बेचारी उसे चारों तरफ ढूँढ आयी पर वह उसे कहीं नहीं मिला।

---

[33] Hahn. "Pepper-corn." in Griechische und Albanesische Marchen. Leipzig. 1864. (Tale No 56)

आखिर वे बिना छोटी काली मिर्च के ही खाना खाने बैठे और जब उन्होंने सूप को बर्तन से कटोरे में पलटा तो उसकी लाश सूप के ऊपर तैर रही थी।

दोनों बूढ़ा और बुढ़िया उसको इस हालत में देख कर रो पड़े "हाय हमारा काली मिर्च मर गया। हाय हमारा काली मिर्च मर गया।"

जब फाख्ता ने यह सुना तो उसने अपने पर नोचने शुरू कर दिये और चिल्लाने लगी "हमारा प्यारा काली मिर्च मर गया। बूढ़ा और बुढ़िया उसके लिये रो रहे हैं।" जब सेब के पेड़ ने देखा कि फाख्ता अपने पर नोच रही है तो उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रही थी।" जब उसने इस बात की वजह सुनी तो उसने अपने सारे सेब गिरा दिये।

इस तरह जब कुँए को पता चला तो उसने अपना सारा पानी बाहर उँडेल दिया। रानी की दासी ने अपना घड़ा तोड़ दिया। रानी ने अपनी बाँह तोड़ दी। राजा ने अपना ताज जमीन पर फेंक दिया जिससे वह हजारों टुकड़ों में टूट गया।

जब लोगों ने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो उसने जवाब दिया — "हमारा प्यारा काली मिर्च मर गया है। बूढ़ा और बुढ़िया उसके लिये रो रहे हैं। फाख्ता ने अपने सारे पंख नोच दिये हैं। सेब के पेड़ ने अपने सारे सेब गिरा दिये हैं। कुँए ने अपना सारा पानी बाहर उँडेल दिया है। रानी की दासी ने अपना घड़ा तोड़ दिया है। रानी ने अपनी बाँह तोड़ दी है। इसलिये मैंने अपना ताज जमीन पर फेंक दिया है। हमारा प्यारा काली मिर्च मर गया है।"

82 बिल्ली और चूहा[34]

हमारे पढ़ने वालों को ग्रिम्स की एक कहानी याद होगी – "मकड़ी और खटमल"।[35] वे दोनों घर के एक कोने में रहते हैं और एक अंडे के खोल में अपनी बीयर बनाते हैं। एक दिन जब वे बीयर बना रहे थे तो मकड़ी उसे चला रही थी कि वह उस अंडे के खोल में गिर पड़ती है और मर जाती है। इस पर खटमल चिल्लाता है तो दरवाजा पूछता है — "ओ खटमल। तुम क्यों चिल्ला रहे हो।"

"क्योंकि छोटी मकड़ी बीयर के टब में गिर कर मर गयी है। यह सुन कर दरवाजा भी चीं चीं करने लगता हो जैसे वह बड़े दर्द में हो। कोने में एक झाड़ू खड़ी है वह दरवाजे से पूछती है — "ओ दरवाजे तुम इतना चीं चीं क्यों कर रहे हो।"

दरवाजा बोला — "क्या मैं चीं चीं भी न करूँ जबकि छोटी मकड़ी बीयर के टब में डूब गयी है और खटमल रो रहा है।"

सो झाड़ू दौड़ दौड़ कर सफाई करने लग जाती है। एक छोटी गाड़ी भागने लगती है। राख बहुत तेज़ी से जलने लगी। पेड़ अपने पत्ते गिराने लगता है। एक छोटी नदी इतनी पानी भर लाती है कि उसमें एक बच्ची को डुबो देती है। उसके बाद सब यहाँ तक कि मकड़ी भी आपस में मिल जाते हैं।

इस कहानी का पहला इटैलियन रूप सिसिली में शुरू हुआ था और इसे जियोसैप्पे पित्रे ने लिखा था।

एक बार की बात है कि एक बिल्ली शादी करना चाहती थी सो वह एक कोने पर खड़ी हो गयी। आते जाते जानवर उससे पूछ रहे थे — "ओ बिल्ली रानी क्या बात है तुम यहाँ ऐसे क्यों खड़ी हो?"

---

[34] The Cat and the Mouse. Tale No 82. Many versions of this story are available in Italy. By Giuseppe Pitre. "The Cat and the Mouse". (Tale No 134)

[35] "The Spider and the Flea". By Grimms. (Tale No ?)

बिल्ली बोली — "अरे बात क्या है मैं शादी करना चाहती हूँ। बस इतनी ही बात है।"

तभी एक कुत्ता उधर से गुजरा तो उसने पूछा — "क्या तुम मुझे चाहती हो? क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

बिल्ली बोली — "पहले मैं तुम्हारा गाना सुनना चाहती हूँ तब देखूँगी।"

कुत्ता ज़ोर ज़ोर से भौंका।

"उफ, यह क्या गाना है? यह कोई गाना है? मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।"

उसके बाद सूअर आया तो उसने भी बिल्ली से पूछा — "क्या तुम मुझसे शादी करोगी बिल्ली रानी?"

"जब मैं तुम्हारा गाना सुनूँगी तभी तो बताऊँगी।"

सूअर ने गाया "उह उह।"

"उफ़ क्या भयानक गाना है। चले जाओ यहाँ से। मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।" सूअर बेचारा वहाँ से चला गया।

उसके बाद वहाँ एक बछड़ा आया और उसने भी बिल्ली से पूछा — "ओ बिल्ली रानी क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

"जब मैं तुमको गाता हुआ सुनूँगी तभी बता सकती हूँ कि मैं तुमसे शादी कर सकती हूँ या नहीं।"

बछड़े ने गाया "ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ।"

"उफ चले जाओ। तुम तो बहुत ही भयानक गाते हो। तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?"

उसके बाद आया एक चूहा। चूहे ने भी उससे पूछा — "अरे बिल्ली रानी तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

"मैं शादी करना चाहती हूॅ।"

"क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

"पर तुम पहले मुझे ज़रा गा कर तो सुनाओ मैं तभी बता सकती हूॅ कि मैं तुमसे शादी करूॅगी या नहीं।"

और चूहे ने गाया "चीं चीं चीं चीं।"

बिल्ली को उसका गाना अच्छा लगा और उसने उसको अपने पति के रूप में स्वीकार कर लिया।

वह बोली — "चलो हम शादी कर लेते हैं क्योंकि तुम मुझे बहुत अच्छे लगे।" और उन्होंने शादी कर ली।

एक दिन बिल्ली पेस्ट्री खरीदने बाजार गयी और चूहे को घर छोड़ गयी। जाते जाते वह चूहे से कहती गयी — "देखो मैं ज़रा पेस्ट्री खरीदने बाजार जा रही हूॅ तुम घर से बाहर मत जाना।"

बिल्ली के जाने के बाद चूहा रसोईघर में चला गया तो उसने देखा कि एक बर्तन आग पर रखा है और उस बर्तन में पानी उबल रहा है और उसमें बीन्स उबल रही हैं।

वह उस बर्तन में घुस गया क्योंकि वह बीन्स खाना चाहता था। पर वह वहॉ बीन्स नहीं खा सका क्योंकि बर्तन में पानी उबलने लगा था और वह बहुत गर्म था। चूहा उसी बर्तन में बैठा रहा।

जब बिल्ली आयी तो उसने चूहे को पुकारा पर जब चूहा कहीं दिखायी नहीं दिया तो उसने अपनी पेस्ट्री उसी बर्तन में रख दी जिसमें पानी उबल रहा था और जब वह तैयार हो गयी तब उसने उसमें से थोड़ा सी खा ली और बाकी बची पेस्ट्री उसने चूहे के लिये एक प्लेट में रख दी।

जब बिल्ली ने पेस्ट्री निकाली तो उसने देखा कि चूहा तो उसमें खूब ज़ोर से चिपका हुआ है। वह बोली — "ओह मेरे छोटे चूहे, ओ मेरे छोटे चूहे।"

कहते हुए वह वहॉ से चली गयी और दरवाजे के पीछे जा कर बैठ गयी और चूहे के लिये रोने लगी। बिल्ली को रोते देख कर दरवाजा बोला — "बिल्ली रानी क्या बात है क्यों रोती हो? क्यों तुम अपनी खाल इतनी ज़ोर से खुजला रही हो जैसे उसको छील ही डालोगी?"

बिल्ली बोली — "मैं ऐसा क्यों कर रही हूॅ? क्योंकि मेरा चूहा मर गया है इसलिये मैं अपने बाल नोच रही हूॅ।"

यह सुन कर दरवाजे ने ज़ोर ज़ोर से आवाज करना शुरू कर दिया और बोला — "और मैं दरवाजा इसलिये ज़ोर से आवाज करता हूॅ क्योंकि तुम दुखी हो।"

दरवाजे के पास एक खिड़की थी उसने दरवाजे से पूछा — "ओ दरवाजे तुम इतनी ज़ोर से आवाज क्यों कर रहे हो?"

दरवाजा बोला — "बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है और मैं बिल्ली के दुख में इतने ज़ोर की आवाज कर रहा हूँ।"

यह सुन कर खिड़की बोली — "तो मैं खिड़की भी खुलती और बन्द होती हूँ।"

खिड़की के बाहर एक पेड़ खड़ा था वह बोला — "ओ खिड़की तुम इतनी ज़ोर से क्यों खुल और बन्द हो रही हो?"

खिड़की बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है और मैं खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ।"

पेड़ बोला — "अगर ऐसा है तो मैं पेड़ उसके दुख में नीचे गिर जाता हूँ।" और यह कह कर वह नीचे गिरने लगा।

उसी पेड़ पर एक चिड़िया रहती थी। चिड़िया ने पूछा — "पेड़ पेड़ तुम नीचे क्यों गिर रहे हो?"

पेड़ बोला — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ और मैं पेड़ उसके दुख में नीचे गिर रहा हूँ।"

यह सुन कर चिड़िया बोली — "तो फिर मैं उसके दुख में अपने पंख गिरा देती हूँ।" कह कर चिड़िया वहाँ से एक फव्वारे पर जा बैठी और अपने पंख गिराने लगी।

यह देख कर फव्वारे ने पूछा — "चिड़िया बहिन तुम अपने पंख क्यों गिरा रही हो?"

चिड़िया बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है और मैं उसके दुख में अपने पंख गिरा रही हूँ।"

यह सुन कर फव्वारा बोला — "तो मैं उसके दुख में सूख जाता हूँ।" सो बिल्ली के दुख में फव्वारे ने पानी फेंकना बन्द कर दिया।

उसी समय एक कोयल वहाँ फव्वारे पर पानी पीने आयी तो उसने फव्वारे को सूखे हुए देखा तो उससे पूछा — "फव्वारे तुम सूख क्यों गये?"

फव्वारा बोला — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है और मैं उसके दुख में सूख गया हूँ।"

कोयल बोली — "तो मैं कोयल उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल देती हूँ।"

जब कोयल अपनी पूँछ आग में डाल रही थी तो सेन्ट निकोलस वहाँ आये तो उन्होंने कोयल से पूछा — "कोयल कोयल तुम्हारी पूँछ आग में क्यों है?"

कोयल बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है।

दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है और मैं उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल रही हूँ।"

जब सेन्ट ने यह सुना तो बोला — "तो मैं सेन्ट आज बिना अपने रस्मी कपड़े पहिने ही मास[36] पढ़ूँगा।"

जब सेन्ट बिना अपने रस्मी कपड़े पहिने मास पढ़ रहे थे तो उस देश की रानी वहाँ आयी। उसने उनसे पूछा — "सेन्ट निकोलस, आप आज यह मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने क्यों पढ़ रहे हैं?"

सेन्ट निकोलस बोले — "रानी जी, बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है।

[36] Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.

दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है।

कोयल उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल रही है और मैं उसके दुख में यह मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने ही पढ़ रहा हूँ।"

यह सुन कर रानी बोली — "तो मैं रानी उसके दुख में जा कर आटा छानती हूँ।"

जब रानी आटा छान रही थी तो राजा वहाँ आ गया। राजा ने पूछा — "रानी जी आज आटा आप क्यों छान रही हैं? क्या हमारे घर के सारे नौकर मर गये?"

रानी बोली — "नहीं राजा साहब ऐसा नहीं है। बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही है।

पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है।

कोयल उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल रही है। सेन्ट निकोलस उसके दुख में मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने ही पढ़ रहे हैं और मैं उसके दुख में आटा छान रही हूँ।"

राजा मुस्कुराया और बोला — "और मैं राजा उसके दुख में अपनी कौफी पीने जा रहा हूँ।"

और इस तरह से यह कहानी अचानक यहीं खत्म हो जाती है।

इसका एक रूप पोमिगलियानो डी आर्को[37] में कहा सुना जाता है।

इस कहानी में एक बुढ़िया होती है जिसको चर्च को बुहारते समय एक सिक्का मिल जाता है। वह सोचती है कि वह उसे कैसे खर्च करे। अन्त में वह उसे अपने चेहरे के लिये एक रंग खरीदने में खर्च करने का सोचती है। रंग खरीद कर और चेहरे पर लगा कर वह एक खिड़की में बैठ जाती है।

उधर से एक गधा निकलता है तो वह उससे पूछता है कि उसे क्या चाहिये। बुढ़िया जवाब देती है कि वह शादी करना चाहती है। गधा पूछता है कि क्या वह उससे शादी करेगी। बुढ़िया कहती है पहले मुझे आवाज सुनाओ कि तुम्हारी आवाज कैसी है। गधा बोलता है "ढेंचू ढेंचू।"। बुढ़िया कहती है "चले जाओ यहाँ से अपनी इस बोली से तो तुम मुझे रात को डरा ही दोगे।

उसके बाद एक बकरा आता है वह भी बुढ़िया को खिड़की पर बैठा देख कर उससे पूछता है कि उसे क्या चाहिये। बुढ़िया कहती है कि वह शादी करना चाहती है। बकरा पूछता है कि क्या तुम मुझसे शादी करोगी। बुढ़िया कहती है पहले तुम मुझे अपनी आवाज सुनाओ। बकरा बोलता है "मैं मैं मैं मैं"। बुढ़िया कहती है "चले जाओ यहाँ से अपनी इस बोली से तो तुम मुझे रात को डरा ही दोगे। उसके बाद उसके पास एक बिल्ला आता है और और भी कई जानवर आते हैं पर बुढ़िया को किसी की आवाज अच्छी नहीं लगती तो वह सबको भगा देती है।

[37] Pomigliano d' Arco. This version is written by Imbriani, p 244.

अन्त में उसके पास एक चूहा आता है और उससे पूछता है ओ बूढ़ी चाची आप यहॉ क्या कर रही हैं। बुढ़िया उससे भी यही कहती है। "मैं शादी करना चाहती हूॅ।" चूहा पूछता है कि क्या आप मुझसे शादी करेंगी। "पहले तुम मुझे अपनी आवाज सुनाओ।" चूहा बोलता है "ज़्यूॅ ज़्यूॅ ज़्यूॅ"। बुढ़िया कहती है कि तुम मुझे बहुत अच्छे लगे आओ तुम ऊपर आ जाओ। चूहा बुढ़िया के पास चला जाता है आर फिर बुढ़िया के साथ रहने लगता है।

एक दिन बुढ़िया चर्च जाती है। वह पकाने का बर्तन आग के पास छोड़ जाती है और चूहे को सावधान कर जाती है कि वह अपना ख्याल रखे और बर्तन में न कूद पड़े। जब वह चर्च से लौट कर घर आती है तो उसको कहीं भी अपना चूहा नहीं दिखायी देता। अन्त में वह बर्तन में से सूप लेने जाती है तो वह अपने चूहे को उस सूप में मरा पाती है।

वह दुखी हो जाती है रोने लगती है उसको रोता देख कर अॅगीठी अपनी राख बिखेरने लगती है। खिड़की पूछती है कि "ओ अॅगीठी क्या हुआ।" तो अॅगीठी बोलती है "अरे तुम्हें कुछ नहीं पता। बुढ़िया का दोस्त चूहा बर्तन में है बुढ़िया रो रही है और मैं राख चारों तरफ बिखेरना चाहती हूॅ।"

यह सुन कर खिड़की खुलने और बन्द होने लग जाती है। सीढ़ियॉ नीचे गिर जाती हैं। चिड़िया अपने पंख नोचने लग जाती है। पेड़ अपने पत्ते गिरा देता है। लड़की जो घड़ा ले कर कुॅए पर पानी भरने जाती है अपना घड़ा ही तोड़ देती है। एक घर की स्त्री जो रोटी बना रही थी अपना आटा छज्जे से बाहर फेंक देती है।

अन्त में घर का मालिक घर वापस आता है और सारी कहानी सुनता है तो कहता है "मैं तुम दोनों की हड्डियॉ तोड़ दूॅगा।" यह कह कर वह एक डंडी उठाता है और नौकरानी और उसकी मालकिन दोनों की बहुत पिटायी करता है।

इस कहानी का एक और रूप जो मोरोसी में कहा सुना जाता है।[38]

इस कहानी का एक रूप जो वेनिस में कहा सुना जाता है वह यहॉ दिया जाता है। इसे बरनोनी ने लिखा है। —

एक बार की बात है कि एक चूहा था और एक सौसेज थी। एक दिन चूहा सौसेज से बोला — "आज मैं चर्च जाऊॅगा खाना जल्दी तैयार कर लेना।"

सौसेज बोली — "ठीक है।"

[38] Read this version from Morosi – Tale No 90 – "The Ant and the Mouse" in this book.

उसके बाद चूहा चर्च चला गया और जब चर्च से लौटा तो सब कुछ तैयार था। अगले दिन सौसेज मास के लिये गयी तो चूहे ने खाना बनाया। उसने आग के ऊपर बर्तन रखा उसमें चावल डाले और फिर उसके अन्दर यह देखने के लिये घुसा कि उनमें उसने नमक डाल दिया या नहीं।

पर वह तो उसके अन्दर ही गिर पड़ा और मर गया। सौसेज जब चर्च से वापस आयी तो उसने दरवाजा खटखटाया क्योंकि उसके घर में घंटी नहीं थी, पर किसी ने जवाब ही नहीं दिया। उसने पुकारा भी "चूहे चूहे" पर कोई नहीं बोला। यह देख कर सौसेज एक लोहार के पास गयी ताकि वह उसके घर का ताला तोड़ सके। ताला तोड़ने बाद वह घर में घुसी और फिर पुकारा "चूहे चूहे तुम कहॉ हो।" पर चूहा तो नहीं बोला।

उसने सोचा कि वह खाना लगाती है चूहा भी अभी आता होगा। सो उसने बर्तन में से चावल पलटे। लो उसमें तो चूहा मरा पड़ा था। "ओह बेचारा चूहा। मेरा प्यारा चूहा। अब मैं क्या करूॅ।" और वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

तभी मेज चारों तरफ घूमने लगी। बराबर में जो बर्तनों की आलमारी रखी थी उसमें से प्लेटें आदि नीचे गिरने लगीं। दरवाजे अपने आप ही खुलने बन्द होने लगे। फव्वारा अपने आप ही सूख गया। मालकिन अपने आप ही जमीन पर घिसटने लगी। मालिक छज्जे से नीचे कूद पड़ा और अपनी गर्दन तोड़ बैठा।

यह सब उस चूहे की मौत की वजह से हुआ।

83 दावत का एक दिन[39]

ग्रिम्स की कहानी "सुनहरी बतख"[40] में यह बतख के पास एक ऐसी ताकत है जिससे जो कोई भी उसे छूता है वह उससे तुरन्त ही चिपका जाता है। यह विचार इटली की कई कहानियों में पाया जाता है। इसी विचार का सबसे अच्छा उदाहरण वेनिस की यह कहानी है।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी रहते थे। पति नाव चलाने का काम करता था। एक दावत के दिन[41] नाविक ने सोचा कि वह एक बतख खरीदे सो उसने एक बतख खरीदी और घर ले जा कर अपनी पत्नी को दी और बोला —

"प्रिये देखो आज दावत का दिन है। आज मैं अच्छा खाना खाना चाहता हूँ। इसको ठीक से बनाना। आज मेरा दोस्त टोनी भी हमारे साथ खाना खायेगा। उसने कहा है कि वह टार्ट[42] ले कर आयेगा।"

पत्नी बोली — "ठीक है। मैं इसे अभी बनाती हूँ।"

सो उसने उसे साफ किया धोया और आग पर उबलने के लिये रख दिया। उसने सोचा कि जब तक यह उबलता है तब तक मैं मास सुन कर आती हूँ। उसने रसोईघर का दरवाजा बन्द किया कुत्ते और बिल्ले को घर में छोड़ा और चली गयी।

---

[39] A Feast Day. Tale No 83. From Venice. By Bernoni. in Fiabe. p 21.

[40] "The Golden Goose". By Grimms. (Tale No 64)

[41] Feast day – Most saints have their feast day. They are talking about the same.

[42] Tart is a baked dish which is sweet and sour. See its picture above.

जैसे ही उसने घर छोड़ा तो कुत्ता अँगीठी के पास चला गया। वहाँ उसको बड़ी अच्छी खुशबू आयी। उसने एक लम्बी साँस ली और बोला — "उफ़ कितनी अच्छी खुशबू है।"

सो उसने बिल्ले को बुलाया — "ओ बिल्ले इधर आ। देख तो कितनी अच्छी खुशबू आ रही है। देख ज़रा क्या तू इस बर्तन का ढक्कन उठा सकता है।"

बिल्ला वहाँ गया और उसने अपने पंजे से उसे हिलाने की कोशिश की। एक दो बार में ही उसने बर्तन के ढक्कन को नीचे गिरा दिया। इसके बाद उसने बर्तन में से बतख निकाल ली।

कुत्ता बोला — "बिल्ले क्या हम इसमें से आधी बतख खा लें।"

बिल्ला बोला — "आधी क्यों हम लोग सारी ही खा लेते हैं।"

सो उन्होंने वह बतख सारी खा ली। अब उनका पेट बहुत भर गया था। खा पी कर वे बोले — "पर अब हम क्या करें। जब मालकिन घर वापस आयेंगी तो क्या करेंगी। वह जरूर ही हमें पीटेंगी।"

सो वे दोनों घर में चारों तरफ भागने लगे पर उन्हें कोई ऐसी जगह नहीं मिली जहाँ वे छिप सकते। वे उसके बिस्तर के नीचे छिपने जा रहे थे कि वे बोले — "नहीं नहीं यहाँ नहीं। यहाँ तो वह हमें ढूँढ लेंगी।" वे सोफा के नीचे छिपने गये तो उनको वह जगह भी पसन्द नहीं आयी क्योंकि वह उनको वहाँ भी देख सकती थी।

अन्त बिल्ले को छत में लगे शहतीर में लगे मकड़ी का जाला दिखायी दे गया। उसने एक कूद मारी और उसमें घुस गया। कुत्ता चिल्लाया — "वहॉ से भाग बिल्ले वहॉ से भाग वरना तू वहॉ देख लिया जायेगा क्योंकि तेरी तो पूँछ बाहर निकली हुई है। नीचे उतर नीचे उतर।"

"मैं नहीं उतर सकता। मैं तो इसमें फॅस गया हूँ।"

"ठीक है तब तुझे निकालने के लिये मैं तेरे पास आता हूँ।" यह कह कर वह उसकी पूँछ पकड़ कर उसे नीचे खींचने के लिये ऊपर की तरफ कूदा पर बजाय उसको खींचने के वह खुद ही उसकी पूँछ में उलझ कर रह गया। बहुत कोशिश करने के बाद भी वह उसकी पूँछ से अपने आपको छुड़ा न सका और उसको भी वहीं रह जाना पड़ा।

इस बीच मालकिन ने पादरी की मास के खत्म होने का इन्तजार नहीं किया। वह बीच में ही घर की तरफ वापस दौड़ ली। भागते भागते आ कर उसने दरवाजा खोला और तुरन्त ही बर्तन की तरफ दौड़ी।

जब उसे यह पता चला कि उस बर्तन में कोई बतख नहीं है बल्कि रसोईघर में उसकी चबायी हुई हड्डियॉ ही बिखरी पड़ी हैं तो उसकी समझ में आ गया कि यह उसके कुत्ते बिल्ले का काम है। उन दोनों ने मिल कर उसकी बतख को खा लिया है। अब मैं उनकी अच्छी तरह से खबर लेती हूँ।

कह कर उसने एक डंडी उठायी और उनको ढूँढने निकली। वे लोग कहाँ छिप गये हैं। वह इधर उधर देखती है पर वे उसे कहीं नहीं मिलते। वह निराश हो कर फिर से रसोईघर में आती है पर वे उसे वहाँ भी नहीं मिलते। तभी उसकी आँख ऊपर उठती है तो क्या देखती है कि दोनों छत की शहतीर से चिपके हुए हैं।

"अच्छा तो तुम लोग यहाँ छिपे हुए हो। ज़रा ठहरो।" कह कर वह एक मेज खिसका कर वहाँ लाती है और उनको वहाँ से खींचने वाली होती है कि वह खुद कुत्ते की पूँछ से चिपक जाती है और लाख कोशिश करने पर भी वह अपने आपको वहाँ से आजाद नहीं कर पाती।

अब उसका नाविक पति घर आता है तो वह दरवाजे से ही आवाज लगाता है "खोलो खोलो दरवाजा खोलो।"

पत्नी अन्दर से बोलती है — "मैं दरवाजा नहीं खोल सकती। मैं यहाँ बहुत ज़ोर से चिपकी हुई हूँ।"

"अरे अपने आपको वहाँ से छुड़ाओ और दरवाजा खोलो। और वे दोनों कहाँ बँधे हुए हैं।"

"मैं नहीं खोल सकती। मैं नहीं कर सकती।"

"पर तुम कहाँ चिपकी हुई हो?"

"मैं कुत्ते की पूँछ से चिपकी हुई हूँ।"

"ओ बेवकूफ मैं तुम्हें कुत्ते की पूँछ दे दूँगा पर तुम दरवाजा तो खोलो।"

पति ने दो चार बार दरवाजे में धक्का मारा तो दरवाजा टूट गया। वह रसोईघर में गया तो देखा कि तीनों एक दूसरे से चिपके खड़े हैं। वह उन सबको छुड़ाने गया तो वह खुद भी उन सबसे चिपक गया।

उसके बाद आया नाविक का दोस्त टोनी। उसने दरवाजा खटखटाया — "दोस्त दरवाजा खोलो। देखो मैं टार्ट ले आया हूँ।"

नाविक बोला — "दोस्त मैं दरवाजा नहीं खोल सकता। मैं यहाँ चिपक गया हूँ।"

दोस्त बोला — "यह तो बहुत बुरी बात है। क्या तुम अभी भी चिपके हुए हो। तुमको तो पता था कि मैं आने वाला हूँ फिर भी तुमने आपने आपको चिपका लिया। अपने आपको छुड़ाओ और आ कर दरवाजा खोलो।"

"दोस्त मैं नहीं आ सकता। मैं चिपका हुआ हूँ।"

यह सुन कर दोस्त गुस्सा हो गया। उसने दरवाजे में एक ठोकर मारी और सीधा रसोईघर में चला गया। वहाँ उसने देखा कि सब आपस में चिपके हुए हैं तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा।

फिर बोला — "अच्छा ज़रा ठहरो। मैं अभी तुम सबको यहाँ से छुड़ाता हूँ।"

कह कर उसने उसको ज़ोर से खींचा तो बिल्ले की पूँछ छूट गयी। बिल्ला कुत्ते के मुँह में गिरा कुत्ता मालकिन के मुँह में गिरा

और मालकिन अपने पति के मुँह में गिरी और पति अपने दोस्त के मुँह में आ कर गिरा।

और दोस्त उन खरदिमागों के मुँह में गिरा जो इस कहानी को सुन रहे हैं।

84 तीन भाई[43]

यह बेमतलब की कहानी वेनिस में कही सुनी जाती है पर ऐसी कहानियॉ इटली में बहुत ज़्यादा प्रचलित नहीं हैं।

एक बार की बात है कि इटली देश में तीन भाई रहते थे। उनमें से दो भाइयों के पास कपड़े नहीं थे और एक भाई के पास कमीज नहीं थी।

मौसम बहुत खराब था और उन्होंने शिकार पर जाने का फैसला किया। उन्होंने तीन बन्दूकें उठायीं जिनमें से दो टूटी हुई थीं और एक की नली ही नहीं थी।

बन्दूकें ले कर वे शिकार के लिये चल दिये। चलते चलते वे एक घास के मैदान में आ गये। वहॉ उनको एक बड़ा खरगोश[44] दिखायी दे गया। उन्होंने उसको गोलियॉ मारनी शुरू कीं पर वे उसे पकड़ नहीं सके।

उनमें से एक बोला — "अब हम क्या करें?"

फिर उनको याद आया कि वहीं पास में ही उनकी एक गौडमदर[45] रहती थी सो वे उसके घर गये और वहॉ जा कर उसका

[43] Three Brothers. Tale No 84. From Venice. By Bernoni. In "Punt I". p 18.
[44] Translated for the word "Hare". Hare is a bit bigger then normal rabbit. See its picture above.
[45] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

दरवाजा खटखटाया। उन्होंने उससे उस बड़े खरगोश को पकाने के लिये एक बर्तन माँगा जिसको उन्होंने अभी तक पकड़ा ही नहीं था।

गौडमदर घर पर नहीं थी फिर भी उसने जवाब दिया — "मेरे बच्चों, देखो रसोईघर में जाओ। वहाँ पर तीन बर्तन रखे हैं। उनमें से दो तो टूटे हुए हैं और एक का तला ही नहीं है। तुमको जो पसन्द आये वह बर्तन ले लो।"

"धन्यवाद गौडमदर।" कह कर वे रसोईघर में गये और उन्होंने वह बर्तन उठा लिया जिसका तला नहीं था। उस बर्तन में उन्होंने उस बड़े खरगोश को पकने के लिये रख दिया।

जब बड़ा खरगोश उसमें पक रहा था तो उनमें से एक बोला — "चलो गौडमदर से चल कर पूछते हैं अगर उसके बागीचे में कुछ हो रहा हो तो। उसको तोड़ कर उसका सूप बनाते हैं।"

सो उन्होंने उससे जा कर पूछा कि क्या उसके बागीचे में कुछ था। वह बोली — "हाँ हाँ मेरे बच्चों मेरे बागीचे में अखरोट के तीन पेड़ लगे हैं। उनमें से दो तो सूख गये हैं और तीसरे में फल कभी आये ही नहीं। जितने भी फल तुम उनमें से गिरा सकते हो गिरा लो।"

सो उन तीन भाइयों में से एक भाई गौडमदर के बागीचे में गया और वहाँ जा कर उन तीनों पेड़ों में से वह पेड़ हिलाया जिसमें कभी फल लगे ही नहीं थे। पेड़ हिलाने से एक बहुत ही छोटा सा

अखरोट उसके सिर पर गिर पड़ा। इससे उसके पैर की एड़ी टूट गयी।

फिर उन्होंने और अखरोट उठाये और बड़े खरगोश के पास चल दिये जो अब तक पक चुका था। उस सबको देख कर एक भाई बोला — "अब हम इतने सारे सूप का क्या करें?"

सो वे पास के एक गॉव में गये वहॉ बहुत सारे लोग बीमार थे। वहॉ जा कर उन्होंने गॉव में एक नोटिस लगा दिया कि कोई भी जो चाहे फलॉ जगह से खरगोश का सूप मुफ्त में ले सकता है।

यह नोटिस पढ़ कर हर आदमी खरगोश का सूप लेने चल दिया। वह सूप उन्होंने अपनी सलाद की टोकरी में लिया और उसको बॉटने लगे। एक आदमी जो उस गॉव का नहीं था उसने यह सूप इतना सारा पिया कि वह तो मरने वाला ही हो गया।

तब उन तीनों भाइयों ने तीन डाक्टर बुलवाये – एक अन्धा था, दूसरा बहरा था और तीसरा गूँगा था।

अन्धा डाक्टर अन्दर गया और बोला — "अपनी जीभ दिखाओ।"

बहरे डाक्टर ने पूछा — "ज़रा बताओ तो तुम कैसे हो?"

गूँगे डाक्टर ने कहा — "मुझे एक कागज पैन्सिल दो।"

तीनों भाइयों ने उसको एक कागज पैन्सिल दे दी तो उसने उस पर लिखा —

तुम दवा बेचने वाले के पास जाओ
क्योंकि उसको अपना काम आता है
दो सैन्ट का तो तुम उससे वह खरीदो जिसका मुझे नाम नहीं पता
उसको तुम वहॉ रख दो जहॉ तुम चाहो
यह ठीक हो जायेगा हालॉकि मुझे पता नहीं कब
अब मैं चलता हूँ और इसको तुम्हारे हवाले छोड़ता हूँ

85 बूचैटीनो[46]

यह इटली की सबसे लोकप्रिय कथा है। इसका यह रूप लैघौर्न में कहा सुना जाता है।

एक बार की बात है कि इटली देश में एक बच्चा रहता था जिसका नाम था बूचैटीनो। एक दिन उसकी मॉ ने कहा — "बूचैटीनो, ज़रा जा कर सीढ़ियों पर झाड़ू तो लगा दे बेटा।"

बूचैटीनो एक आज्ञाकारी बेटा था। उसको दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह तुरन्त गया और सीढ़ियॉ साफ करने लगा। सीढ़ियॉ साफ करते समय उसको वहॉ एक पैनी मिल गयी।

उसने सोचा — "अरे मैं इस पैनी का क्या करूँ? या तो मैं इसके खजूर खरीद लूँ? पर नहीं, उसकी तो मुझे गुठलियॉ फेंकनी पड़ेंगी।

तो फिर मैं इसके कुछ सेब खरीद लेता हूँ। नहीं नहीं, उसके तो मुझे बीच का हिस्सा फेंकना पड़ेगा। तब फिर मैं कुछ गिरियॉ खरीद लेता हूँ। मगर उनका भी मुझे छिलका फेंकना पड़ेगा।

तब फिर मैं क्या करूँ? क्या खरीदूँ? हॉ मैं इस पैनी की अंजीर खरीद लेता हूँ। वे में सारी की सारी खा सकता हूँ। सो तुरन्त ही

[46] Buchettino. Tale No 85. From Leghorn area. By Papanti, p 25.

उसने एक पैनी की अंजीर खरीद लीं। उनको ले कर वह एक पेड़ के नीचे खाने बैठ गया।

जब वह पेड़ के नीचे बैठा अंजीर खा रहा था तो वहॉ से एक ओगरे[47] गुजरा। उसने बूचैटीनो को अंजीर खाते देखा तो उससे बोला —

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दे दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊॅगा

यह सुन कर बूचैटीनो ने एक अंजीर उसकी तरफ फेंक दी। पर वह तो नीचे जमीन पर गिर पड़ी। यह देख कर ओगरे फिर बोला —

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊॅगा

इस पर बूचैटीनो ने एक और अंजीर उस ओगरे की तरफ फेंक दी। पर इत्तफाक से वह भी जमीन पर नीचे गिर पड़ी। यह देख कर ओगरे फिर बोला —

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊॅगा

[47] Ogre – An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

बेचारे बूचैटीनो को ओगरे की चाल का पता ही नहीं चला और न ही उसको यह पता चला कि वह ओगरे उसको फॅसाने के लिये और उसको पकड़ने के लिये यह सब कर रहा था। अब वह क्या करे?

अबकी बार वह अपने पेड़ के सहारे थोड़ा सा लेट गया और तब उसने अपने छोटे छोटे हाथों से एक अंजीर ओगरे की तरफ फेंकी। बस ओगरे को मौका मिल गया उसने हाथ बढ़ा कर बूचैटीनो को पकड़ लिया और उसको अपने थैले में रख लिया।

थैले को उसने अपने कन्धे पर डाला और खूब ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया —

प्रिये ओ प्रिये, आग पर बर्तन रखो क्योंकि आज मैंने बूचैटीनो को पकड़ लिया है
प्रिये ओ प्रिये, आग पर बर्तन रखो क्योंकि आज मैंने बूचैटीनो को पकड़ लिया है

जब ओगरे अपने घर के पास पहुॅचा तो उसने अपना थैला जमीन पर रख दिया और कुछ और करने के लिये वहॉ से चला गया।

बूचैटीनो ने जब अपने आस पास सब शान्त सुना तो उसने अपने पास रखे चाकू से वह थैला फाड़ डाला और उसमें से बाहर निकल आया। बाहर निकल कर उसने उस थैले को पत्थरों से भर दिया और गाता हुआ वहॉ से भाग गया —

ओ मेरी टॉगों तुमको भागने में कोई शर्म नहीं है जबकि तुमको भागने की जरूरत हो

कुछ देर में ही ओगरे वापस लौटा और लापरवाही से अपना थैला उठा कर घर में घुसा और अपनी पत्नी से बोला — "क्या तुमने आग पर पानी उबालने के लिये बर्तन रख दिया?"

पत्नी तुरन्त ही बोली — "हॉ रख दिया।"

इस पर ओगरे बोला — "आज हम बूचैटीनो को पकायेंगे। ज़रा यहॉ आओ और उसको बाहर निकालने में ज़रा मेरी सहायता तो करो।"

दोनों ने बूचैटीनो वाला वह थैला उठाया और अंगीठी की तरफ ले चले। वहॉ जा कर वे बूचैटीनो को गर्म पानी के बर्तन में डालने ही वाले थे कि उन्होंने देखा कि वहॉ बूचैटीनो तो था नहीं बल्कि उनके थैले में तो पत्थर भरे थे।

ज़रा सोचो उन पत्थरों को देख कर उस ओगरे का क्या हाल हुआ होगा। वह तो यह धोखा खा कर पागल सा ही हो गया होगा।

अपने इस पागलपन में उसने तो अपने दॉतों से अपने हाथ ही काट लिये। वह इस चाल को सह नहीं सका और बूचैटीनो को बदला लेने के लिये फिर से पकड़ने चल दिया।

अगले दिन वह सारे शहर में घूमता फिरा और सब छिपने वाली जगहों को देखता फिरा कि कहीं उसको बूचैटीनो मिल जाये। आखिर बूचैटीनो उसको एक छत पर बैठा दिखायी दे गया।

वह ओगरे की तरफ देख कर उसकी इतनी हॅसी उड़ा रहा था कि उसका मुॅह उसके कानों तक फैल रहा था।

पहले तो ओगरे ने सोचा कि वह उसके ऊपर अपना गुस्सा दिखाये पर फिर उसने अपने आपको रोक लिया और बूचैटीनो से बहुत ही नम्रता से पूछा — "बूचैटीनो, ज़रा यह तो बताओ कि तुम वहॉ इतनी ऊपर चढ़े कैसे?"

बूचैटीनो ने पूछा — "क्या तुम सचमुच ही यह जानना चाहते हो कि मैं यहॉ चढ़ा कैसे? तो सुनो। मैंने प्लेटों के ऊपर प्लेटें रखीं, गिलास के ऊपर गिलास रखे, पैन[48] के ऊपर पैन रखे, केटली के ऊपर केटली रखी और यहॉ चढ़ कर बैठ गया।"

"अच्छा ऐसा है? तो थोड़ा इन्तजार करो।"

यह कह कर ओगरे ने प्लेटें गिलास केटली पैन इकट्ठे किये और उनका एक पहाड़ सा बना लिया। फिर उसके ऊपर उसने बूचैटीनो को पकड़ने के लिये चढ़ना शुरू किया।

जैसे ही वह उन प्लेटों गिलासों केटलियों और पैनों के पहाड़ के ऊपर पहुॅचा तो यह क्या? फड़ाक। बर्तनों का वह सारा पहाड़ नीचे गिर पड़ा और इस तरह से वह ओगरे एक बार फिर से धोखा खा गया।

[48] Used for Frying Pan.

बूचैटीनो यह देख कर बहुत खुश हुआ और अपनी मॉ के पास भाग गया। मॉ ने उसको इतना खुश देख कर एक छोटी सी कैन्डी उसके छोटे से मुॅह में रख दी।

86 तीन बतख बच्चियॉ[49]

इस अध्याय का अन्त हम आखीर में दो कहानियॉ दे कर करते हैं जिनके हीरो जानवर हैं। इनमें से एक कहानी से हमारे पढ़ने वाले जरूर ही परिचित होंगे। इसकी पहली कहानी वेनिस में कही सुनी जाने वाली है।

एक बार की बात है कि इटली देश में तीन बतख के बच्चे रहते थे। वे तीनों भेड़िये से बहुत डरते थे क्योंकि अगर किसी दिन उसने उनको देख लिया तो वह तो उनको खा ही जायेगा।

एक दिन उन तीनों में से सबसे बड़ी बतख बच्ची ने दूसरी दो बतख बच्चियों से कहा —"तुम्हें मालूम है कि मैं क्या सोचती हूॅ मैं सोचती हूॅ कि रोज रोज के इस डरने से तो अच्छा है कि हम एक घर बना लें। इससे भेड़िया हमको नहीं खा पायेगा। चलो तब तक हम लोग कुछ ऐसी चीज़ें ढूॅढते हैं जिनसे हम अपना घर बना सकें।"

दूसरी दोनों बतख बच्चियॉ इस बात पर तुरन्त ही राजी हो गयीं। सो वे तीनों अपना मकान बनाने के लिये सामान ढूॅढने के लिये निकल पड़ीं। रास्ते में उनको एक आदमी मिला जिसके पास बहुत सारे तिनके थे।

[49] Three Goslings. Tale No 86. From Venice. By Bernoni. In "Punt III", p 65.

उन्होंने उस आदमी से कहा — "ओ भले आदमी क्या तुम हमको थोड़ा से तिनके दोगे ताकि इनसे हम अपने लिये मकान बना सकें ताकि हमें भेड़िया न खा सके?"

आदमी बोला — हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने चाहो उतने तिनके ले जाओ।" और उसने जितने तिनके उनको चाहिये था उनको उतने तिनके दे दिये।

उन्होंने उस आदमी को धन्यवाद दिया और तिनके ले कर एक मैदान में चली गयीं। वहॉ जा कर उन्होंने तिनकों का एक बहुत ही सुन्दर घर बनाया जिसमें एक दरवाजा था, छज्जे थे और एक छोटा सा रसोईघर भी था। थोड़े में कहा जाये तो उस घर में सब कुछ था। और सब कुछ बहुत अच्छा था।

जब घर बन कर तैयार हो गया तो सबसे बड़ी बतख़ बच्ची ने कहा — "अब मैं इसमें अन्दर जा कर देखती हूँ कि हम सब इसमें आराम से रह सकते हैं या नहीं।"

सो वह घर के अन्दर गयी और बोली कि वह घर तो बहुत ही आरामदेह था। पर फिर वह बोली "ज़रा ठहरो।" कह कर वह घर के दरवाजे की तरफ गयी और घर के दरवाजे में ताला लगा कर घर के छज्जे पर गयी।

वहॉ से वह और दूसरी दो बतख़ बच्चियों से बोली जो घर के बाहर ही खड़ी थीं — "तुम लोग यहॉ से चले जाओ मेरा तुम लोगों

से कुछ लेना देना नहीं है। मैं यहॉ इस घर में अकेली ही आराम से रहूँगी।"

दूसरी दो बतख बच्चियॉ बेचारी यह सुन कर रो पड़ीं। उन्होंने अपनी बहिन से बहुत प्रार्थना की कि वह उनके लिये घर का दरवाजा खोल दे और उनको घर के अन्दर आने दे और उनको भी अपने साथ उस घर में रहने दे पर उनकी बहिन ने उनकी एक न सुनी।

वे बेचारी दोनों वहॉ से चली गयीं। चलते चलते उनको एक और आदमी मिला जो भूसा ले कर जा रहा था। उन्होंने उस भले आदमी से कहा — "ओ भले आदमी, क्या तुम हमको थोड़ा सा भूसा दोगे ताकि हम अपने रहने के लिये घर बना सकें ताकि हमको भेड़िया न खा सके?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। तुमको जितना भूसा चाहिये उतना भूसा ले जाओ।" कह कर उस आदमी ने उनको जितना भूसा चाहिये था उतना भूसा दे दिया।

सो उन्होंने उस आदमी से भूसा लिया उसको धन्यवाद दिया और फिर अपने रास्ते चल पड़ीं। वे भी एक हरे घास के मैदान में आ गयीं और वहॉ आ कर उन्होंने उस भूसे से अपना एक सुन्दर सा घर बनाया। उनका घर उनकी बहिन के घर से भी ज़्यादा सुन्दर था।

बीच वाले बतख बच्ची ने छोटी बतख से कहा — "मैं भी इस घर में अन्दर जा कर देखती हूँ कि यह घर आरामदेह है या नहीं।"

सो वह उस घर में घुस गयी और अपने मन में सोचा कि "मैं तो यहाँ बहुत ही आराम से रहूँगी। मुझे अपनी यह छोटी बहिन यहाँ नहीं चाहिये सो वह भी दरवाजे पर गयी उसका ताला लगाया और उसके छज्जे पर चढ़ कर बोली — "यह मेरा घर है। मुझे यहाँ तुम नहीं चाहिये सो तुम यहाँ से चली जाओ।"

सबसे छोटी बतख बच्ची बेचारी बहुत ज़ोर से रो पड़ी। उसने भी अपनी बहिन से दरवाजा खोलने की बहुत प्रार्थना की पर उसने भी दरवाजा नहीं खोला। उसने अपना छज्जा भी बन्द कर लिया। सो वह छोटी बतख बच्ची रोती हुई वहाँ से चली गयी।

वह अकेली चली जा रही थी। वह बहुत डरी हुई थी कि अगर कहीं भेड़िये ने उसे देख लिया तो वह तो उसे खा ही जायेगा। पर उसके डरने से क्या होता है।

चलते चलते उसको भी एक आदमी मिला जिसके पास बहुत सारा लोहा और पत्थर थे। उसने उस आदमी से पूछा — "ओ भले आदमी, क्या तुम मुझको थोड़ा सा लोहा और पत्थर दोगे ताकि मैं भेड़िये से बचने के लिये अपने लिये एक मकान बना सकूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। जितना चाहो उतना ले लो।" उस आदमी को उस बतख बच्ची पर दया आ गयी तो उसने खुद ही उसके लिये उस सामान से एक मकान बना दिया।

उस मकान में एक छोटा सा बागीचा भी था और जरूरत का सब सामान था। इसके अलावा वह मजबूत भी बहुत था क्योंकि वह लोहे और पत्थर का बना था। उसके छज्जे और दरवाजे लोहे के बने थे।

सो उस बतख बच्ची ने उस भले आदमी को धन्यवाद दिया और उस घर में रहना शुरू कर दिया।

अब हम भेड़िये के पास चलते हैं। भेड़िया बहुत दिनों से इन बतख बच्चियों की तलाश में घूम रहा था पर वे उसे कहीं मिल ही नहीं रही थीं। कुछ दिन बाद उसको पता चला कि उन तीनों ने तो अपने अपने मकान बना लिये थे।

उसने सोचा "ठहरो मैं तुम्हारे पास आता हूँ तब मैं तुम सबको देखता हूँ।" कह कर वह उस घास के मैदान में आ गया जहाँ सबसे बड़ी बहिन ने अपना तिनकों का घर बनाया था।

वहाँ जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो सबसे बड़ी बतख बोली — "कौन है दरवाजे पर?"

भेड़िया बोला — "आओ आओ मैं हूँ दरवाजे पर।"

बड़ी बतख बच्ची बोली — मैं तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलूँगी क्योंकि तुम मुझे खा जाओगे।"

भेड़िया बोला — "नहीं नहीं तुम डरो नहीं। मैं तुमको नहीं खाऊँगा। तुम दरवाजा तो खोलो। अगर तुमने दरवाजा नहीं खोला तो मैं तुम्हारा घर उड़ा दूँगा।"

और उसने बड़ी बतख बच्ची के दरवाजा खोले बिना ही उसका घर उड़ा दिया और उसको खा गया। उसने सोचा "मैंने एक को तो खा लिया अब मैं बची हुई दोनों बतख बच्चियों को भी खा लेता हूँ।"

सो वह वहाँ से चल कर दूसरी बतख बच्ची के घर आया। वहाँ जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो वह बीच वाली बतख बच्ची बोली — "कौन है दरवाजे पर?"

भेड़िया बोला — "आओ आओ मैं हूँ दरवाजे पर।"

बतख बच्ची बोली — मैं तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलूँगी क्योंकि तुम मुझे खा जाओगे।"

भेड़िया बोला — "नहीं नहीं तुम डरो नहीं। मैं तुमको नहीं खाऊँगा। तुम दरवाजा तो खोलो। अगर तुमने दरवाजा नहीं खोला तो मैं तुम्हारा घर उड़ा दूँगा।"

और उसने उस बतख बच्ची के दरवाजा खोले बिना ही उसका घर भी उड़ा दिया और उसको भी खा गया।

अब वह तीसरी और सबसे छोटी बतख बच्ची के घर आया। वहाँ आ कर भी उसने उसके घर का दरवाजा भी खटखटाया पर उसने भी दरवाजा नहीं खोला।

इस पर भेड़िये ने पहले दो घरों की तरह से उस घर को भी उड़ाने की कोशिश की पर वह उड़ा नहीं सका। अब वह उस मकान

की छत पर चढ़ गया और वहाँ जा कर उसको गिराने के लिये उस पर कूदने लगा। पर सब बेकार।

उसने कहा — "कुछ भी हो किसी न किसी तरह से तो मैं तुझे खा ही जाऊँगा।"

वह छत पर से नीचे उतर आया और बतख से बोला — "सुन ओ बतख की बच्ची क्या तू मेरे साथ मेल जोल कर के रहना चाहती है? क्योंकि तू बहुत अच्छी है इसलिये मैं तुझसे लड़ना नहीं चाहता।

मैंने सोचा है कि कल हम मैकेरोनी[50] पकायेंगे। मैं मक्खन और चीज़ ले कर आऊँगा और तू मैकेरोनी उबाल कर रखना।"

बतख बच्ची बोली — "ठीक है कल तुम मक्खन और चीज़ ले कर आना मैं मैकेरोनी उबाल कर रखूँगी।"

भेड़िया उसके इस जवाब से सन्तुष्ट हो गया और उसको बाई बाई कर के चला गया। अगले दिन बतख बच्ची सुबह सवेरे जल्दी उठी, बाजार से खाना खरीदा और अपने घर आ कर दरवाजा बन्द कर के बैठ गयी।

कुछ देर बाद भेड़िया आया और उसने दरवाजा खटखटाया — "आ ओ बतख बच्ची मैं तेरे लिये मक्खन और चीज़ ले कर आ गया हूँ। दरवाजा खोल।"

---

[50] Macaroni is an Italian dish made with white flour, cheese and butter. See its picture above.

"ठीक है तुम मुझे उन्हें इस छज्जे पर से दे दो।"

"नहीं नहीं तू पहले दरवाजा खोल।"

"मैं दरवाजा तभी खोलूँगी जब सब कुछ तैयार हो जायेगा।"

सो भेड़िये ने उसको मक्खन और चीज़ दे दी और अपने घर चला गया। जब भेड़िया वहाँ से चला गया तो बतख बच्ची ने मैकेरोनी एक केटली में पानी भर कर उबलने के लिये रख दीं।

दो बजे भेड़िया वहाँ फिर आया और पुकारा — "आ बतख बच्ची आ कर दरवाजा खोल।"

"नहीं मैं अभी दरवाजा नहीं खोलूँगी मुझे अभी बहुत काम है। मैं नहीं चाहती कि कोई मेरे काम में दखल दे। जब मैकेरोनी पक जायेगी तब मैं दरवाजा अपने आप खोल दूँगी। तब तुम अन्दर आ कर उसे खा लेना।"

कुछ देर बाद ही बतख बच्ची ने भेड़िये से कहा — "क्या तुम मैकेरोनी चख कर देखना चाहोगे कि वह ठीक से पक गयी या नहीं?"

"तू पहले दरवाजा तो खोल। उस तरीके से मैकेरोनी चखना ज़्यादा अच्छा रहेगा।"

"नहीं नहीं अन्दर आने की तो तुम सोचना भी नहीं। तुम अपना मुँह खोलो तो मैं यहीं से तुम्हारे मुँह में मैकेरोनी डाल दूँगी।"

अब भेड़िया तो बहुत लालची था सो उसने वही खड़े खड़े अपना मुँह खोल दिया और बच्ची बतख ने मैकेरोनी की बजाय

केटली का उबलता पानी उसके मुँह में डाल दिया। इससे भेड़िये का गला जल गया और वह वहीं मर गया।

छोटी बतख बच्ची एक चाकू ले कर नीचे आयी और उसका पेट काट कर अपनी दोनों बहिनों को बाहर निकाल लिया। वे अभी तक ज़िन्दा थीं क्योंकि भेड़िये ने अपने लालच में उनको साबुत का साबुत ही निगल लिया था।

दोनों बड़ी बहिनों ने अपनी सबसे छोटी बहिन से अपने किये की माफी माँगी जो सबसे छोटी बतख बच्ची ने तुरन्त दे दी क्योंकि वह बहुत दयालु थी।

फिर वह उनको अपने घर के अन्दर ले गयी उनको मैकेरोनी खिलायी और फिर वे तीनों उस घर में आराम से रहने लगीं।

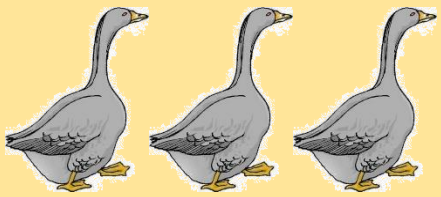

87 मुर्गा[51]

यह आखिरी कहानी भी उसी संग्रह में दी गयी है। यह भी बड़ी अजीब सी कहानी है।

एक बार की बात है कि एक मुर्गा था जो इधर उधर उड़ता फिरता था। एक बार वह उड़ कर एक बागीचे में बैठा तो वहॉ उसको एक चिट्ठी मिल गयी। उसने उस चिट्ठी को खोला और पढ़ा तो उसमें लिखा था "मुर्गा"... और यह कि उसे पोप ने रोम बुलाया था।

मुर्गा यह पढ़ कर बहुत खुश हुआ और वह रोम चल दिया। कुछ दूर चलने के बाद उसको एक मुर्गी मिली। मुर्गी ने पूछा — "दोस्त मुर्गे तुम कहॉ चल दिये।"

मुर्गा बोला — "मुर्गी मैं एक बागीचे में गया था वहॉ मुझे एक चिट्ठी मिली। और यह चिट्ठी कहती है कि मुझे पोप ने रोम बुलाया है।"

मुर्गी बोली — "ज़रा देखना कि क्या इस चिट्ठी में मेरा नाम भी लिखा है।"

"ठहरो।" कह कर उसने उस चिट्ठी को खोला और उलट पलट कर देख कर बोला "मुर्गा मुर्गी... । चलो चलो इसमें तो तुम्हारा नाम भी लिखा है।" सो मुर्गा और मुर्गी दोनों रोम चल दिये।

---

[51] The Cock. Tale No 87. By Bernoni. In "Punt III", p 69. This tory can be read in Italo Calvino's book "Folktales of Italy" also, given under the title "Crystal Rooster" (Tale No 98).

कुछ दूर जाने पर उनको एक बतख मिली। बतख ने पूछा — "दोस्त मुर्गे और मुर्गी तुम लोग कहाँ जा रहे हो।"

मुर्गा बोला — "उड़ते उड़ते मैं एक बागीचे में पहुँच गया। वहाँ मुझे एक चिट्ठी मिली। और यह चिट्ठी कहती है कि मुझे पोप ने रोम बुलाया है।"

बतख बोली — "ज़रा देखना कि क्या इस चिट्ठी में मेरा नाम भी लिखा है।"

"ठहरो।" कह कर उसने उस चिट्ठी को खोला और उलट पलट कर देख कर बोला "मुर्गा मुर्गी बतख... । चलो चलो इसमें तो तुम्हारा नाम भी लिखा है।" सो मुर्गा मुर्गी और बतख तीनों रोम चल दिये।

कुछ दूर जाने पर उनको एक छोटी बतख मिली। जब मुर्गे ने अपनी चिट्ठी देखी तो उसमें छोटी बतख का नाम भी मिल गया सो वह भी उनके साथ चल दी।

फिर उन्हें एक छोटा चिड़ा मिल गया। उसका नाम भी उस चिट्ठी में था सो वह भी उनके साथ ही चल दिया। चलते चलते उनको एक घुन मिल गयी। उन्हें उसका नाम भी मिल गया तो वह भी उनके साथ ही हो ली।

आगे चल कर वे एक जंगल में आ गये तो वहाँ उन्हें एक भेड़िया मिला तो मुर्गा मुर्गी बतख और छोटी बतख सबने अपने अपने पंख नोच डाले और जंगल में भेड़िये से बचने के लिये एक

एक मकान बना लिया और उसमें छिप गये। बेचारा घुन जिसके पास पंख नहीं थे उसने एक गड्ढा खोद लिया और वह उसमें छिप कर बैठ गया।

पिछली कहानी की तरह से इसमें भी भेड़िया आता है और चारों मकानों को उड़ा देता है और उनमें रहने वालों को खा जाता है। वह घुन को भी इसी तरह खाने की कोशिश करता है सो जब वह उसके घर को फूँक मार कर उड़ाने की कोशिश करता है तो उसके पेट में से चारों जानवर सुरक्षित निकल आते हैं और खूब शोर मचाने लग जाते हैं।

वह घुन भी अपने गड्ढे में से बाहर निकल आता है। सब मिल कर खूब खुशियॉ मनाते हैं और फिर रोम जाने का विचार छोड़ कर अपने अपने घर चले जाते हैं।

मार्चेस में कहा सुना जाने वाला रूप

इस कहानी का नाम है "तेरह की शादी"।[52] इसमें जानवर तो वही हैं जो पिछली कहानी में दिये गये थे। अपनी यात्रा के समय वे भेड़िये से मिलते हैं जो उनके साथ साथ जाता है हालॉकि उसका नाम चिट्ठी में नहीं होता। कुछ दूर चलने के बाद भेड़िये को भूख लग आती है। वह कहता है "मुझे भूख लगी है।"

मुर्गा कहता है "मेरे पास तो तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं है।"

भेड़िया कहता है "ठीक है अगर तुम्हारे पास मुझे देने के लिये कुछ नहीं है तो फिर मैं तुम्हें ही खा लेता हूँ।" और वह उसे खा जाता है।

इसी तरह से वह सब जानवरों को खा जाता है बस चिड़ा रह जाता है। चिड़ा एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ता रहता है। वह भेड़िये के सिर के चारों तरफ भी उड़ता है और इस तरह

[52] "Marriage of Thirteen". From Marches. By Gianendrea, p 21.

भेड़िये को बहुत गुस्सा दिला देता है। आखिर एक स्त्री अपने सिर पर एक टोकरी रखे आती दिखायी जाती है जो मजदूरों के लिये खाना ले जा रही है।

चिड़ा भेड़िये से कहता है कि अगर भेड़िया उसकी ज़िन्दगी बख्श दे तो वह उसको उस स्त्री की टोकरी का खाना उसको दिला देगा। भेड़िया उससे यह वायदा कर लेता है तो चिड़ा स्त्री के पास बैठ जाता है। वह उसको पकड़ने की कोशिश करती है पर चिड़ा उससे थोड़ी दूर भाग जाता है। स्त्री अपनी टोकरी नीचे रख कर उसको पकड़ने दौड़ती है पर चिड़ा उसे भगा भगा कर खाने से दूर ले जाता है। इस बीच भेड़िया उसका खाना खा जाता है।

जब स्त्री यह देखती है तो चिल्लाती है "मेरी सहायता करो। मेरी सहायता करो।" मजदूर लोग अपनी अपनी डंडियॉ ले कर उसके पास भागे आते हैं और भेड़िये को मार देते हैं। सारे जानवर उसके पेट से ज़िन्दा और सुरक्षित निकल आते हैं।

सिसिली में कहे सुने जाने वाले दो रूप

"मुर्गा" कहानी के दो रूप सिसिली में कहे सुने जाते हैं।[53] एक तो "मुर्गा और फ़िन्च" जिसमें बस अन्त में यह पता नहीं चलता कि भेड़िये का क्या होता है उस सजा मिलती है या नहीं और जानवरों का भी क्या हुआ। वे बचाये जा सके या नहीं।

इसका दूसरा रूप लौरा गौन्ज़ैनबाक का लिखा हुआ है। क्योंकि यह कहानी ग्रिम्स की एक कहानी की भी याद दिलाता है इसलिये इसे हम यहॉ पूरा दे रहे हैं। इसका नाम है "मुर्गा जो पोप बनना चाहता था"।

[53] One is given by Giuseppe Pitre. "The Wolf and the Finch". (Tale No 279).
The other one is given by Laura Gonzenbach. (Tale No 66).

88 मुर्गा जो पोप बनना चाहता था[54]

पिछली कहानी का दूसरा रूप लौरा गौन्ज़ैनबाक का लिखा हुआ है क्योंकि यह कहानी ग्रिम की एक कहानी की भी याद दिलाता है इसलिये इसे हम यहॉ पूरा दे रहे हैं। इसका नाम है "मुर्गा जो पोप बनना चाहता था"।

एक बार एक मुर्गे ने सोचा कि वह रोम जाये और खुद पोप बन जाये। सो वह रोम की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको एक चिट्ठी मिल गयी जिसको उसने अपने साथ ले लिया।

रास्ते में उसको एक मुर्गी मिली तो उसने मुर्गे से पूछा — "मिस्टर मुर्गे तुम कहॉ चले।"

मुर्गा बोला — "मैं रोम जा रहा हूॅ पोप बनने के लिये।"

मुर्गी ने पूछा — "क्या तुम मुझे भी ले चलोगे।"

मुर्गा बोला — "पहले मैं इस चिट्ठी में देख लूॅ कि इसमें तुम्हारा नाम भी लिखा है या नहीं।"

कह कर उसने चिट्ठी देखी और बोला — "चलो तुम मेरे साथ चलो। अगर मैं पोप बन गया तो तुम मेरी पोपैस बन जाना।"

इस तरह मुर्गे और मुर्गी दोनों अपनी यात्रा पर आगे चल दिये। रास्ते में उन्हें एक बिल्ली मिली तो उसने भी पूछा — "मिस्टर मुर्गे और मिस मुर्गी तुम लोग कहॉ जा रहे हो।"

[54] The Cock That Wished to Become Pope. Tale No 83. By Laura Gonzelbach. (Tale No 66)

मिस्टर मुर्गा बोला — "हम लोग रोम जा रहे है पोप और पोपैस बनने।"

"क्या तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे।"

"मैं पहले देख लूँ कि इस चिट्ठी में तुम्हारा नाम है कि नहीं।" उसने चिट्ठी खोल कर पढ़ी और बोला — "हॉ हॉ आ जाओ। तुम हमारी पोपैस की नौकरानी बन सकती हो।" सो वह भी उनके साथ हो ली।

आगे चल कर उनको एक नेवला[55] मिला तो नेवले ने भी उनसे पूछा — "मिस्टर मुर्गे मिस मुर्गी और मिस बिल्ली तुम सब मिल कर कहॉ जा रहे हो।"

मुर्गा बोला — "मैं इस आशा मे रोम जा रहा हूँ कि मैं पोप बन जाऊँगा।"

"क्या तुम मुझे भी साथ ले चलोगे।"

"रुको जब तक मैं अपनी चिट्ठी न देख लूँ।" कह कर उसने अपनी चिट्ठी देखी तो बोला — "हॉ हॉ चलो तुम भी चलो।" सो नेवला भी उन सबके साथ चल दिया।

रात को वे एक छोटे मकान में आये जिसमें एक बूढ़ी जादूगरनी रहती थी। वह अभी अभी मकान से बाहर गयी थी। सो हर जानवर ने अपने लायक एक जगह चुन ली और वहॉ आराम करने बैठ गया।

[55] Translated for the word "Weasel"

नेवला एक आलमारी में बैठ गया। बिल्ली अँगीठी के पास गर्मी में बैठ गयी। और मुर्गा और मुर्गी दरवाजे के ऊपर के शहतीर पर बैठ गये।

जब वह बूढ़ी जादूगरनी घर वापस आयी तो वह आलमारी में से एक लैम्प निकालने गयी तो नेवला ने अपनी पूँछ से उसके मुँह पर मारा। फिर वह मोमबत्ती जलाने के लिये अँगीठी के पास गयी तो बिल्ली की खुली आँखों को देख कर उसे लगा कि जैसे वे दो अंगारे हों सो उसने उनसे अपनी मोमबत्ती उनसे जलाने की कोशिश की तो बिल्ली उसके चहरे की तरफ कूदी और उसे भयानक रूप से खरोंच लिया।

जब मुर्गे ने यह सब शोर सुना तो उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। जादूगर ने सोचा कि वहाँ पर कोई भूत होगा पर वहाँ तो कोई भूत नहीं था बल्कि नुकसान न पहुँचाने वाले कुछ घरेलू जानवर थे। उसने एक डंडी उठायी और उन चारों को पीट कर वहाँ से बाहर निकाल दिया।

नेवला और बिल्ली और आगे नहीं जाना चाहते थे सो वे तो वहीं रुक गये और मुर्गा और मुर्गी दोनों रोम की तरफ चल दिये।

जब वे रोम पहुँचे तो एक खुले हुए चर्च में घुसे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने चर्च के नौकर से कहा — "सारी घंटियाँ बजवा दो क्योंकि अब मैं यहाँ का पोप हूँ।"

चर्च का नौकर बोला — "बहुत अच्छा। आप आयें। आप अन्दर तो आयें।"

दोनों अन्दर चले गये तो वह उनको एक कमरे में ले गया और वहॉ ले जा कर दोनों को पकड़ लिया। पकड़ कर दोनों की गर्दन ऐंठ दी और एक बर्तन में डाल दिया। फिर उसने अपने दोस्तों को दावत के लिये बुलाया जिसमें सबने मिस्टर मुर्गा और मिस मुर्गी की दावत खायी।

89 बकरा और लोमड़ा[56]

एक बार की बात है कि एक बकरा जब लोमड़ा अपने घर में नहीं था तो उसकी मॉद में घुस गया। रात को जब लोमड़ा लौटा तो बकरे को अपनी मॉद में देख कर डर के मारे भाग गया।

पास में से एक भेड़िया जा रहा था वह भी डर गया। उसके बाद एक साही[57] आया। वह लोमड़े की मॉद में घुस गया और बकरे को अपने कॉटों से गोद दिया। इससे बकरा बाहर निकल आया तो भेड़िये ने उसे मार दिया और लोमड़े ने उसे खा लिया।

[56] The Goat and the Fox. Tale No 89. This story is found in “Studi sui Dialetti greci”. By Morosi. Lecce. 1870.

[57] Translated for the word “Hedgehog”.

90 चींटी और चूहा[58]

एक बार एक चींटी थी। एक दिन वह अपना घर बुहार रही थी कि उसको तीन क्वात्रिनी[59] मिल गयीं। उसने सोचा कि वह उनसे क्या खरीदे। क्या मैं इससे मॉस खरीदूँ। पर मॉस में तो हड्डियॉ होती हैं और वे मेरे गले में फॅस सकती हैं। तो क्या मैं मछली खरीदूँ। नहीं। मैं वह भी नहीं खरीद सकती क्योंकि उसमें भी कॉटे होते हैं। वे मुझे घायल कर देंगे।

बहुत सारी चीज़ों के नाम सोचने के बाद उसने सोचा कि वह एक लाल रिबन खरीदेगी। उसने लाल रिबन खरीदा उसे अपने बालों में लगाया और खिड़की में बैठ गयी।

उधर से एक बैल गुजरा तो उसे देख कर बोला — "तुम तो बहुत सुन्दर हो। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

चींटी बोली — "पहले तुम मुझे गा कर सुनाओ ताकि मैं तुम्हारी आवाज सुन सकूँ।"

बैल ने बड़े घमंड के साथ अपना सुर ऊँचा उठाया। उसका गाना सुन कर चींटी बोली — "नहीं नहीं तुम तो मुझे डरा रहे हो।

उसके बाद उधर से एक कुत्ता गुजरा तो उसके साथ भी बैल जैसा ही हुआ।

---

[58] The Ant and the Mouse. Tale No 90.

[59] Three Quattrini – currency in coins

जब उधर से कई जानवर गुजर गये एक छोटा चूहा उधर से निकला तो उसने भी कहा — "तुम तो बहुत सुन्दर हो। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

चींटी बोली — "पहले तुम मुझे गा कर सुनाओ ताकि मैं तुम्हारी आवाज सुन सकूँ।"

चूहे ने गाया — "पीं पीं पीं।"

उसकी आवाज चींटी को अच्छी लगी सो उसने उसे अपना पति चुन लिया। अब रविवार आया तो चींटी के कुछ दोस्त आये।

चूहे ने चींटी से कहा — "मेरी प्रिय चींटी। मैं ज़रा देख कर आता हूँ कि तुमने जो मॉस पकने के लिये रखा था वह बन गया या नहीं।"

यह कह कर वह चला गया। जव वह वहॉ पहुँचा तो उसे मॉस की इतनी अच्छी सुगंध आयी कि उसको लगा कि वह उसमें से थोड़ा सा खा ले। उसने उसमें अपना पंजा डाला तो वह तो जल गया। फिर उसने अपना दूसरा पंजा डाला तो वह भी जल गया।

उसने अपनी नाक उसके ऊपर रखी तो उसमें उससे उठने वाली भाप उसकी नाक में घुस गयी जिससे उसकी नाक जल गयी। इस तरह से चूहे ने अपने आपको कई जगह जला लिया।

उधर चींटी उसका इन्तजार कर रही थी। उसे इन्तजार करते करते दो घंटे हो गये फिर तीन घंटे हो गये पर चूहे का कहीं पता नहीं था।

आखिर उसने मेज पर खाना लगा दिया। पर जब वह मॉस का बर्तन ले जाने लगी तो उसमें उसने क्या देखा? कि उसका चूहा तो उसमें मरा पड़ा है। यह देख कर वह रोने लगी उसके सारे दोस्त भी उसके साथ रोने लगे।

बाद में वह विधवा ही रही। क्योंकि कि जो चूहा होता है वह हमेशा लालची ही होता है। अगर तुम्हें विश्वास नहीं होता तो तुम उसके घर जा कर देख सकते हो वह तुम्हें अभी भी वहीं मिल जायेगी।

अध्याय 6ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी

रिफौर्मेशन से पहले यूरोप करीब करीब एकसे तरीके से बढ़ रहा था। न केवल चर्च की दंत कथाऐं ही वहॉ पायी जाती थीं बल्कि ओरिएन्ट की कहानियॉ भी वहॉ चारों तरफ बहुत लोकप्रिय थीं। और दूसरी तरह के मनोरंजन के साधन न होने की वजह से ऐसी कहानियॉ और बहुत ज़्यादा लोकप्रिय थीं।

हालॉकि हमने परियों की कहानियॉ और ओरिएन्ट की कहानियॉ पहले ही दी हुई हैं पर इस अध्याय में हम कुछ ऐसी कहानियॉ देंगे जो हॅसाने वाली और मजेदार हैं। हालॉकि इनमें से कुछ कहानियॉ ओरिएन्ट की भी हैं पर उनको इसी श्रेणी में रखना ज़्यादा ठीक होगा।

इस अध्याय की पहली कहानी एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है – "किंग जौन ऐंड ऐबौट औफ द कैन्टरबरी"। [60] इसके दो रूप हमें इटली में मिलते हैं और कई रूप साहित्य में पाये जाते हैं। इसका सबसे छोटा रूप मिलान में कहा सुना जाता है और जिसका शीर्षक है "रसोइया"।

[60] "King John and Abbot of the Canterbury". Its shortest version is from Milan, "The Cook". By Imbriani. p 621.

91 रसोइया[61]

एक बार की बात है कि एक लौर्ड था[62] जिसे लोग "ऐबौट जो खाने पीने के बारे में कोई विचार नहीं करता है" कहते थे। वह बहुत अमीर था। उसके पास बहुत सारी गाड़ियॉ घोड़े सईस और और बहुत सारे लोग थे। उसे खाने पीने और सोने के अलावा कुछ और सूझता ही नहीं था।

एक बार राजा उसके घर के सामने से गुजर रहा था गया तो उसके दरवाजे पर यह लिखा देखा तो उसने सोचा कि "अगर यह कभी कुछ सोचता नहीं है तो वह उसे कोई ऐसा काम देगा जो उसको कुछ सोचने पर मजबूर कर देगी।"

उसने उससे कहा कि एक हफ्ते में उसको ये तीन काम करने चाहिये। उसने उससे कहा – पहला तो यह कि आसमान में कितने तारे हैं, दूसरे आसमान में पहुॅचने के लिये कितने फ़ैथम[63] रस्सी चाहिये और राजा उस समय क्या सोच रहा था।

रसोईये ने देखा कि उसका मालिक दुखी था और अपना सिर झुकाये मेज पर बैठा हुआ था। यह देख कर रसोइये ने मालिक ने पूछा कि क्या बात है वह क्यों दुखी है। तब उसको मालिक ने उसे सब बता दिया।

---

[61] The Cook. Tale No 91. From Milan. By Imbriani. p 621.

[62] Lord is a respectable status in Imperial dynasties.

[63] One Fathom is a linear measurement equal to 6 feet.

रसोइया बोला कि अगर वह अपनी जायदाद में से आधा हिस्सा उसको दे दे तो वह इन तीनों सवालों के जवाब उसे बता देगा। उसने उससे एक मरे हुए गधे की खाल एक गाड़ी भर कर रस्सी और अपने मालिक का कोट और शाल माँगा।

अब रसोइया राजा के पास गया तो राजा ने उससे पूछा — "आसमान में कितने तारे हैं।"

रसोइया बोला — "जो कोई भी गधे की इस खाल के बालों को गिन सकता है वही जान सकता है कि आसमान में कितने तारे हैं।"

राजा बोला — "तो गिनो।"

रसोइया बोला कि उसने अपना हिस्सा तो गिन लिया है अब राजा को अपना हिस्सा गिनना है।

तब राजा ने उससे पूछा — "आसमान तक पहुँचने के लिये कितने फ़ैथम रस्सी लगेगी।"

रसोइया बोला — "यह रस्सी यहाँ है। आप इसे ले कर ऊपर चढ़ जाइये फिर नीचे उतर आइये। तब गिन लेते हैं कि आसमान तक जाने में कितो फ़ैथम रस्सी लगेगी।"

आखिर राजा ने पूछा — "मैं क्या सोच रहा हूँ।"

रसोइया बोला — "आप सोच रहे हैं कि मैं ऐबौट हूँ पर मैं ऐबौट नहीं हूँ मैं तो उनका रसोइया हूँ।

92 विचारहीन ऐबौट[64]

जियूसैप्पै पित्रे का कहा गया यह रूप पिछली कहानी से ज़्यादा अच्छा है।

एक बार एक शहर में एक पादरी आया जो ऐबौट बन गया। अपने पैसे की वजह से उसके पास उसकी अपनी गाड़ियॉ थीं घोड़े थे सईस थे नौकर थे सेक्रेटरी था और बहुत सारे लोग थे।

अब इस ऐबौट को केवल खाने पीने और सोने के बारे में ही सोचना रहता था और तो कोई काम था नहीं इसको। सारे पादरी इसके इस व्यवहार से बहुत जलते थे और इसको "विचारहीन ऐबौट" कह कर बुलाते थे।

एक दिन राजा उधर से गुजरा तो उसके घर के सामने रुक गया तो जो उससे जलने वाले थे वे तुरन्त ही राजा के पास आ पहुॅचे और ऐबौट को बुरा भला कहते हुए कहा — "योर मैजेस्टी। इस शहर में एक आदमी है जो आपसे भी ज़्यादा खुश है। आपसे भी ज़्यादा अमीर है। उसके पास किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है। उसका नाम "विचारहीन ऐबौट" है।"

कुछ सोच विचार के बाद राजा बोला — "भले लोगों। अभी आप लोग शान्ति से जाइये। मैं जल्दी ही इस ऐबौट को कुछ सोचने पर मजबूर कर दूॅगा।"

---

[64] The Thoughtless Abbot. Tale No 92. By Giuseppe Pitre. (Tale No 97).

अगले दिन राजा ने ऐबौट को बुलवाया।

ऐबौट ने अपनी गाड़ी तैयार करवायी और अपनी चार घोड़ों वाली बग्घी में बैठ कर राजा के पास पहुँचा। राजा ने उसका दिल से स्वागत किया। अपने पास बिठाया और उससे कई विषयों पर बातचीत की।

अन्त में उसने ऐबौट से पूछा कि लोग उसे विचारहीन ऐबौट क्यों कहते हैं तो उसने जवाब दिया कि क्योंकि वह किसी की चिन्ता नहीं करता था और उसके नौकर उसके मन का काम करते थे।

राजा बोला — "यह तो ठीक है सर ऐबौट। पर जब आप कुछ नहीं करते तो आप मुझे तीन दिन तीन रात में आसमान के तारे गिन कर बतायें नहीं तो निश्चित रूप से आपका सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

बेचारा विचारहीन ऐबौट यह सुन कर तो पत्ते की तरह कॉपने लगा। उसने राजा से विदा ली और अपनी गर्दन की खैर मनाते हुए घर आ गया।

जब शाम को खाने का समय हुआ तो वह चिन्ता की वजह से कुछ खा ही नहीं सका। वह तुरन्त ही अपनी छत पर चला गया और ऊपर आसमान की तरफ देखने लगा। पर उस बेचारे को तो एक भी तारा दिखायी नहीं दिया।

जब कुछ और अँधेरा हुआ तब तारे निकलना शुरू हुए। बेचारे ऐबौट ने उनको गिनना शुरू किया और लिखना शुरू किया। अब

आसमान में कभी थोड़ा अँधेरा हो जाता तो कभी थोड़ा उजाला हो जाता जिससे ऐबौट को तारे गिनने में बहुत परेशानी होने लगी।

उसका रसोइया नौकर सेक्रेटरी सईस और सभी आसपास के लोग यह देख कर चिन्ता में पड़ गये कि उनका मालिक कुछ भी खा पी नहीं रहा है और हमेशा आसमान की तरफ देखता रहता है। कुछ भी समझ न पाने की वजह से उनको लगा कि उनका मालिक पागल हो गया है।

संक्षेप मे कहो तो तीन दिन गुजरने वाले हो रहे थे और ऐबौट अभी तक तारे ही नहीं गिन पा रहा था। उस बेचारे को मालूम यही नहीं था कि वह राजा के सामने कैसे जाये क्योंकि उसको यकीन था कि वह उसको देखते ही उसकी गर्दन उड़ा देगा।

अन्त में आखिरी दिन उसके एक बूढ़े और विश्वास के नौकर ने उससे पूछा कि उसे क्या हो गया है। उसको क्या परेशानी है। ऐबौट ने पहले तो उसे बताने से मना कर दिया पर उस बूढ़े ने जब बार बार उससे विनती की कि वह उसे असली बात बता दे।

तो ऐबौट बोला — "राजा ने मुझे तीन दिन दिये थे आसमान के तारे गिनने के लिये पर मैं तो तारे नहीं गिन सका अब राजा मेरी गर्दन धड़ से अलग करवा देगा।'

जब नौकर ने यह सुना तो बोला — "आप चिन्ता मत कीजिये सरकार मैं सब सँभाल लूँगा।"

वह गया और एक बहुत बड़े बैल की खाल खरीदी। उसको जमीन पर फैलाया। बैल की पूँछ का एक टुकड़ा काटा। आधा कान काटा। और एक तरफ का थोड़ा सा टुकड़ा काटा और ऐबौट से कहा — "आइये अब राजा के पास चलते हैं और जब योर मैजेस्टी आपसे पूछें कि आसमान में कितने तारे हैं तो आप मुझे बुला लेना।

मैं यह खाल जमीन पर बिछाऊँगा और तब आप कहियेगा कि "योर मैजेस्टी। आसमान में उतने ही तारे हैं जितने इस खाल पर बाल हैं। और क्योंकि खाल पर तारों से ज़्यादा बाल हैं इसलिये मुझे इस खाल को हिस्सों को बॉटना पड़ा।"

जब ऐबौट ने उससे यह सब सुन लिया तो उसको बहुत तसल्ली हुई और अपनी गाड़ी वाले को हुक्म दिया कि वह गाड़ी तैयार कर के लाये। ऐबौट और उसका नौकर दोनों उस गाड़ी में बैठ कर राजा के महल चल दिये।

जब राजा ने ऐबौट को देखा तो उसको नमस्ते की और उससे पूछा — "क्या तुमने हमारा काम कर लिया।"

"जी हुजूर। सारे तारे गिन लिये गये हैं।"

"तब मुझे बताओ कि वे कितने हैं।"

ऐबौट ने अपने नौकर को बुलाया तो वह खाल लिये हुए राजा के सामने आया। उसने खाल को जमीन पर बिछाया। इस बीच

राजा को यह अन्दाज ही नहीं लग पा रहा था कि वहॉ हो क्या रहा है सो वह बराबर अपना सवाल दोहराता रहा।

नौकर के खाल बिछा देने के बाद ऐबौट बोला — "योर मैजेस्टी मैंने सब तारे गिन लिये। पिछले तीन दिनों से मैं केवल आसमान के सारे तारे ही गिनता रहा। मैं तो उनको गिनते गिनते पागल हो गया पर फिर भी मैंने सारे तारे गिन लिये हैं।"

"पर यह तो बताओ कि वे हैं कितने।"

"योर मैजेस्टी। आसमान मे तारे उतने ही हैं जितने इस खाल पर बाल हैं। और जो ज़्यादा थे उनको मैंने काट कर अलग कर दिया है। वे सैंकड़ों मिलियन तारे हैं। और अगर आप मेरा विश्वास नहीं करते तो आप किसी से इस खाल के बाल गिनवा कर देख लीजिये। क्योंकि मैं आपके लिये इसका सबूत ले कर आया हूॅ।"

यह जवाब सुन कर तो राजा का मुॅह खुला का खुला रह गया। उससे तो कोई जवाब ही नहीं बन पड़ा। वह बस इतना ही बोला — "जाओ और इतने दिन ज़िन्दा रहो जितने दिन नोआ[65] जिया था। तुम्हारा दिमाग बिना विचारों के ही काफी है।"

ऐसा कह कर उसने उसे धन्यवाद दे कर विदा किया और हमेशा उसका दोस्त रहा।

[65] Noah – a Biblical character. Noah's Ark is famous

ऐबौट अपने नौकर के साथ खुश खुश घर लौट आया और घर आ कर भी उसने खुशियॉ मनायीं। उसने भी अपने नौकर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

उसने उसको ऊॅचा ओहदा दे दिया और हमेशा उसको अपना दोस्त समझा। उसको तनख्वाह का एक औंस से भी ज़्यादा रोज़ का पैसा नियत कर दिया।

सिसिली के एक दूसरे रूप में जियूसैप्पे पित्रे[66] ने लिखा है कि राजा नहीं बल्कि पोप ऐबौट से यह पूछना चाहता था कि "धरती से स्वर्ग की दूरी कितनी है। भगवान स्वर्ग में क्या कर रहा है और पोप क्या सोच रहा है।"

इस कहानी में ऐबौट का रसोइया ऐबौट बन कर पोप के पास जाता है और उसके सवालों के जवाब देता है। वह एक धागे का बड़ सा गोला ले जाता है और कहता है कि धरती से स्वर्ग की दूरी इतनी ही है जितना लम्बा यह धागा।

दूसरे सवाल के जवाब में उसने कहा था कि भगवान स्वर्ग में भले लोगों को इनाम दे रहा है और पापियों को सजा दे रहा है। तीसरे सवाल के जवाब में उसने कहा था कि वह ऐबौट बोल रहा है पर वह ऐबौट नहीं बल्कि उसका रसोइया बोल रहा है।

[66] Giuseppe Pitre. Vol IV. p 437.

93 बास्तियानीलो[67]

यह कहानी वेनिस में कही सुनी जाती है और ग्रिम्स की दो कहानियों का मिला जुला रूप है – एक तो "होशियार ऐलिस" और दूसरी "होशियार लोग"।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी रहते थे जिनके एक बेटा था। उनका यह बेटा जब बड़ा हो गया तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ मैं शादी करना चाहता हूॅ।"

मॉ बोली — "यह तो बहुत अच्छी बात है। बोलो तुम किससे शादी करना चाहोगे।"

बेटा बोला — "मैं माली की बेटी से शादी करना चाहता हूॅ।"

मॉ बोली — "हॉ वह अच्छी लड़की है तुम उससे शादी कर लो। मेरी भी यही इच्छा है।"

सो वह लड़का माली की बेटी के पास गया। माली और माली की पत्नी ने अपनी बेटी उसे दे दी। दोनों की शादी हो गयी। जब वे खाना खा रहे थे तो वाइन खत्म हो गयी।

पति ने कहा "वाइन तो और नहीं है।"

---

[67] Bastianelo. Tale No 93. From Venice. By Bernoni. in Fiabe. (Tale No 6).
This story is the combination of Grimm's two stories – "Clever Alice" and "Clever People".

पत्नी ने यह दिखाने के लिये कि वह एक अच्छी घर सँभालने वाली है बोली "मैं जाती हूँ और कुछ वाइन ले कर आती हूँ।" उसने बोतल उठायी और तहखाने[68] में चली गयी।

उसने टोंटी खोली और सोचने लगी — "अगर मेरे एक बेटा हो और हम उसका नाम बास्टियानीलो रखें और वह मर जाये तो मैं कितनी दुखी हो जाऊँगी।" ऐसा सोच सोच कर वह रोने लगी। वह रोती रही रोती रही और वाइन टोंटी में से निकल निकल कर फर्श पर बहती रही।

जब लोगों ने देखा कि दुलहिन तो अभी तक वापस नहीं लौटी है तो उसकी माँ बोली कि "मैं जा कर देखती हूँ।" जब वह तहखाने में पहुँची तो उसने देखा कि दुलहिन के हाथ में बोतल लगी है और टोंटी से वाइन निकल निकल कर नीचे गिर रही है।

उसने उससे पूछा — "बेटी क्या बात है तुम इतना रो क्यों रही हो।"

लड़की बोली — "माँ मैं यह सोच रही थी कि अगर हमारे एक बेटा हुआ और हम उसका नाम बास्टियानीलो रख दें और अगर वह मर जाये तो मैं कितनी दुखी होऊँगी।"

यह सुन कर तो माँ की आँखों में भी आँसू आ गये। वह भी वहीं बैठ गयी और उसने भी रोना शुरू कर दिया। वह भी रोती रही और रोती रही। इस बीच वाइन फर्श पर बहती रही।

---

[68] Translated for the word "Cellar" as wines are normally kept there in houses.

खाने की मेज पर जब लोगों ने देखा कि वाइन तो अभी तक आयी नहीं तो लड़के का पिता बोला "मैं जा कर देखता हूँ कि क्या मामला है। ऐसा लगता है कि दुलहिन के साथ कुछ गलत हो गया है।"

वह जब तहखाने में पहुँचा तो उसने देखा कि सारे तहखाने में वाइन बिखरी पड़ी है और माँ और दुलहिन दोनों बैठी रो रही हैं। उसने कहा — "क्या बात है। तुम्हारे साथ कुछ गलत हो गया है क्या। तुम दोनों क्यों रो रही हो?"

दुलहिन बोली — "नहीं। पर मैं यह सोच रही थी कि अगर हमारे एक बेटा हुआ और हम उसका नाम बास्टियानीलो रख दें और अगर वह मर जाये तो मैं कितनी दुखी होऊँगी।"

यह सुन कर पिता की आँखों में भी आँसू आ गये। वह भी रो पड़ा। अब वहाँ तीन लोग बैठे रो रहे थे। वाइन अभी भी टोंटी से बह बह कर फर्श पर फैल रही थी।

जब पति ने देखा कि न तो उसकी दुलहिन वाइन ले कर वापस आयी न माँ आयी और न पिता आये तो वह खुद ही तहखाने की तरफ चल पड़ा — "मैं देखता हूँ कि इन तीनों को क्या हुआ जो तीनों में से एक भी लौट कर नहीं आया।"

सो वह भी तहखाने की तरफ चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि सारे तहखाने में वाइन बह रही है और उसकी दुलहिन माँ और पिता तीनों बैठे रो रहे हैं।

यह देख कर सबसे पहले तो वह अन्दर गया और वाइन की टोंटी बन्द की फिर उनसे बोला — "यह तुम सबको क्या हो गया है। वाइन की टोंटी खुली हुई है और तुम सब यहाँ बैठ कर रो रहे हो। क्यों?"

यह सुन कर दुलहिन बोली — "मैं यह सोच रही थी कि अगर हमारे एक बेटा हुआ और हम उसका नाम बास्टियानीलो रख दें और अगर वह मर जाये तो मैं कितनी दुखी होऊँगी।"

दुलहा बोला — "क्या तुम सब लोग पागल हो गये हो। क्या तुम सभी केवल इसी बात पर रो रहे हो और तुम लोगों ने इतनी वाइन खराब कर दी। क्या तुम लोगों के दिमाग में कोई और बात नहीं आती? मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। मैं दुनियाँ घूमूँगा और जब तक मैं तुम लोगों से भी बड़े तीन बेवकूफ नहीं देख लूँगा मैं घर वापस नहीं लौटूँगा।"

उसने एक डबलरोटी बनवायी एक बोतल वाइन ली एक सौसेज लिया कुछ कपड़े लिये और उनकी गठरी बाँध कर एक डंडे पर लटकायी डंडा कन्धे पर रख और चल दिया।

वह चलता रहा चलता रहा पर उसे कोई बेवकूफ नहीं मिला। आखिर वह बोला — "उफ़ अब तक तो मैं थक गया हूँ अब मुझे घर वापस जाना चाहिये। क्योंकि मैंने देख लिया कि मुझे अपनी पत्नी से बड़ा और कोई बेवकूफ नहीं मिल सकता।"

वह कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा था कि क्या वह वापस चला जाये या फिर बेवकूफों की खोज में और आगे जाये। फिर उसने सोचा कि थोड़ी दूर और आगे तक चल कर देख लेते हैं शायद कोई और उनसे बड़ा बेवकूफ मिल जाये। सो वह फिर और आगे चल दिया।

आगे चल कर उसने देखा कि एक आदमी ने पूरी आस्तीन की कमीज पहन रखी है। वह एक कुँए पर खड़ा हुआ है और वह पानी और पसीने से लथपथ है।

उसने उस आदमी से पूछा — "आप यहाँ ऐसा क्या काम कर रहे हैं जिससे आप इतने पानी और पसीने से भीगे हुए खड़े हैं।"

आदमी बोला — "तुम मुझे अकेला छोड़ दो। क्योंकि मैं यहाँ अपनी इस बालटी में पानी भरने के लिये खड़ा खड़ा बहुत देर से कुँए से पानी खींच रहा हूँ पर यह बालटी ही नहीं भरती।"

"पर आप किस चीज़ से पानी खींच रहे हैं?"

"इस छलनी से।"

"तो आप क्या सोचते हैं कि आप इस चलनी में पानी भर लेंगे? ज़रा रुकिये।" कह कर वह पास के एक घर में गया वहाँ से उसने एक बालटी उधार माँगी कुँए पर लौटा और उससे उसकी बालटी पानी से भरी।

वह आदमी बहुत खुश हो गया और उसको धन्यवाद देते हुए बोला "आपका बहुत धन्यवाद। अगर आज आप मेरा पानी नहीं

भरते तो मैं यहाँ खड़ा खड़ा न जाने कब तक अपनी बालटी भरता रहता। और फिर भी वह शायद कभी भरी नहीं जाती। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

पति यह कहते हुए वहाँ से चल दिया "उफ़ यह तो मेरी पत्नी से भी ज़्यादा बेवकूफ था।" कुछ दूर चलने पर उसको एक आदमी और मिला जो कमीज पहने था और पेड़ की एक डाल से नीचे कूदने को था।

वह और पास गया तो उसने देखा कि एक स्त्री पेड़ के नीचे ब्रीचैज़ लिये खड़ी थी। उसने उनसे पूछा कि वे क्या कर रहे थे। तो उन्होंने बताया कि वे वहाँ बहुत देर से खड़े थे और वह आदमी ब्रीचेज़ पहनने की कोशिश कर रहा था पर अब तक पहन नहीं पाया था।

आदमी बोला कि वह इस तरह से कूद कूद कर कई बार ब्रीचेज़ पहनने की कोशिश कर चुका था पर वह अब तक उन्हें पहन नहीं सका था। अब उसे यह भी पता नहीं था कि वह उन्हें कैसे पहने।

पति बोला — "तुम यहाँ पर जितनी देर चाहे उतनी देर ठहर सकते हो पर जिस तरीके से तुम इनको पहनना चाहते हो उस तरीके से तुम इन्हें कभी नहीं पहन पाओगे। आओ नीचे उतरो।"

जब वह नीचे उतर आया तो उसने उसे पेड़ के तने के सहारे खड़ा किया उसकी टाँगें उठायीं और उनको ब्रीचेज़ में डाल दिया।

ब्रीचेज़ पहना कर उसने पूछा "अब ठीक है।"

"हॉ हॉ बहुत अच्छे। तुमको इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। मैं तो यहॉ खड़ा खड़ा पता नहीं कब तक कोशिश करता रहता और फिर भी इन्हें पहन नहीं पाता।"

पति फिर वहॉ से आगे चल दिया "उफ़ मैंने अपनी पत्नी से बड़े दो बेवकूफ देख लिये। कुछ दूर जाने पर वह एक शहर में पहुँच गया। वहॉ उसने एक जगह देखा कि कुछ शोर मच रहा है। वह जब उसके पास पहुँचा कि उसको पता चला कि वहॉ कोई शादी हो रही थी।

उस शहर का यह रिवाज था कि वहॉ बहू घोड़े पर सवार आती थी। इस मौके पर वहॉ दुलहे और घोड़े वाले के बीच में बहुत बहस चल रही थी कि दुलहिन घोड़े पर बैठ कर शहर के फाटक में कैसे घुसे। क्योंकि दुलहिन लम्बी थी घोड़ा ऊँचा था और फाटक का दरवाजा नीचा था। वे फाटक में हो कर नहीं जा सकते थे।

इसके लिये या तो दुलहिन का सिर कटवाना पड़ता या फिर घोड़े की टॉगें कटवानी पड़तीं। दुलहिन का सिर कटे इसके लिये दुलहा बिल्कुल तैयार नहीं था और घोड़े की टॉगें कटें इसके लिये घोड़े वाला तैयार नहीं था इसलिये ही यह परेशानी थी।

पति ने कहा — "रुको।" कह कर उसने दुलहिन को सिर से नीचे दबा दिया और घोड़े को पीछे से धक्का दे दिया। दोनों फाटक में से हो कर शहर में चले गये थे।

दुलहा और घोड़े का मालिक दोनों ने उससे पूछा कि वह इसके लिये क्या चाहता था कि उसने दुलहे की दुलहिन को बचाया था और घोड़े वाले के घोड़े को बचाया था। पर उसने कहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये था।

अपने मन में कहा "दो और एक तीन। बस इतना काफी है। अब मैं घर चलता हूँ।" वह घर पहुँचा और अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये मैं आ गया हूँ। मैंने तुमसे भी बड़े तीन बेवकूफ देख लिये हैं। अब हम शान्ति से रहेंगे और किसी बारे में कुछ नहीं सोचेंगे।"

उन्होंने फिर से शादी की और फिर शान्ति से रहे। समय आने पर पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने बास्टियानीलो रखा। पर वह मरा नहीं वह अभी भी उनके साथ ही रह रहा है।

इस कहानी का एक रूप सिसिली में कहा सुना जाता है।[69] इस कहानी में दुलहिन की माँ सोचती है कि उसकी बेटी का बेटा एक कुँए में गिर पड़ा है। दुलहा जिसकी अभी तक शादी नहीं हुई थी यह सुन कर बहुत परेशान हो जाता है और यात्रा के लिये यह सोच कर निकलता है कि अगर उसको अपनी सास से ज़्यादा कोई बेवकूफ मिल जाता है तो फिर वह वापस नहीं आने वाला।

पहला बेवकूफ जो उसको मिलता है वह एक माँ मिलती है जिसका बच्चा नोचोले[70] खेल खेलते समय अपना गुठलियों से भरा हाथ छेद से बाहर निकालने की कोशिश करता है पर नहीं निकाल पाता। उसकी माँ को डर है कि कहीं उसको अपने बच्चे का हाथ न कटवाना पड़े। तब यह पति बच्चे से कहता है कि वह अपने हाथ में से सारी गुठलियाँ छोड़ दे और तब अपना

[69] "The Peasant of Larcara. By Giuseppe Pitre. (Tale No 148)

[70] Nocciole is a game played with peach pits which are thrown into holes made in the ground and to which certain numbers are attached.

हाथ निकाले तब उसको हाथ आसानी से निकल आयेगा। वह ऐसा ही करता है तो उसका हाथ आसानी से निकल आता है।

आगे जाने पर उसे एक दुलहिन मिलती है जो चर्च में ही नहीं घुस पाती क्योंकि वह बहुत लम्बी है और साथ में अपने सिर में एक ऊँची कंघी लगाये हुए है। यह उलझन भी पिछली कहानी की तरह से ही सुलझायी जाती है।

उसके बाद उसको एक स्त्री मिलती है जो सूत कात रही है। उसकी तकली नीचे गिर पड़ती है। वह एक सूअर जिसका नाम टोनी है को बुलाती है और उसे तकली उठा लाने के लिये कहती है। सूअर सुनता तो है पर वह तकली उठा कर लाता नहीं है। वह स्त्री गुस्सा होती है और उससे कहती है कि अगर वह तकली उठ कर नहीं लाया तो भगवान करे कि उसकी माँ मर जाये।

अब यह पति जो यह सब सुन रहा होता है एक कागज उठाता है उसे एक चिट्ठी की शक्ल में मोड़ता है और उस स्त्री का दरवाजा खटखटाता है। "बाहर कौन है?" पति कहता है — "दरवाजा खोलो। मैं टोनी की माँ के पास से तुम्हारे लिये एक चिट्ठी ले कर आया हूँ। टोनी की माँ बहुत बीमार है और वह टोनी को मरने से पहले एक बार देखना चाहती है।"

पत्नी को आश्चर्य होता है कि उसका कहा गया इतनी जल्दी ही सच हो गया और वह टोनी को उसकी माँ के घर भेज देती है। इतना ही नहीं वह एक खच्चर भर कर उसको बहुत सारी चीज़ें भी देती है। पति खच्चर को सूअर के साथ ले कर चल जाता है और घर खुशी खुशी यह सोचते हुए लौटता है कि दुनियाँ में कितने बड़े बड़े बेवकूफ पड़े हुए हैं। और फिर अपनी पहली चुनी हुई लड़की से ही शादी कर लेता है।

94 क्रिसमस[71]

पिछली वाली कहानी का एक और रूप नैपोली में कहा सुना जाता है। पिछली कहानी में एक बेवकूफ स्त्री अपने सूअर को उसकी मॉ के घर भेज देती है वैसी ही कुछ बेवकूफी नैपोली की इस कहानी में भी पायी जाती है।

एक बार की बात है कि एक पति था उसकी पत्नी कुछ बेवकूफ सी थी। एक दिन पति ने पत्नी से कहा — "प्रिये थोड़ा घर ठीक कर लो क्योंकि क्रिसमस आ रहा है।"

यह कह कर पति बाहर चला गया। जैसे ही उसका पति बाहर गया वह बाहर छज्जे पर आ कर खड़ी हो गयी और हर आने जाने वाले से पूछने लगी कि क्या उसका नाम क्रिसमस था।

सबने उसको यही जवाब दिया "नहीं।" पर एक आदमी यह जानने के लिये कि उसने उससे यह सवाल क्यों पूछा बोला — "हॉ मेरा नाम क्रिसमस है।"

उसने उसको अन्दर बुलाया और घर की सफाई करने के उद्देश्य से उसको हर चीज़ दे दी जो भी उसके पास थी। जब उसका पति आया तो उसने पूछा कि उसने घर की चीज़ों का क्या किया। वह बोली उसने सारा घर साफ कर दिया और जैसा कि उसने कहा था सब चीज़ें क्रिसमस को दे दीं।

[71] Christmas. Tale No 94. From Napoli. By Imbriani. In Pomiglianesi. p 226.

उसके पति को उस पर इतना गुस्सा आया इतना गुस्सा आया कि उसने उसको बहुत पीटा।

एक दूसरे समय पर उसने पति से पूछा कि वह सूअर कब मारेगा तो वह बोला — "क्रिसमस पर।"

पत्नी ने पहले जैसा ही किया। उसने क्रिसमस नाम के आदमी को ढूँढा और अन्दर बुला कर उसको सूअर दे दिया। सूअर को उसने अपने कान के बुन्दे पहनाये गले का हार पहनाया। उसने उस आदमी से कहा कि ऐसा करने के लिये उसके पति ने ही उससे कहा था।

जब उसका पति लौटा और उसको मालूम पड़ा कि उसने क्या कर दिया है उसने उसको बहुत मारा। पर उसके बाद उसने सीख लिया कि वह अपनी पत्नी से कुछ नहीं कहेगा।

इसी कहानी का एक रूप सिसिली में कहा सुना जाता है।[72]

एक पत्नी जो अपने घर में ज़्यादा जगह बनाने के लिये कुछ ज़्यादा ही उत्सुक है वह यह काम अपने घर में इकट्ठा हुआ अनाज निकाल कर करना चाहती है सो एक दिन वह अपने पति से पूछती है कि "हम अपने घर की सफाई कब करेंगे।" पति जवाब देता है जब लम्बा मई आयेगा।"

अब वह स्त्री हर रास्ता चलते आदमी से पूछती है कि उनमें से लम्बा मई कौन है। आखिर एक शरारती आदमी कह देता है कि लम्बा मई वही है। स्त्री उसको घर का सारा अनाज दे देती है। यह शरारती आदमी बरतन बनाने वाला था सो स्त्री कहती है कि कुछ बरतन उसको जरूर ही दे देने चाहिये। वह यह कर देता है।

[72] Giuseppe Pitre. "Long May". (Tale No 186)

स्त्री हर बरतन की तली में एक एक छेद कर देती है और उनको एक रस्सी में बॉध कर कमरे में लटका देती है। अब यह कहने की तो जरूरत ही नहीं है कि जब पति घर वापस आया होगा तो उसने उसे कितना मारा होगा। वह ज़िन्दे से ज़्यादा कहीं मरी हुई थी।

बेवकूफी की एक ऐसी ही कहानी वेनिस में भी कही सुनी जाती है। यह कहानी बरनोनी ने लिखी है और इसका शीर्षक है "दॉव" जिसे हम आगे दे रहे हैं।

95 दॉव[73]

एक बार एक पति पत्नी थे। एक दिन पति ने पत्नी से कहा — "आज कुछ पकौड़े खाये जायें।" पत्नी ने कहा कि हमारे पास उन्हें तलने के लिये कड़ाही तो है ही नहीं तो हम उन्हें तलेंगे कैसे।

पति बोला — "जा कर मेरी गौडमदर से उधार ले आओ।"

पत्नी बोली — "तुम जा कर ले आओ न। थोड़ी ही दूर पर तो है न।"

पति बोला — "तुम ले आओ जब हमारा काम खत्म हो जायेगा तो मैं वापस कर आऊँगा।"

सो वह पति की गौडमदर से कड़ाही मॉगने चली गयी। कड़ाही ले कर वह वापस आयी और अपने पति से बोली — "यह लो कड़ाही। अब तुम खुद ही वापस कर के आना।"

उन्होंने पकौड़े बनाये। दोनों ने उन्हें खूब खाया।

फिर पति बोला — "अब अपना अपना काम करो और जो कोई भी पहले बोलेगा वही इसे वापस करने जायेगा।"

पत्नी अपने कातने के काम पर लग गयी और पति अपना जूता सिलने के काम पर लग गया। दोनों बराबर शान्त थे सो चारों तरफ शान्ति थी सिवाय जब पति अपनी सुई जूते में से निकालता था तो

---

[73] The Wager. Tale No 95. From Venice. By Bernoni. In Fiabe. xiii.
[My Note: A parallel to these stories is "The Porridge Pot" given in my book "Folktales of Europe-1"]

बोलता था "ल्यूलैरो ल्यूलैरो" और जब पत्नी कातती थी तब कहती थी "पिचीची पिचीची"।

इत्तफाक से उधर से एक सिपाही अपने घोड़े के साथ गुजर रहा था। उसने किसी स्त्री से पूछा कि उस सड़क पर क्या कोई जूता बनाने वाला है।

उसने कहा हॉ यहीं पास में है और उसको उस जूते बनाने वाले के घर तक ले गयी। सिपाही ने जूता बनाने वाले से कहा कि वह आये और उसके घोड़े के लिये कमर की पेटी बना दे।

जूता बनाने वाले ने कोई जवाब नहीं दिया बस उसकी जूता सिलने की आवाज ही आती रही "ल्यूलैरो ल्यूलैरो"। तब सिपाही उससे फिर कहा — "ज़रा मेरे घोड़े के लिये कमर की पेटी बना दो नहीं तो मैं तुम्हारा गला काट दूँगा।"

फिर भी जूता बनाने वाला कुछ नहीं बोला "ल्यूलैरो ल्यूलैरो"।

इससे सिपाही को बहुत गुस्सा आ गया उसने अपनी तलवार निकाल ली और फिर गुस्से में भर कर बोला — "ज़रा मेरे घोड़े के लिये कमर की पेटी बनादो नहीं तो मैं तुम्हारा गला काट दूँगा।"

पर इसका भी कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि जूता बनाने वाला अपनी पत्नी से पहले नहीं बोलना चाहता था सो वह केवल वह अपना जूता सिलता रहा और उससे आवाज आती रही "ल्यूलैरो ल्यूलैरो"।

सिपाही यह सुन कर बिल्कुल पागल सा हो गया। उसने जूता बनाने वाले का सिर पकड़ लिया और उसे काटने वाला ही था कि उसकी पत्नी ने देख लिया तो चिल्लायी — "नहीं नहीं ऐसा मत करो।"

जैसे ही पत्नी बोली तो पति बोलने के लिये आजाद हो गया। वह बोला — "अच्छा किया तुम पहले बोल पड़ीं। अब तुम कड़ाही ले कर मेरी गौडमदर के पास जाना और मैं जा कर घोड़े की कमर की पेटी काटता हूँ।"

फिर वैसा ही हुआ और इस तरह उसने शर्त जीती।

ऐसी ही एक कहानी सिसिली में

ऐसी ही एक कहानी सिसिली में भी कही सुनी जाती है। उसका शीर्षक भी "दॉव" ही है।[74] इस कहानी में पति और पत्नी मछली तलते हैं और फिर अपने अपने काम पर चले जाते हैं – पति जूता बनाने का काम करता है और पत्नी कातने का काम करती है। अब उनमें से जो कोई पहले अपना काम खत्म कर लेगा वही मछली खाना शुरू करेगा।

जब वे अपना अपना काम करते हुए गा रहे थे और सीटियॉ बजा रहे थे तो उनका एक दोस्त आ गया और उसने दरवाजा खटखटाया पर क्योंकि दोनों को ही नहीं बोलना था सो अन्दर से कोई जवाब नहीं आया।

फिर वह घर में घुसता है और दोनों से बात करने की कोशिश करता है पर जब उसको कोई भी जवाब नहीं मिलता तो वह खुद ही मेज पर बैठ कर सारी मछली खा जाता है। इस तरह दोनों की मछली मारी जाती है।

[74] "The Wager". By Giuseppe Pitre. (Tale No 181). From Sicily.

96 वह कैंची थी[75]

हमारी सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानियों में से एक प्रकार की कहानी वह है जिनमें स्त्रियों की जिद पायी जाती है। ऐसी कहानियॉ इटली में हर जगह पायी जाती है। उन कहानियों का यह रूप सिसिली में कहा सुना जाता है।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी थे। पति पत्नी दोनों ही दर्जी थे पर पत्नी एक अच्छी घर की देखभाल करने वाली भी थी। एक दिन पति को रसोईघर में कुछ बर्तन टूटे हुए दिखायी दे गये तो उसने पत्नी से पूछा — "ये बर्तन कैसे टूटे?"

पत्नी बोली — "मुझे क्या मालूम।"

पति बोला — "इसका क्या मतलब है कि मुझे क्या मालूम। इनको किसने तोड़ा?"

पत्नी गुस्से में बोली — "इनको किसने तोड़ा? मैंने। मैंने इनको कैंची से काट दिया।"

पति बोला — "क्या कहा कैंची से काट दिया। क्या तुम सच कह रही हो? मैं जानना चाहता हूॅ कि तुमने उन्हें किस चीज़ से तोड़ा। अगर तुम मुझे नहीं बताओगी तो मैं तुम्हें बहुत मारूॅगा।"

पत्नी के हाथ में क्योंकि कैंची थी सो वह फिर बोली — "कैंची से।"

---

[75] Scissiors They Were. Tale No 96.

"तो तुम कहती हो कि तुमने इनको कैंची से काट दिया।"

"हॉ वह कैंची ही थी।"

"क्या मतलब है कि वह कैंची थी। ज़रा ठहरो। मैं तुम्हें अभी बताता हूॅ कि वह कैंची थी या नहीं।"

कह कर उसने अपनी पत्नी की कमर में एक रस्सी बॉधी और उसे एक कुॅए में लटका दिया और फिर पूछा — "अब बताओ कि तुमने उन्हें किस चीज़ से तोड़ा नहीं तो मैं तुम्हें कुॅए में गिराने जा रहा हूॅ।"

"वह कैंची थी। मैंने कहा न।"

पति ने देखा कि यह तो बहुत ज़िद्दी है तो उसने उसे कुछ और नीचे लटका दिया पर यह सब करने के बाद भी उसने अपना कहा नहीं बदला तो उसने उसे कुॅए के बीच तक लटका दिया।

"अब बताओ तुमने उन्हें किस चीज़ से तोड़ा?"

"कैंची से।"

इस बार उसने उसको कुॅए में इतना नीचे लटका दिया कि उसके पैर पानी से छूने लगे। उसने फिर पूछा — "अब बताओ तुमने उन्हें किस चीज़ से तोड़ा?"

"कैंची से।"

पति का गुस्सा बढ़ता जा रहा था उसने उसको कमर तक पानी में डुबो दिया और फिर पूछा — "अब बताओ तुमने उन्हें किस चीज़ से तोड़ा?"

"कैंची से।"

उसकी इतनी जिद पति से सही नहीं गयी। उसने उसे चेतावनी दी — "अभी भी सच बोल दो। अभी भी समय है सच सच बता दो वरना एक झटका और तुम पूरी की पूरी पानी में।"

पत्नी बोली — "कैंची से कैंची से कैंची से।"

और पति ने रस्सी छोड़ दी। छपाक और पत्नी पानी के नीचे।

"अब तुम सन्तुष्ट हो? क्या अब भी तुम यही कहोगी कि तुमने बर्तन कैंची से काटे थे?"

पर इस बार पत्नी का कोई जवाब नहीं आया। वह तो पानी में डूब गयी थी। वह तो अब बोल ही नहीं सकती थी।

पर उसने क्या किया?

उसने अपना हाथ पानी से बाहर निकाला और उससे इशारे से कहने लगी जैसे वह कैंची चला रही थी।

अब बेचारा पति क्या करता। वह बोला — "ऐसे तो मैं अपनी पत्नी को खो दूँगा और मुझे उसके पीछे जाना पड़ेगा। सो मैं उसको पानी के बाहर निकाल लेता हूँ। फिर वह कह सकती है कैंची या बड़ी कैंची[76]।"

[76] Translated for the words "Scissors" and "Shears". In fact she broke them with "Shears" but since she was unable to pronounce "Shears" properly she was continuously calling it "Scissors". And this created the confusion.

सो उसने अपनी पत्नी को बाहर निकाला पर उसके बाद भी कोई उससे यह पता नहीं चला सका कि उसने बर्तन कैसे तोड़े। वह बराबर यही कहती रही कि उसने बर्तन कैंची से काटे।

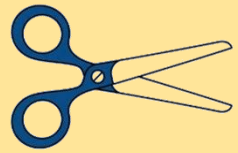

97 डाक्टर का असिस्टैन्ट[77]

बेवकूफी की यह एक और जानी पहचानी कहानी है।

एक बार की बात है कि एक डाक्टर था। वह जब भी अपने मरीजों को देखने जाता था तो हमेशा अपने असिस्टैन्ट को साथ ले जाता था।

एक बार वह डाक्टर अपने एक मरीज को देखने गया तो उसने उससे कहा — "तुम मेरा कहा मानते क्यों नहीं हो कि तुमको कुछ नहीं खाना है।"

मरीज़ बोला — "सर मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैंने कुछ नहीं खाया है।"

डाक्टर बोला — "यह सच नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारी नाड़ी देख कर बता सकता हूँ कि तुमने अंगूर खाये हैं।"

अब तो मरीज पकड़ में आ गया था। वह बोला — "ठीक है सर। मैंने कुछ अंगूर खाये थे पर वे केवल कुछ ही थे।"

डाक्टर बोला — "ठीक है पर आगे से उन्हें भी खाने का खतरा मोल नहीं लेना। और यह भी नहीं सोचना कि तुम मुझे बेवकूफ बना सकते हो।

[77] The Doctor's Apprentice. Tale No 97.

डाक्टर का असिस्टैन्ट जो डाक्टर के साथ ही बैठा हुआ था डाक्टर की यह होशियारी देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया कि दाक्टर ने मरीज की नाड़ी देख कर यह कैसे पता चला लिया कि मरीज ने अंगूर खाये हैं।

अब जैसे ही वे मरीज के घर से चले तो असिस्टैन्ट से अपने मालिक से यह पूछे बिना न रहा जा सका — "मास्टर। आपने यह कैसे पता लगाया कि मरीज ने अंगूर खाये थे।"

डाक्टर बोला — "किसी भी आदमी को जो मरीज़ को देखने जा रहा हो बेवकूफ की तरह से नहीं जाना चाहिये। जैसे ही तुम अन्दर घुसो तो तुम्हें उसके घर में चारों तरफ निगाह डालनी चाहिये – जैसे पलंग के नीचे अगर डबलरोटी के टुकड़े पड़े हों तो समझो कि उसने डबलरोटी खायी है। मैंने देखा कि उसके पलंग के नीचे दो तीन अंगूर की डंडियॉ पड़ी है इसी से मुझे पता चल गया कि उसने अंगूर खाये हैं।"

यह तरकीब जान कर डाक्टर का असिस्टैन्ट तो बहुत ही खुश हुआ। अगले दिन शहर में कई मरीजों को देखना था सो डाक्टर ने कुछ मरीज देखने लिये अपने असिस्टैन्ट को भेज दिया।

दूसरे मरीजों को देखने के साथ साथ वह उस मरीज के घर भी गया जिसने पहले दिन अंगूर खाये थे। उसने सोचा कि वह भी अपने मालिक की तरह से उसको अपनी होशियारी बतायेगा कि वह भी एक होशियार डाक्टर है।

उसने मास्टर की तरह से उसके पलंग के चारों तरफ नीचे ऊपर देखा तो उसको भूसे के कुछ तिनके दिखायी दे गये तो उसने गुस्से से ज़ोर से कहा — "तुम समझते क्यों नहीं हो कि तुमको कुछ नहीं खाना चाहिये।"

मरीज बोला — "सर। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने कुछ नहीं खाया है कल से मैंने एक बूँद पानी भी नहीं पिया है।"

असिस्टैन्ट बोला — "नहीं सर नहीं। तुमने भूसा खाया है क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे पलंग के नीचे भूसे के कुछ तिनके अभी भी पड़े हुए हैं।"

"क्या? भूसा? क्या आप मुझे अपने जैसा गधा समझते हो?"

यह सुन कर असिस्टैन्ट बहुत शर्मा गया। वह एक मरीज के हाथों बेवकूफ बन गया था जो वह था।

98 फ़िराज़ानू की पत्नी और रानी[78]

सिसिली की लोक कथाओं में दो चरित्र ऐसे हैं जिनकी कहानियॉ ऐसे मजाकों से भरी हुई हैं। ये दो चरित्र है फ़िराज़ानू और जियूफा। फ़िराज़ानू तो एक रोजमर्रा का हॅसोड़ है और जियूफ़ा एक ऐसा चरित्र है जैसा दूसरी लोक कथाओं में भी पाया जाता है। फ़िराज़ानू की ये लोक कथाऐं जियोसैप्पै पित्रे की कहानियों से ली गयी हैं।

फ़िराज़ानू पलेरमो में एक राजकुमार का निजी नौकर था जिससे राजकुमार भी कभी कभी मजाक कर लेता था। पर क्योंकि फ़िराज़ानू अपनी इन बेवकूफियों के लिये मशहूर था सो राजकुमार उसको अनदेखा कर देता था।

एक बार रानी पलेरमो आयी तो उसने फ़िराज़ानू से मिलना चाहा सो फ़िराज़ानू रानी के पास गया।

रानी ने उससे पूछा — "क्या तुम्हारी शादी हो गयी है या तुम अभी तक कुॅआरे ही हो।"

"मेरी शादी हो गयी है योर मैजेस्टी।"

"मैं तुम्हारी पत्नी से मिलना चाहती हूॅ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है योर मैजेस्टी। वह तो सुन नहीं सकती।" असल में फ़िराज़ानू ने यह बात अपने मन से ही बना कर कह दी थी क्योंकि उसकी पत्नी तो ठीक थी।

[78] Firrazannu's Wife and the Queen. Tale No 98. By Giuseppe Pitre. (Tale No 156)

रानी बोली — "कोई बात नहीं मैं उससे ज़ोर से बोल लूँगी। तुम बस जाओ और अपनी पत्नी को ले कर आओ।"

फ़िराज़ानू अपने घर गया और अपनी पत्नी से बोला — "फ़ैनी। रानी जी तुमसे मिलना चाहती हैं। पर तुम ध्यान रखना कि वह ज़रा ऊँचा सुनती हैं। जब तुम उनसे बात करो तो अपनी आवाज थोड़ी ऊँची कर के बोलना।"

उसकी पत्नी बोली — "ठीक है। चलो चलें।"

जब वे महल में पहुँचे तो फ़िराज़ानू की पत्नी ने ऊँची आवाज में रानी जी से कहा — "योर मैजेस्टी मैं आपके पैरों में हूँ।"

रानी ने सोचा कि "यह क्योंकि ठीक से सुन नहीं सकती इसलिये यह मुझसे इतने ऊँचे सुर में बात कर रही है इसको लगता है कि जैसे इसको सुनायी नहीं देता वैसे सबको ही सुनायी नहीं देता।"

रानी ने भी ज़ोर से कहा — "गुड डे मेरी दोस्त। कैसी हो।"

फ़िराज़ानू की पत्नी और ज़ोर से बोली — "मैं बहुत अच्छी हूँ योर मैजेस्टी।"

रानी ने भी अपनी आवाज ऊँची की ताकि वह ठीक से सुन सके। उधर फ़ैनी भी अपनी आवाज ऊँची बढ़ाती रही तो ऐसा लगने लगा जैसे वे दोनों लड़ रही हों।

अब फ़िराज़ानू से न रहा गया और वह हँस पड़ा। उसकी हँसी से रानी को उसका यह मजाक समझ में आ गया। और अगर फ़िराज़ानू वहाँ से भाग नहीं जाता तो वह शायद उसको वहीं

गिरफ्तार करवा देती। और फिर यह मजाक पता नहीं कहॉ जा कर खत्म होता।

X X X X X X X X X

एक और मौके पर वायसरौय ने एक बहुत बड़ी दावत दी जिसके लिये उनको कई तीतरों[79] की जरूरत थी। फ़िराज़ानू बोला कि वह वायसरौय को कितने भी तीतर ला कर दे देगा। हालॉकि वे वहॉ बहुत कम पाये जाते थे।

वायसरौय ने कहा कि उनका काम **20** तीतरों से चल जायेगा। फ़िराज़ानू ने **20** कुबड़े इकट्ठे किये और उनको वायसरौय की रसोई में ले जा कर दे दिया और वायसरौय को खबर भिजवा दी कि उसने अपना काम कर दिया है।

वायसरौय ने उन्हें देखने की इच्छा प्रगट की तो फ़िराज़ानू उन सबको वायसरौय के घर ले गया। जब वे सब अन्दर चले गये तो फ़िराज़ानू बोला — "ये रहे।"

वायसरौय बोला — "कहॉ?"

फ़िराज़ानू बोला — "ये यहॉ। आपने "पिरनीकानी" लाने के लिये कहा था सो मैं ले आया।"

[79] Translated for the word "Partridge". In fact in Italian language The word "Pirnicani" is used which has two meanings – partridge and humpback, so Firrazannu took the other meaing of the word and brought humpbacks instead of parridges.

यह देख कर वायसरौय बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा उसने हर कुबड़े को कुछ इनाम दे कर विदा किया।

X X X X X X X

एक और मौके पर राजकुमार खाना खा रहा था। फ़िराज़ानू ने बहुत सारे गधे इकट्ठे किये और उसकी खिड़की के नीचे ला कर उनको इतनी ज़ोर से बुलवाया कि राजकुमार तो बेचारा चौंक ही पड़ा।

X X X X X X X

एक बार एक बहुत ही अमीर राजकुमार था जिसको बहुत सारे किराये वसूल करने पड़ते थे पर वह कर नहीं पाता था सो उसने सोचा कि फ़िराज़ानू को इस काम पर लगाया जाये।

उसने उससे कहा — "लो मेरी यह चिट्ठी लो और जा कर मेरा किराया वसूल कर लाओ। मैं उसका **20** परसैन्ट तुमको दे दूँगा।"

सो वह उन उन जगहों पर गया जहॉ जहॉ से उसको किराया इकट्ठा करना था। उसने सारे कर्जदारों को वहॉ बुलाया।

तुम क्या सोचते हो कि उसने क्या किया होगा।

उसने उनसे कहा कि वे अपने किराये का उसका **20** परसैन्ट हिस्सा उसको दे दें – इससे ज़्यादा नहीं। बाकी का बचा पैसा वे

अगले साल राजकुमार को दे दें। और उनको वापस भेज दिया और फिर राजकुमार के पास गया।

राजकुमार ने पूछा — "क्या तुमने सारा किराया वसूल कर लिया।"

फ़िराज़ानू बोला — "आप किस किराये को इकट्ठा करने की बात कर रहे हैं। मुझे तो अपना हिस्सा ही इकट्ठा करने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ी।"

"यह तुम क्या कह रहे हो। तुम्हारा कौन सा हिस्सा।"

"मै ठीक कह रहा हूँ मुझे अपना हिस्सा यानी **20** परसैन्ट ही इकट्ठा करने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ी। आपका हिस्सा तो आपको अगले साल ही मिलेगा।"

यह सुन कर राजकुमार हॅस पड़ा और फ़िराज़ानू खुश खुश सन्तुष्ट हो कर अपने घर चला गया।

X X X X X X X

एक बार राजकुमार को शिकार के लिये जाना था तो उसने फ़िराज़ानू को बुला कर उससे कहा कि जब उसे फुरसत हो वह राजकुमारी से कह दे कि वह शाम का खाना उसके साथ नहीं खायेगा।

अब फ़िराज़ानू को एक हफ्ते तक इस सन्देश को राजकुमारी से कहने का समय नहीं मिला। एक हफ्ते बाद ही वह राजकुमार का

यह सन्देश राजकुमारी को दे सका। पहले मौके पर राजकुमारी ने आधी रात तक राजकुमार का बड़ी उत्सुकता से इन्तजार किया।

दूसरे मौके पर राजकुमारी कहीं चली गयी। और जब राजकुमार लौटा तो देखा कि उसकी पत्नी तो बाहर गयी हुई है। घर में खाना भी नहीं है।

उसने फ़िराज़ानू को बुला कर बहुत डॉटा कि उसने समय पर राजकुमारी को यह बात क्यों नहीं कही तो उसने यह कह कर अपने आपको बचा लिया कि राजकुमार ने तो उससे यही कहा था यह सन्देश जब उसे सुविधा हो तभी कहे सो उसने उसका सन्देश जब उसकी सुविधा हुई तब कह दिया।[80]

X X X X X X X

एक बार वायसरौय फ़िराज़ानू के ऐसे मजाकों से बहुत तंग आ गया तो उसको उसने मुरियाली भेज दिया। जब फ़िराज़ानू वहॉ रहते रहते थक गया तो उसने शहर की मिट्टी से एक गाड़ी भरी और उस पर बैठ कर पलेरमो चल दिया।

वायसरौय ने जैसे ही उसको देखा तो उसको तुरन्त ही गिरफ्तार कर लिया कि वह बिना वायसरौय की मर्जी के मुरियाली से आया

[80] This incident reminds us the story of Straparola (XIII day, story no 6) where a master sends his servant to buy some meat and sircastically said to him, “Go and stay a year.” Servant obeyed as the latter command.

कैसे। पर फ़िराज़ानू ने कहा कि ऐसा कर के उसने कोई शाही नियम नहीं तोड़ा वह अभी भी मुरियाली की मिट्टी पर है।

X X X X X X X

एक बार राजकुमार ने फ़िराज़ानू को सीख देनी चाही ताकि वह उसकी इस मजाक की आदत को रोक सके तो उसने किले के कमान्डर को कहा कि एक दिन वह अपने एक नौकर को एक चिट्ठी ले कर भेजेगा। सो जो कुछ उस चिट्ठी में लिखा हो वह उसके साथ कर दे।

एक हफ्ते बाद बाद उसने फ़िराज़ानू को बुलाया और उसको एक चिट्ठी दे कर कहा कि लो यह चिट्ठी लो और इसे किले के कमान्डर को दे देना। और जो इसमें लिखा है उसे तुम्हें देने के लिये कहना।

फ़िराज़ानू ने वह चिट्ठी ली और उसे अपने हाथों में उलटता पलटता ले चला। उसे कुछ शक हो गया था सो जाते समय जब वह एक दूसरे नौकर से मिला तो उसने वह चिट्ठी उस नौकर को दी और उसे किले के कमान्डर के पास भेज दिया और कहा — "लो यह चिट्ठी किले के कमान्डर को देना और उससे कहना कि इसमें जो कुछ भी तुम्हें देने के लिये लिखा है वह तुम्हें दे दे।" जब तुम वापस आओगे तब हम वाइन पियेंगे।"

नौकर चला गया और वह चिट्ठी ले जा कर कमान्डर को दे दी। उसने चिट्ठी खोल कर पढ़ी। उसमें लिखा था — "कमान्डर। यह मेरा नौकर आ रहा है जो एक बहुत बड़ा गधा है। इसको **100** कोड़े मारना और फिर इसको वापस भेज देना।"

राजकुमार का यह हुक्म पालन किया गया और उस चिट्ठी को ले जाने वाले को **100** कोड़े मारे गये। वह बेचारा **100** कोड़े खाने के बाद अधमरा हो कर लौटा।

जब फ़िराज़ानू ने यह सुना तो उसकी तो हॅसते हॅसते जान ही निकल गयी। वह हॅसते हॅसते बोला — "मेरे भाई। मेरे लिये और तुम्हारे लिये। तुम मुझसे ज़्यादा अच्छे हो।"[81]

फ़िराज़ानू के बारे में कुछ और भी कहानियॉ प्रचलित हैं पर वे सब यहॉ लिखने के लायक नहीं हैं। इसलिये अब हम जियूफा की कहानियों की तरफ चलते हैं। जियूफा इटली के अलग अलग प्रान्तों में अलग अलग नामों से मशहूर है।

[81] This story has been written by Laura Gonzenbach also. (Tale No 75)

99 जियूफ़ा और प्लास्टर की मूर्ति[82]

जियूफ़ा इटली के अलग अलग प्रान्तों में अलग अलग नामों से मशहूर है। जैसे त्रपानी में जियूका, सिसिली के टापू पर जियूक्सा, अकी में जियूवाली और मार्चेस टस्कैनी और रोम में जियूक्का। यहॉ उसकी कुछ कहानियॉ दी जाती हैं।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब स्त्री थी। उसके एक बेटा था जिसका नाम था जियूफ़ा जो बहुत ही बेवकूफ आलसी और चालाक था। उसकी मॉ के पास एक कपड़ा था। एक दिन उसने उससे कहा — "ले बेटा यह कपड़ा ले जा और इसे किसी दूसरे दूर के शहर में बेच आ। और देख कर उसी आदमी को बेचना जो बहुत कम बात करता हो।"

जियूफ़ा ने अपने कन्धे पर कपड़ा डाला और उसे बेचने चल दिया। जब वह शहर आया तो उसने चिल्लाना शुरू किया — "कौन यह कपड़ा खरीदना चाहता है। किसी को यह कपड़ा खरीदना है।"

लोग उसके पास आये और उस कपड़े के बारे में बहुत सारी बातें करने लगे। कोई कहता कि यह कपड़ा बहुत मोटा है। कोई दूसरा कहता कि यह कपड़ा बहुत मॅहगा है। जियूफ़ा ने सोचा कि वे सब बहुत बात कर रहे थे सो वह उनको कपड़ा नहीं बेचेगा।

[82] Giuffa and the Plaster Statue. Tale No 99.

सो वह वहॉ से आगे चल दिया। कुछ दूर चल कर वह एक ऑगन में आ पहुँचा जहॉ केवल एक प्लास्टर की मूर्ति खड़ी थी। जियूफ़ा ने उससे भी पूछा कि क्या वह कपड़ा खरीदना चाहती थी। पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

जियूफ़ा ने देखा कि यह मूर्ति तो बोल ही नहीं रही है सो इसी को यह कपड़ा बेचना ठीक रहेगा। सो उसने कपड़ा अपने कन्धे से उतार कर उस मूर्ति पर टॉग दिया। और बोला — "मैं कल आऊँगा अपने पैसे लेने के लिये।"

अगले दिन वह वहॉ उससे अपने पैसे लेने गया तो वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो कपड़ा भी नहीं है। उसने मूर्ति से अपने कपड़े के पैसे मॉगे तो मूर्ति फिर कुछ नहीं बोली। जियूफ़ा को गुस्सा आया तो वह बोला — "अगर तूने मुझे मेरे कपड़े के पैसे नहीं दिये तो मैं तुझे बताता हूँ कि मैं कौन हूँ।"

उसने पास में पड़ा एक मोटा सा डंडा उठाया और उससे उसकी पिटायी शुरू कर दी। वह उसे तब तक पीटता रहा जब तक वह मूर्ति टूट नहीं गयी। लो उसके अन्दर तो उसको एक घड़ा भर कर पैसे मिले।

उसने वह पैसे अपने थैले में डाले और घर चला गया। घर पहुँच कर उसने अपनी मॉ से कहा कि वह एक न बोलने वाले को कल कपड़ा बेच कर आया था उसने मुझे आज पैसे नहीं दिये तो

मैंने उसे एक डंडे से मार दिया और तब उससे पैसे ले कर मैं घर आया हूँ।

उसकी माँ अक्लमन्द थी। उसने उससे कहा कि तू इस बात को किसी को बताना नहीं। हम लोग इस पैसे को धीरे धीरे खर्च करेंगे।

X X X X X X X

एक और समय जियूफ़ा की माँ बोली — "बेटा मेरे पास यह एक कपड़ा है इसे रंगवाना है। तू इसे ले जा और इसे कपड़ा रंगने वाले के पास छोड़ देना जो काला और हरा रंगता है।"

जियूफ़ा ने उस कपड़े को कन्धे पर डाला और चला गया। रास्ते में उसको एक बहुत बड़ा सुन्दर साँप दिखायी दे गया। क्योंकि वह हरा था इसलिये वह उससे बोला — "मेरी माँ ने मुझे यह कपड़ा दिया है। वह इसे रंगवाना चाहती है। मैं इसे लेने के लिये कल आऊँगा।"

कह कर उसने वह कपड़ा वहीं छोड़ा और चला गया। वह घर पहुँचा और अपनी माँ को बताया कि वह क्या कर के आया है। सुन कर उसकी माँ तो अपने बाल ही नोचने बैठ गयी। वह बोली — "ओ बेशर्म। तू इस तरह से मुझे कैसे बर्बाद कर सकता हू। मैं अभी जल्दी से जाती हूँ और देख कर आती हूँ कि वह कपड़ा अभी वहाँ है या नहीं।"

जियूफ़ा वहाँ गया पर कपड़ा तो तब तक गायब हो गया था।

लौरा गौन्ज़ैनबाक की लिखी हुई एक ऐसी ही कहानी में[83] उसको कपड़ा मिल जाता है और वह उसे ले कर फिर से कपड़ा रंगने वाले के पास जाता है। रास्ते में वह एक मैदान में पड़े पत्थरों के ढेर पर सुस्ताने के लिये बैठ जाता है। एक बहुत बड़ा सा गिरगिट पत्थरों में से निकलता है तो जियूफ़ा उसी को कपड़ा रंगने वाला समझ लेता है तो कपड़ा वहीं पत्थरों पर छोड़ कर घर वापस आ जाता है।

अब यह तो साफ है कि उसकी मॉ उसे वह कपड़ा लाने के लिये फिर से वापस भेजती है पर इस बार वहॉ तो कपड़ा भी गायब हो जाता है और गिरगिट भी। जियूफ़ा चिल्लाता है — "ओ कपड़ा रंगने वाले। अगर तुम मेरा कपड़ा नहीं दोगे तो मैं तुम्हारा घर तोड़ दूँगा।" यह कह कर वह पत्थरों के ढेर से पत्थर हटाने लगता है और वहॉ उसको पत्थरों के नीचे एक पैसों का एक बर्तन दबा मिल जाता है। वह उसको अपनी मॉ के पास अपने घर ले जाता है। उसकी मॉ उसे खाना खिलाती है और फिर सोने के लिये भेज देती है और पैसों के बर्तन को सीढ़ियों के नीचे दबा देती है।

तब वह अपने ऐप्रन में अंजीर और किशमिश भरती है। ऊपर छत पर जाती है और चिमनी से वे अंजीरें और किशमिश बिस्तर पए लेटे हुए जियूफ़ा के मुँह में फेंकती है। जियूफ़ा तो यह देख कर बहुत खुश हो जाता है और उन्हें पेट भर कर खाता है। अगली सुबह वह अपनी मॉ से कहता है कि कल रात बच्चा क्राइस्ट चिमनी से उसके लिये अंजीर और किशमिश फेंक रहा था। जियूफ़ा पैसों के बर्तन की बात छिपा नहीं सकता और वह उसके बारे में सबसे कह देता है और अन्त में उस पर इलजाम लगा कर उसको जज के सामने लाया जाता है।

जज के लोग जियूफ़ा की मॉ के पास इस बात को पक्का करने के लिये जाते हैं। वे उससे कहते है "तुम्हारा बेटा हर किसी से यह कह रहा है कि आपके पास एक बड़ा बर्तन भर कर पैसे हैं जो उसे कहीं से मिल गये हैं। क्या आपको मालूम है कि उस पैसों के बर्तन को राजा के पास जमा करवा देना चाहिये।"

मॉ मना करती है कि उसको किसी पैसे के बारे में कुछ नहीं मालूम और जियूफ़ा तो अक्सर ही बेवकूफी की कहानियॉ कहता रहता है। यह सुन कर जियूफ़ा बोला — "पर मॉ क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं तुम्हारे लिये एक बर्तन ले कर आया था और उस रात बच्चा क्राइस्ट ने चिमनी में से अंजीर और किशमिश की बारिश मेरे मुँह में की थी।"

[83] Laura Gonzenbach. Giufa. (Tale No 37)

मॉ तुरन्त ही बोली — "देखा आपने। यह कितना बेवकूफ है। इसको तो यही नहीं पता कि यह क्या कह रहा है।" यह सुन कर जज के लोग यह कहते हुए चले गये कि यह लड़का तो वाकई बिल्कुल ही बेवकूफ है।

100 जियूफ़ा और जज[84]

एक बार की बात है कि जियूफ़ा कुछ पत्ते इकट्ठा करने के लिये जंगल गया। जब तक वह लौटा तब तक रात हो चुकी थी और चॉद उग आया था। जियूफ़ा एक पत्थर पर बैठ गया और चॉद का बादलों में से निकलना और फिर उनमें छिपना देखता रहा।

जब वह बाहर निकल आता था तो वह बोलता था कि "वह निकल आया वह निकल आया" और जब वह छिप जाता तो वह कहता "वह छिप गया वह छिप गया"।

वहीं उसके पास में कुछ चोर एक बछड़े की खाल साफ कर रहे थे जिसे वे अभी अभी चुरा कर लाये थे। जब उन्होंने सुना कि "वह निकल आया" और "वह छिप गया" तो उनको लगा कि अदालत का कोई औफीसर वहॉ आ गया है और वह उन्हीं के बारे में बात कर रहा है सो उन्होंने मॉस तो वहीं छोड़ा और वहॉ से भाग गये।

जब जियूफ़ा ने देखा कि चोर भाग गये तो वह देखने गया कि वहॉ क्या था। उसने देखा कि वहॉ तो आधा खाल निकाला हुआ बछड़ा पड़ा था। उसने अपना चाकू निकाला और उससे उसमें से जितना मॉस काटा जा सकता था काट कर अपने थैले में रख लिया और बाकी वहीं छोड़ कर अपने घर चला गया।

---

[84] Giufa and the Judge. Tale No 100.

जब वह घर पहुँचा तो माँ ने पूछा कि वह इतनी देर से क्यों आया तो उसने कहा कि वह उसके लिये कुछ माँस ला रहा था। माँ ने कहा कि अगले दिन वह उस माँस को बेच देगी और उससे आये पैसे वह उसके लिये रख देगी। अगले दिन माँ शहर गयी और वह माँस बेच कर आ गयी।

शाम को जब जियूफ़ा घर लौटा तो उसने माँ से पूछा कि क्या वह माँस बेच आयी। माँ बोली "हाँ मैं माँस बेच आयी और उसे मक्खियों को उधार पर बेच आयी।"

"वे मेरा पैसा कब देंगी।"

"जब उनके पास होगा।"

एक हफ्ता गुजर गया और मक्खियाँ पैसे ले कर नहीं आयीं। सो जियूफ़ा जज के पास गया और बोला — "जज साहब। मुझे न्याय चाहिये। मैंने मक्खियों को माँस उधार पर बेचा था पर उन्होंने मेरा पैसा अभी तक नहीं दिया है।"

जज बोला — "मैं उनको यह सजा देता हूँ कि तुम उन्हें जहाँ देखो वहीं मार सकते हो।"

इत्तफाक से तभी एक मक्खी जज की नाक पर बैठ गयी। जियूफ़ा ने उनकी नाक पर इतनी ज़ोर से घूँसा मारा कि जज साहब का तो सिर ही फूट गया। बस फिर जियूफ़ा का क्या हुआ होगा तुम खुद सोच सकते हो।

यह मक्खी वाली घटना एक अकेली कहानी के रूप में भी पायी जाती है जिसे लोग पलेरमो में कहते सुनते हैं — "मक्खियों ने जियूफ़ा को घेर लिया और काटा। तो वह जज साहब के पास गया और उनसे शिकायत की तो जज साहब हॅस पड़े और बोले — "ठीक है मैं मक्खियों के लिये यह सजा देता हूॅ कि जहॉ भी तुम कोई मक्खी देखो तो उसे मार सकते हो। जब जज साहब यह कह रहे थे कि एक मक्खी उनकी नाक पर आ कर बैठ गयी। जियूफ़ा ने उस मक्खी को इतनी ज़ोर से मारा कि जज साहब की नाक ही टूट गयी।"

101 छोटा औमलैट[85]

इटली में इस कहानी के कई रूप पाये जाते हैं। यह कहानी मूल रूप से ओरिऐन्ट से आती है और "पंचतन्त्र" में पायी जाती है। एक राजा अपने पालतू बन्दर से कहता है कि वह जब वह सो रहा हो तब वह उस पर पहरा दे। राजा सो गया तो बन्दर उसका पहरा देने लगा। एक मक्खी राजा के सिर पर आ कर बैठ जाती है पर बन्दर उसको वहॉ से हटा नहीं पाता है। सो वह राजा की तलवार उठाता है और उससे उस मक्खी को मार देता है – और साथ में राजा को भी।

एक दूसरी ऐसी ही कहानी बुद्ध जी के मुॅह से कहलवायी गयी है। एक मच्छर एक गंजे बढ़ई को काट लेता है। उसको भगाने के लिये वह अपने बेटे को बुलाता है। बेटा एक कुल्हाड़ी ले कर आता है और उस छोटे से कीड़े पर निशाना लगाता है। पर कीड़े को मारते समय अपने पिता के सिर के भी दो टुकड़े कर देता है।

इसके यूरोप के कुछ लोकप्रिय रूप इटली में भी पाये जाते हैं। वे सिसिली के अलावा फ्लोरैन्स लैघोर्न और वेनिस में कहे सुने जाते हैं। इसका पहला रूप है — "छोटा औमलैट"।

एक बार की बात है कि एक छोटी स्त्री थी जिसके पास एक छोटा कमरा था और एक छोटी मुर्गी थी। मुर्गी ने एक अंडा दिया तो छोटी स्त्री ने उसे ले जा कर उसका एक छोटा सा औमलैट बनाया और उसको ठंडा होने के लिये खिड़की में रख दिया।

कि तभी एक मक्खी आयी और उसे खा गयी। तुम सोच सकते हो कि वह औमलैट कैसा रहा होगा। वह छोटी स्त्री मजिस्ट्रेट के पास गयी और उसको जा कर अपनी कहानी सुनायी। मजिस्ट्रेट ने उसे एक डंडा दिया और कहा कि जहॉ भी वह उस मक्खी को

[85] The Little Omelet. Tale No 101.kI naak

देखे उसे इस डंडे से मार दे। उसी समय एक मक्खी मजिस्ट्रेट की नाक पर बैठ गयी। स्त्री ने सोचा कि शायद यही वह मक्खी होगी जिसने उसका औमलैट खाया है सो उसने अपना डंडा उठाया और मजिस्ट्रेट की नाक पर दे मारा और उसकी नाक तोड़ दी।

लैघोर्न और वेनिस में भी यह कहानी ऐसे ही कही जाती है। इसके साहित्यिक रूप भी कई सारे हैं चार पॉच रूप तो इसके इटली में ही पाये जाते हैं। कुछ फ्रांस में भी हैं। इसका सबसे ज़्यादा लोकप्रिय रूप ला फौन्टेन की लिखी हुई कहानी "भालू और शौकिया माली" है।[86]

एक बार जियूफ़ा ने अपने उठने से पहले ही एक सीटी की आवाज सुनी तो उसने अपनी मॉ से पूछा कि वहॉ से कौन जा रहा था। वह बोली कि वह सुबह को गाने वाला था।

अब यह आवाज रोज ही आती तो एक दिन इस आवाज से तंग हो कर जियूफ़ा बाहर निकला और उस आदमी को मार दिया जो रोज यह सीटी की आवाज निकाला करता था। और अपनी मॉ से आ कर बोला कि आज उसने सुबह गाने वाले को मार दिया है।

उसकी मॉ बाहर गयी उस आदमी की लाश ले कर आयी और उसे कुॅए में फेंक दिया जो सूखा पड़ा रहता था। उसके बाद उसे याद आया कि उसके पास तो एक मेमना था। सो उसने उसको मारा और उसी कुॅए में फेंक दिया।

इस बीच सुबह को गाने वाले के परिवार को पता चला कि सुबह गाने वाले की हत्या हो गयी है सो वे अपनी शिकायत ले कर जज के पास गये। फिर वहॉ से सारे लोग जॉच पड़ताल के लिये जियूफ़ा के घर गये।

जज ने जियूफ़ा से पूछा — "तुमने लाश कहॉ फेंकी।"

बेवकूफ जियूफ़ा ने जवाब दिया — "मैंने उसे कुॅए में फेंक दिया।"

तो उन्होंने जियूफ़ा की कमर में रस्सी बॉधी और उसे कुॅए में नीचे उतारा। जब वह कुॅए की तली में पहुॅचा तो वह हाथ से टटोल कर लाश को महसूस करने की कोशिश करने लगा।

---

[86] La Fontaine. "The Bear and the Amateur Gardener". Book VIII. 10.

पर वहॉ उसके हाथ आयी मेमने की ऊन। वह सुबह गाने वाले के बेटे से चिल्ला कर बोला — "क्या तुम्हारे पिता के ऊपर ऊन थी?"

"नहीं मेरे पिता के ऊपर तो ऊन नहीं थी।"

"इसके ऊपर तो ऊन है इसका मतलब यह है कि यह तुम्हारे पिता नहीं हैं।"

फिर उसने मेमने की पूँछ छुई और उसके बेटे से पूछा — "क्या तुम्हारे पिता के पूँछ थी।"

"नहीं मेरे पिता के तो पूँछ भी नहीं थी।"

"तो इसका मतलब है कि यह भी तुम्हारे पिता नहीं हैं।"

उसके बाद उसके हाथ में आये मेमने के चार पैर तो उसने फिर पूछा — "क्या तुम्हारे पिता के चार पैर थे?"

"नहीं मेरे पिता के तो चार पैर भी नहीं थे।"

"इसके तो चार पैर हैं इसका मतलब यह भी तुम्हारे पिता नहीं हैं।"

और उसके बाद उसके हाथ में आया मेमने का सिर और उसके दो सींग। उसने फिर पूछा — "क्या तुम्हारे पिता के दो सींग थे?"

"नहीं मेरे पिता के तो सींग ही नहीं थे।"

"तो इसके तो दो सींग है इसका मतलब है कि यह भी तुम्हारे पिता नहीं हैं।"

तब जज बोला — "जियूफ़ा उसे ऊपर ले कर आओ चाहे उसके ऊन हो या सींग हों।"

सो उन्होंने जियूफ़ा को ऊपर खींच लिया। उसके कन्धों पर एक मेमना था। जब जज ने देखा कि वह तो सचमुच एक मेमना ही था तो उसने जियूफ़ा को आजाद कर दिया।

इस कहानी के एक दूसरे रूप में जियूफ़ा की मॉ उसको बन्दूक ले कर एक कार्डिनल मारने के लिये कहती है। जियूफ़ा पूछता है कि कार्डिनल क्या होता है तो मॉ कहती है जिसके लाल सिर होता है। जियूफ़ा जा कर एक कार्डिनल को मार देता है और उसे घर ले आता है। बाकी की कहानी ऊपर जैसी कहानी ही है।

एक दूसरे रूप में जियूफ़ा की मॉ के पास एक मुर्गा है जिसे वह एक दिन पकाती है और जियूफ़ा जिसने मुर्गा पहले कभी खाया नहीं होता तो उसे मुर्गा बहुत अच्छा लगता है। वह अपनी मॉ से पूछता कि वह क्या है तो उसकी मॉ कहती है कि यह रात को गाने वाला है। एक रात बेचारा जियूफ़ा दरवाजे के पीछे खड़े एक आदमी को गाते देख लेता है तो उसे मार देता है और उसे घर ला कर अपनी मॉ से उसे पकाने के लिये कहता है। बाकी की कहानी पहली कहानी जैसी ही है।

102 खाओ मेरे कपड़ों[87]

जियूफ़ा क्योंकि काफी बेवकूफ था इसलिये न तो उससे कोई बात ही करता था और न कोई उसे अपने पास ही बिठाता था। उसको कोई अपने घर भी नहीं बुलाता था और न खाने को ही पूछता था।

एक बार जियूफ़ा एक फार्महाउस पर गया तो किसानों ने उसे देखा कि वह तो फटे कपड़ों में है और बहुत गरीब है तो उन्होंने उसके पास कुछ कुत्ते छोड़ दिये और उसको डरा कर वहॉ से भगा दिया।

जब उसकी मॉ ने यह सुना तो उसके लिये एक सुन्दर ब्रीचेज़ बनवा दीं एक बढ़िया कोट खरीद दिया और एक मखमल की जैकेट दिलवा दी। इन कपड़ों में जियूफ़ा एक ओवरसीयर सा लग रहा था। इन्हीं कपड़ों में वह फिर से उसी फार्महाउस पर जा पहुॅचा।

तब देखने वाली बात थी कि उन लोगों ने उसका कितने अच्छे से स्वागत किया। उन्होंने उसे खाना खाने के लिये बुलाया। जब वह मेज पर बैठा तो सब लोग उस पर ध्यान दे रहे थे।

जियूफ़ा एक हाथ से खाना अपने मुॅह में डाल रहा था और दूसरे हाथ से अपनी जेबें भर रहा था और बाकी बचे खाने से कह रहा था "आओ मेरे कपड़ों इसे तुम खालो क्योंकि यहॉ तो तुम ही बुलाये गये हो मैं नहीं।"

---

[87] Eat My Clothes. Tale No 102.

इस कहानी के बारे में यह एक बड़ी मजेदार बात है कि इसे केवल दान्ते[88] ने ही नहीं कहा है बल्कि इसके ऊपर सरकाम्वी ने भी एक उपन्यास[89] लिखा है।

जियूफ़ा को घर में अकेले छोड़ना खतरे से खाली नहीं था। एक बार उसकी मॉ चर्च गयी तो उसने उससे कहा कि वह अपनी छोटी बहिन को थोड़ा सा दलिया बना कर खिला दे। जियूफ़ा ने एक बहुत बड़ा बर्तन भर कर दलिया बनाया और उस बेचारी बच्ची को सारा खिला दिया और उसने गर्म होने की वजह से बच्ची का मुॅह भी जला दिया जिससे वह मर गयी।

एक और मौके पर उसकी मॉ जब घर से बाहर गयी तो मुर्गी को दाना खिलाने लिये कह गयी जो अपने अंडों पर बैठी हुई थी और खाना खिलाने के बाद फिर से उसे अंडों पर बिठाने के लिये कह गयी ताकि उसके अंडे ठंडे न पड़ें। पर जियूफ़ा ने उसके मुॅह में इतना खाना ठूॅस दिया कि वह बेचारी मर ही गयी। और फिर वह खुद मुर्गी के अंडों पर बैठ गया जब तक उसकी मॉ आयी।

एक बार जियूफ़ा की मॉ मास सुनने गयी तो उसने जियूफ़ा से कहा कि दरवाजा बन्द कर ले।[90] पर जियूफ़ा ने समझा कि उसकी मॉ ने दरवाजा निकाल लेने के लिये कहा है सो वह दरवाजा निकाल कर चर्च ले गया अपनी मॉ के सामने डाल दिया और बोला — "लो यह रहा तुम्हारा दरवाजा।"

इस कहानी को सिसिली में कहे सुने जाने वाले रूपों में जियूफ़ा केवल दरवाजा उसके कब्जों से तोड़ लेता है और अपनी मॉ के पास ले जाता है जो चर्च में बैठी हुई है। इटली में कहे सुने जाने वाले दूसरे रूपों में बूबी दरवाजा अपने आप ही ले जाता है और फिर रात को पेड़ पर ले जाता है। डाकू लोग आते हैं और अपनी चीज़ों का बॅटवारा करते हैं तब बूबी दरवाजा नीचे गिरा देता है। डाकू डर जाते हैं और वहॉ से भाग जाते हैं। बूबी उनके छोड़े हुए वह सारे पैसे ले कर घर आ जाता है।

जियूफ़ा की और कहानियॉ लौरा गौन्ज़ेनबाक की लिखी हुए नम्बर **37** की कहानी में मिलती हैं।

---

[88] Dante. Dante Aligheiri. (c 1265-1321) A Medieval Italian poet and philosopher. He wrote "Inferno" (1314) and "Divine Comedy" just before he died in 1321. He died from Malaria.

[89] Sercambi also wrote one novel about this.

[90] In English it is called "Pull the door to." But Giufa took its meaning the other way, he pulled it, pulled until it came out of the frame.

103 जियूफ़ा के कारनामे[91]

इस तरह तुमने देखा कि जियूफ़ा इटली देश की लोक कथाओं का एक बहुत ही बड़ा और लोकप्रिय हीरो है। इसकी छोटी छोटी बहुत सारी लोक कथाऐं मशहूर हैं। इसकी कुछ लोक कथाऐं लौरा गौन्जैनबाक ने लिखी हैं जिनको हम यहाँ इस संग्रह को पूरा करने लिये दे रहे हैं।

1 जियूफ़ा और पादरी

जब जियूफ़ा ने अपनी छोटी बहिन को गरम पानी में उबाल कर मार दिया तो उसकी माँ ने उसको घर से बाहर निकाल दिया। घर से बाहर निकाले जाने पर वह एक पादरी के पास चला गया और उससे उसके यहाँ काम करने की इच्छा प्रगट की।

पादरी ने पूछा कि तुम कितनी तनख्वाह लोगे। जियूफ़ा बोला — "एक अंडा रोज का और उतनी डबलरोटी जितनी मैं उसके साथ खा सकूँ। और आप मुझे तब तक काम पर रखेंगे जब तक उल्लू आइवी[92] पर बोलता है।"

पादरी उसकी इस तनख्वाह से सन्तुष्ट हो गया। उसको लगा कि उसको इतना सस्ता नौकर कहीं नहीं मिलेगा सो उसने उसको अगली सुबह से काम पर आने के लिये बोल दिया।

---

[91] Giufa's Exploits. Tale No 103. Given in Laura Gonzenbach's collection also.
[We have given Giufa's some tales in "Italy Ki Lok Kathayen-8" too by Sushma Gupta.]

[92] Ivy is a kind of creeper.

सो अगली सुबह जब वह पादरी के पास काम करने आया तो पादरी ने उसको एक अंडा दे दिया और एक डबल रोटी दे दी।

जियूफ़ा ने अंडा तोड़ा और उसे एक पिन से खाने लगा। और जब भी वह अंडा लगी पिन को चाटता तो उसके साथ एक बहुत बड़ा सा टुकड़ा डबल रोटी का खा लेता। दो चार बार में ही उसकी वह डबल रोटी खत्म हो गयी।

डबल रोटी खत्म कर के वह बोला — "मुझे थोड़ी डबल रोटी और दीजिये। इतनी तो काफी नहीं थी।" पादरी को उसको एक बहुत बड़ी टोकरी भर कर डबल रोटी देनी पड़ गयी।

अब ऐसा रोज होता। एक दिन वह पादरी चिल्लाया — "उफ़ यह तो कुछ ही हफ्तों में मुझे भीख मॅगवा देगा।" उस समय जाड़े का मौसम था तो उल्लू को आइवी पर बोलने के लिये तो अभी कई महीने थे।

बहुत दुखी हो कर पादरी ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ आज तुम शाम को आइवी में छिप कर उल्लू की आवाज में बोलना।"

उसकी मॉ ने वैसा ही किया जैसा उसके बेटे ने उससे करने के लिये कहा था। वह चिल्लायी — "म्यू म्यू।"

उसकी आवाज सुन कर पादरी ने जियूफ़ा से पूछा — "क्या तुमने सुना? देखो उल्लू आइवी में बोल रहा है अब हम अलग हो सकते हैं।"

जियूफ़ा ने अपनी पोटली उठायी और अपने घर चल दिया। जब वह जा रहा था तब भी पादरी की मॉ "म्यू म्यू" चिल्ला रही थी।

जियूफ़ा बोला — "ओ शापित उल्लू, तुमको सजा और दुख दोनों मिलेंगे।" कह कर उसने पादरी की मॉ के ऊपर कई पत्थर फेंके और उसको मार दिया।

जियूफ़ा और किसान

जब वह घर पहुँचा तो उसकी मॉ ने उसको घर में नहीं रहने दिया। उसने उसको एक किसान के पास उसके सूअरों को चराने के लिये भेज दिया।

उस किसान ने उसको अपने सूअरों के झुंड को दे कर जंगल भेज दिया और कहा कि जब वे खा पी कर मोटे हो जायें तब वह उनको वापस ले कर आ जाये।

सो उन सूअरों को मोटा करने के लिये जियूफ़ा जंगल में कई महीने रहा। जब वे सूअर मोटे हो गये तो वह उनको ले कर घर लौटा।

जब वह उनको ले कर किसान के घर लौट रहा था तो रास्ते में उसको एक कसाई मिल गया। उसने कसाई से पूछा — "क्या तुम ये सूअर खरीदोगे? मैं तुमको ये सूअर आधे दाम पर दे दूँगा अगर तुम इनके कान और पूँछ मुझे वापस कर दो तो।"

कसाई ने उसका वह सूअर का पूरा का पूरा झुंड ही खरीद लिया और जियूफ़ा को उसके कान पूँछ और पैसे दे दिये। जियूफ़ा उनको ले कर पास की एक जमीन पर गया और उसने सूअर के दो कान और सूअर की एक पूँछ के तीन हिस्से कर के वहाँ बो दिये। इस तरह से उसने उन सूअरों के सब कानों और पूछों को बो दिया।

फिर वह परेशान होता हुआ किसान के पास दौड़ा दौड़ा गया और उससे बोला — "ज़रा सोचिये तो कि आज मेरे ऊपर क्या आफत आ पड़ी। मैंने आपके सारे सूअर बहुत अच्छी तरह से खिला पिला कर मोटे कर लिये थे और उनको घर ले कर आ रहा था कि वे सब के सब एक जमीन के टुकड़े पर गिर पड़े और वह जमीन का टुकड़ा उनको सबको निगल गया अब बस केवल उनके कान और पूँछें ही बाहर रह गयीं।"

किसान ने जल्दी से अपने कुछ आदमी इकट्ठा किये और उनको साथ ले कर उस जमीन के पास पहुँचा जहाँ उसके सूअरों के कान और पूँछ बाहर निकले हुए थे।

उन सबने सूअरों के कान या पूँछ खींच खींच कर उनको बाहर निकालने की कोशिश की पर जब भी उन्होंने कोई कान खींचा जाता या कोई पूँछ खींची जाती तो वह बस वह कान या पूँछ ही बाहर आयी और कुछ नहीं।

यह देख कर जियूफ़ा बोला — "देखा न वे सूअर कितने मोटे हो गये थे। वे इस जमीन में केवल अपने मोटेपन की वजह से ही गायब हो गये।"

किसान बेचारा क्या करता वह अपने सूअरों के बिना ही अपने घर लौटने पर मजबूर हो गया। और जियूफ़ा? वह सारा पैसा ले कर अपने घर चला गया और फिर कुछ दिन तक अपनी मॉ के पास ही रहा।

जियूफ़ा ने उधार लिया

एक दिन जियूफ़ा की मॉ ने जियूफ़ा से कहा — "जियूफ़ा आज हमारे घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं है। क्या करें।"

वह बोला — "यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं देखता हूँ।" और वह एक कसाई के पास पहुँचा और उससे कहा — "गौसिप, मुझे आधा किलो मॉस दे दो मैं तुमको इसे पैसे कल दे दूँगा।"

गौसिप ने उसको मॉस दे दिया। मॉस ले कर वह पहले एक बेकर के पास गया फिर एक तेल बेचने वाले के पास गया फिर एक शराब बेचने वाले के पास गया और फिर एक चीज़ बेचने वाले के पास गया।

वहॉ से उसने मेकैरोनी, डबलरोटी, तेल, शराब और चीज़ उधार ला कर अपनी मॉ को दे दीं। दोनों ने बड़े मजे में खाना खाया।

अगले दिन जियूफ़ा ने मरने का बहाना किया और उसकी मॉ ने रोना शुरू कर दिया। "ओह मेरा बेटा मर गया। ओह मेरा बेटा मर गया।" उसके शरीर को एक खुले हुए ताबूत में रख कर चर्च ले जाया गया। पादरियों ने उसके ऊपर मास पढ़ी।

शहर में भी लोगों को पता चला कि जियूफ़ा मर गया। कसाई, बेकर, तेल बेचने वाला और शराब बेचने वाले ने कहा — "जो कुछ इसको हमने कल उधार दिया था वह तो अब ऐसा हो गया जैसे हमने उसे कुछ बेचा ही नहीं हो। अब हमें उसके दाम कौन देगा।"

पर चीज़ बेचने वाले ने सोचा "जियूफ़ा यह तो सच है कि तुम पर मेरे चार ग्रैनी[93] उधार हैं पर मैं उनको तुम पर छोड़ूँगा नहीं। मैं अभी तुम्हारी टोपी उतार कर लाता हूँ।"

और वह चीज़ बेचने वाला चुपचाप चर्च में घुस गया पर इत्तफाक से पादरी तभी भी वहॉ मौजूद था और जियूफ़ा के ताबूत पर प्रार्थना कर रहा था।

उसने सोचा "यह पादरी जब तक यहॉ है तब तक तो मैं इसकी टोपी उतार नहीं सकता क्योंकि यह ठीक नहीं है। जब तक यह पादरी यहॉ से जाता है तब तक मैं इन्तजार करता हूँ।"

सो वह पूजा की जगह के पीछे जा कर छिप गया।

[93] Grani may be the then currency in Italy at that time.

जब रात हो गयी और आखिरी पादरी भी वहॉ से चला गया तो वह चीज़ बेचने वाला अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकलने ही वाला था कि डाकुओं का एक गिरोह चर्च में घुसा।

उन्होंने कहीं से पैसों का एक बहुत बड़ा थैला चुरा लिया था और अब उस पैसे को वे बॉटना चाहते थे। उन्होंने पैसे बॉटने शुरू किये तो वे उस बॅटवारे पर लड़ने लगे और एक दूसरे पर चिल्लाने लगे।

उनका चिल्लाना सुन कर जियूफ़ा उठ गया और ज़ोर से बोला — "तुम सब यहॉ से चले जाओ। यह पैसा मेरा है।"

ताबूत में से एक मुर्दे को खड़ा होते देख कर डाकू डर गये और पैसों का थैला वहीं छोड़ कर भाग गये।

जैसे ही जियूफ़ा ने पैसों का थैला उठाने की कोशिश की तो चीज़ बेचने वाला अपनी छिपी हुई जगह से कूद कर बाहर आ गया और उस थैले के पैसों में से अपना हिस्सा मॉगने लगा।

जियूफ़ा बार बार यही चिल्लाता रहा — "तुम्हारा हिस्सा तो केवल चार ग्रैनी है सो लो तुम यह अपनी चार ग्रैनी लो और चलते बनो।"

डाकू अभी भी बाहर ही थे क्योंकि वे इस तरह से अपनी कमाई वहॉ छोड़ कर जाने वाले नहीं थे। सो जब उन्होंने उसको इस तरह चिल्लाते सुना तो उन्होंने सोचा "लगता है वह जाने कितनी मरी हुई आत्माओं में इस पैसे को बॉट रहा है।"

सो उन्होंने आपस में कहा — "अगर इसमें हर एक का चार ग्रैनी का हिस्सा है तो इसने कितनी आत्माओं को बुलाया है?" और यह कह कर वे वहॉ से जितनी जल्दी भाग सकते थे भाग गये।

उस थैले में से जियूफ़ा ने चार ग्रैनी चीज़ बेचने वाले को उसके चीज़ के लिये दीं और कुछ और पैसा उसको इसलिये दिया ताकि वह इस सबके बारे में किसी और से कुछ न कहे और बाकी का बचा पैसा ले कर वह घर चला गया।

जियूफ़ा और परियॉ

एक बार जियूफ़ा की मॉ ने एक बहुत बड़ा थैला भर कर अलसी[94] की रुई खरीदी। उसने जियूफ़ा से कहा — "मुझे यकीन है कि तुम कुछ करने के लिये इसमें से थोड़ी सी रुई तो कात ही सकते हो।"

सो जियूफ़ा उस थैले में से एक एक कर के रुई की पूनी निकालने लगा और बजाय उसकी रुई कातने के वह उसको आग में डालने लगा। यह देख कर उसकी मॉ बहुत गुस्सा हुई और उसने उसकी बहुत पिटायी की।

तो फिर जियूफ़ा ने क्या किया?

उसने छोटी छोटी डंडियों का एक गट्ठर लिया और उसके चारों तरफ वह रुई लपेट दी जैसे तकली पर लपेटते हैं। फिर उसने

[94] Translated for the word "Flax". See its seeds picture above.

उसकी एक झाड़ू सी बनायी और छत पर बैठ कर उसे वहाँ घुमाने लगा।

जब वह वहाँ बैठा हुआ यह कर रहा था तो वहाँ तीन परियाँ आयीं और कहने लगीं — "देखो जियूफ़ा कितनी अच्छी तरीके से बैठा हुआ यह सूत कात रहा है। क्या हमको इसे कुछ देना नहीं चाहिये।"

पहली परी बोलीी — "मैं इसको यह वरदान देती हूँ कि एक रात में यह जितनी भी रुई छुए वह सब कत जाये।"

दूसरी परी बोली — "मैं इसको यह वरदान देती हूँ कि एक रात में इसने जितना भी धागा काता हो वह यह सब बुन ले।"

तीसरी परी बोली — "मैं इसको यह वरदान देती हूँ कि जितना भी कपड़ा इसने रात भर में बुना है इसका वह सारा कपड़ा अपने आप धुल कर साफ हो जाये।"

जियूफ़ा ने यह सब सुन लिया। सो जब रात हो गयी और उसकी माँ जब सोने चली गयी तो वह उसके खरीदे हुए अलसी की रुई के ढेर के पास गया और जैसे ही उसने उसकी एक लच्छी छुई वह कत गयी। जब सारी रुई कत गयी तो वह उसको बुनने बैठा।

जैसे ही उसने बुनने की मशीन[95] को छुआ तो उसका सारा सूत कत कर कपड़े के रूप में निकलने लगा। उसने तुरन्त ही वह कपड़ा बिछाया और

[95] Translated for the word "Loom". It weaves the cloth. See its picture above.

उसको धोने के लिये उसके ऊपर थोड़ा सा पानी डाला कि वह सारा कपड़ा तो अपने आप ही साफ हो गया।

अगले दिन जियूफ़ा ने अपनी मॉ को अपना बना हुआ बढ़िया कपड़ा दिखाया तो वह तो बहुत खुश हो गयी। उसने उसको बाजार में बेच कर बहुत पैसा कमाया।

जियूफ़ा यह काम कई रातों तक करता रहा। फिर वह यह करते करते थक गया तो वह फिर किसी दूसरे किसी काम के लिये निकल पड़ा।

जियूफ़ा और लोहार

अबकी बार उसको एक लोहार की दूकान पर काम मिल गया। उसको उसकी धौंकनी[96] चलाने का काम मिल गया था।

उसने वह धौंकनी इतनी ज़ोर से चलायी कि लोहार की आग ही बुझ गयी। यह देख कर लोहार बोला "ठीक है तुम धौंकनी चलाना छोड़ो और लो यह हथौड़ा लोहे पर मारो।"

जियूफ़ा ने उससे हथौड़ा ले कर लोहे पर हथौड़ा भी इतने जोर से मारा कि वह लोहे का टुकड़ा भी हजारों टुकड़ों में टूट कर बिखर गया।

[96] Translated for the word "Bellow". It throws very strong air. See its picture above.

इस बार लोहार को बहुत गुस्सा आया। वह उसको काम से निकालना चाहता था पर वह उसको निकाल भी नहीं सकता था क्योंकि उसने उसको एक साल के लिये काम पर रखा था।

वह एक गरीब आदमी के पास गया और उससे कहा — "मैं तुमको बहुत कुछ दूँगा अगर तुम उससे यह कहो कि तुम उसकी मौत हो और तुम उसको लेने आये हो।" वह गरीब आदमी बेचारा मान गया।

एक दिन वह जियूफ़ा से मिला और उसने उससे वही कहा जो उस लोहार ने उससे जियूफ़ा से कहने के लिये कहा था। पर जियूफ़ा बहुत तेज़ था। वह बोला — "क्या? क्या कहा तुमने तुम मेरी मौत हो और मुझे लेने आये हो?"

यह कह कर वह उस गरीब आदमी को पकड़ कर एक थैले में डाल कर लोहार के पास ले गया। वहाँ उसने उसको लोहा कूटने वाली जगह रखा और उसको हथौड़े से मारना शुरू कर दिया।

हथौड़ा मारते मारते वह बोला — "अब बोल मैं और कितने साल ज़िन्दा रहूँगा?"

वह बेचारा गरीब आदमी थैले में से बोला — "**20** साल।"

"यह ठीक नहीं है। यह तो बहुत कम हैं। ठीक से बोल।"

वह गरीब आदमी चिल्लायाा — "**30** साल। **40** साल। जितने साल तुम ज़िन्दा रहना चाहो उतने साल।"

पर जियूफ़ा उसको तब तक हथौड़े से मारता ही रहा जब तक वह मर नहीं गया।

जियूफ़ा और बिशप

एक बार शहर के बिशप ने सारे शहर में यह मुनादी पिटवायी कि उस शहर का हर सुनार उसको एक सोने का क्रास[97] बना कर देगा। जिस किसी का क्रास सबसे सुन्दर होगा वह उसको **400** औंस देगा और जिस किसी का क्रास उसको खुश नहीं कर सका तो वह उसका गला काट देगा।

यह सुन कर एक सुनार एक बहुत सुन्दर क्रास बना कर बिशप के पास ले कर गया पर बिशप ने उसको देख कर कहा कि उसका वह क्रास देख कर उसको खुशी नहीं हुई और उस बेचारे का गला तो काट दिया पर उसका क्रास रख लिया।

अगले दिन एक दूसरा सुनार एक सुन्दर क्रास बना कर लाया पर वह क्रास भी बिशप को पसन्द नहीं आया। उसने उस सुनार का भी गला काट लिया और उसके क्रास को अपने पास रख लिया।

यह सब कई दिनों तक चलता रहा। इस तरह से कई सुनार बेचारे क्रास बना बना कर लाते रहे पर उन सुनारों में से किसी के

[97] Translated for the word “Crucifix”. The difference between a Cross and a Crucifix is that Cross is only a Cross while Crucifix has Christ’s figure on it. We have used the word “Cross” only for ease otherwise the goldsmiths were asked to make crucifixes. See its picture above.

क़ास भी बिशप को खुश नहीं कर सके तो उन सब सुनारों के सिर कटते रहे। और बिशप उनके सोने के क़ास अपने पास रखता रहा।

जियूफ़ा ने भी यह देखा तो वह एक सुनार के पास गया। उसने उससे जा कर कहा — "दोस्त तुम मेरे लिये एक क़ास बना दो जिसका शरीर खुब मोटा हो पर वह बहुत बढ़िया बना हुआ हो जितना बढ़िया तुम बना सकते हो।"

उस सुनार ने जियूफ़ा के लिये जैसा वह चाहता था वैसा ही एक क़ास बना दिया। जियूफ़ा ने उस क़ास को अपनी बॉहों में पकड़ा और उसको ले कर बिशप के पास चल दिया।

जैसे ही बिशप ने जियूफ़ा को उस क़ास के साथ देखा तो चीखा — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम मेरे पास यह इतना बड़ा राक्षस ले कर चले आ रहे हो? ठहरो, तुमको इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

जियूफ़ा बोला — "ठीक है जनाब वह तो मैं चुका दूँगा पर ज़रा सुनिये तो कि मेरे साथ हुआ क्या। जब मैं इस क़ास को ले कर चला तो यह क़ास तो बहुत ही सुन्दर था जैसे कोई मौडल होता है।

पर रास्ते में यह गुस्से से फूलता गया फूलता गया और जैसे जैसे मैं आपके घर के पास आता गया तो यह और फूलता गया और और फूलता गया। और सबसे ज़्यादा तो यह तब फूला जब मैं आपकी सीढ़ियॉ चढ़ रहा था।"

बिशप ने आश्चर्य से पूछा — "मगर ऐसा क्यों हुआ?"

जियूफ़ा शान्ति से बोला — "क्योंकि लौर्ड[98] आपसे गुस्सा हैं। क्योंकि आपने इतने सुनारों का बेकुसूर खून बहाया है। और अगर आप मुझे तुरन्त ही 400 औंस नहीं देंगे और हर सुनार की विधवा को उसका सालाना खर्चा नहीं देंगे तो भगवान आप पर भी बहुत गुस्सा होंगे और आप भी इसी क्रास की तरह से फूलते चले जायेंगे।"

यह सुन कर तो बिशप कॉप गया और उसने तुरन्त ही जियूफ़ा को 400 औंस ला कर दे दिये और उससे कहा कि वह उन सारे मारे हुए सुनारों की विधवाओं को उसके पास भेज दे ताकि वह उनकी सालाना पेन्शन बॉध सके।

जियूफ़ा उस पैसे को ले कर वहॉ से चला गया। फिर वह हर विधवा के पास गया और उससे पूछा —" अगर मैं बिशप से तुम्हारे लिये सालाना खर्चा बॅधवा दूॅ तो तुम मुझे क्या दोगी।"

हर विधवा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी और हर एक ने उसको इस बात के लिये काफी पैसा दिया। इस तरह जियूफ़ा उस पादरी से काफी सारे पैसे अपनी मॉ के पास ले गया।

[98] Lord word is used for Jesus Christ

6 जियूफ़ा और बच्चे

एक दिन जियूफ़ा की माँ ने उसको एक दूसरे शहर भेजा जहाँ एक मेला लगा हुआ था। रास्ते में उसको कुछ बच्चे मिल गये। उन्होंने पूछा "जियूफ़ा तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं मेले जा रहा हूँ।"

"क्या तुम हमारे लिये एक सीटी लाओगे?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।"

कई बच्चे चिल्लाये "और मेरे लिये भी। और मेरे लिये भी। और मेरे लिये भी।" और जियूफ़ा ने सबको हाँ कर दी।

आखीर में एक बच्चा बोला — "मेरे लिये भी एक सीटी लाना न जियूफ़ा। लो यह एक पैनी लो।"

जब जियूफ़ा मेले से वापस आया तो वह केवल एक ही सीटी ले कर आया उस आखिरी बच्चे के लिये जिसने उसको पैनी दी थी।

दूसरे बच्चे चिल्लाये — "जियूफ़ा तुमने तो कहा था कि तुम हम सबके लिये एक एक सीटी ले कर आओगे। कहाँ है हमारी सीटी?"

जियूफ़ा बोला — "पर तुममें से किसी ने मुझे उसको खरीदने के लिये कोई पैसा तो दिया ही नहीं था। मैं कैसे खरीदता।"

तो बच्चों ऐसा था हमारा जियूफ़ा।

104 एक बेवकूफ[99]

जियूफ़ा के टक्कर का एक हीरो वेनिस की कहानियों में पाया जाता है – "बेवकूफ"। यह कहानी यहॉ संक्षेप में दी जाती है।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके एक बेटा था जो कुछ बेवकूफ सा था। एक दिन उसने अपने बेटे से कहा कि कल सुबह वे जल्दी उठेंगे क्यों कि उनको डबलरोटी बनानी है।

सो अगले दिन वे दोनों जल्दी उठे और डबलरोटी बनानी शुरू कर दी। मॉ ने आटे के ढेर बनाये पर उसने इतनी चिन्ता नहीं की कि वह सारे ढेर एक से बनाती। वे उसने अलग अलग साइज़ के बना दिये।

आखिर उसका बेटा एक ढेर को उसे दिखा कर बोला — "मॉ यह देखो यह रोटी तुमने कितनी छोटी सी बनायी है।"

मॉ बोली — "ओह। कोई बात नहीं। यह कोई जरूरी नहीं है कि सारी रोटियॉ एक सी ही बनें क्योंकि रोटी चाहे छोटी हो या बड़ी सारी रोटियॉ तो मास[100] को ही जाती हैं।"

जब डबलरोटी बन गयी तो बेटा बजाय उसे बेकर के पास ले जाने के चर्च ले गया क्योंकि मास भी अब वहॉ होने ही वाली थी।

---

[99] The Fool. Tale No 103. From Venice. "The Fool". By Bernoni. In Fiabe. {Tale No 11).

[100] Christian worship.

और वहॉ ले जा कर सबसे बोला — "मॉ ने कहा है कि सारी रोटियॉ बड़ी हों या छोटी सब मास को जाती हैं।"

कह कर उसने वे सारे आटे के गोले बीच चर्च में फेंक दिये और घर चला गया और मॉ से बोला — "मॉ जो तुमने मुझसे करने के लिये कहा था वह मैंने कर दिया है।"

"बहुत अच्छा किया। क्या तू वह आटा बेकर के पास ले गया था।"

"ओह मॉ तुम्हें तो बस देखना था कि वे सब लोग मुझे किस तरह से देख रहे थे।"[101]

"तूने भी तो उनको वैसी ही निगाहों से देखा होगा।"

"रुको रुको। मैं ज़रा उनके ऊपर निगाह मार कर आता हूॅ।"

कह कर वह अस्तबल में गया और सब जानवरों की ऑखें निकाल लीं। उसने उनको एक रूमाल में रखा और चर्च चला गया। अब जब भी कभी कोई उसकी तरफ देखता था तो वह अपने रूमाल में से एक ऑख निकाल कर उनके ऊपर फेंक देता था।

जब उसकी मॉ को पता चला कि उसके बेटे ने क्या किया है तो वह तो बिस्तर पर लेट गयी और अपने बेटे को डाक्टर को बुलाने के लिये भेज दिया।

[101] They were casting an eye on me.

जब डाक्टर आया तो उसने स्त्री की नाड़ी देखी और बोला "ओह इस स्त्री की नाड़ी तो बहुत ही धीमी चल रही है। यह तो बहुत कमजोर है।"

उसने कहा कि उसको अपनी मॉ की ठीक से देखभाल करनी चाहिये। उसको हर मिनट एक कटोरा मॉस का बहुत ही पतला पानी पिलाते रहना चाहिये।

बेटे ने वायदा किया कि वह उसकी ठीक से देखभाल करेगा। वह बाजार गया और एक चिड़िया खरीद लाया। एक बालटी पानी आग पर उबलने के लिये रख दिया। जब वह पानी उबलने लगा तो उसने वह चिड़िया उस पानी में डाल दी।

उसने उसको दो चार बार उबलने दिया। फिर उसने उसके पानी को एक कटोरे में डाला और मॉ को पिलाने के लिये ले गया। यह सब वह जल्दी जल्दी करता रहा।

अगले दिन डाक्टर ने स्त्री को पहले दिन से भी ज़्यादा कमजोर पाया तो उसने उसके बेटे से कहा कि उसे अपनी मॉ के ऊपर कुछ भारी सी चीज़ रखनी चाहिये जिससे उसे पसीना आ जाये।

जब डाक्टर चला गया तो उसने उस कमरे में जितना भी फर्नीचर था सब उसके ऊपर ला कर रख दिया। इससे अब उसकी सॉस भी बन्द सी होने लगी।

बेटा तुरन्त ही फिर डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने देखा तो बोला कि अब कुछ नहीं हो सकता। इसके पहले कन्फ़ैशन कराओ और फिर इसके दफ़न की तैयारी करो।

सो उसके बेटे ने उसको तैयार किया और चर्च ले जा कर उसे कनफ़ैशन बौक्स में बिठा दिया और पादरी से कहा कि "कोई आपका कनफ़ैशन बौक्स में इन्तजार कर रहा है।" यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

पादरी तुरन्त ही आया तो उसने देखा कि स्त्री तो मरी पड़ी है। सो उसने उसके बेटे को बुलवाया। जब बेटे को पता चला कि उसकी मॉ मर गयी है तो उसने पादरी पर इलजाम लगाया कि पादरी ने उसे मार दिया है और उसे मारना शुरू कर दिया।

105 चाचा कैप्रियानो[102]

इटली में ऐसी बहुत कहानियॉ हैं जिनमें ज़्यादा अक्लमन्द आदमी अपने से कम अक्लमन्द लोगों पर अपनी चालाकियॉ खेलता रहता है। इस तरह की कहानियों में यह कहानी एक बहुत अच्छी कहानियों में से एक है।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी थे जिनके एक बेटी थी। पति को लोग चाचा कैप्रियानो कह कर बुलाया करते थे। शहर के पास ही उसके पास एक जमीन थी जहॉ वह हमेशा काम किया करता था।

एक दिन की बात है कि वहॉ से **13** डाकू गुजरे। उन्होंने चाचा कैप्रियानो को देखा तो वे अपने घोड़ों से उतरे और उनसे बात करने लगे। जल्दी ही वे एक दूसरे के दोस्त हो गये। इसके बाद वे अक्सर उसके पास आ जाते थे।

जब भी वे उनके पास आते तो हमेशा ही उनको "गुड डे चाचा कैप्रियानो" कह कर नमस्ते करते।

और वह हमेशा उन्हें यही जवाब देते — "मैं तो आपका नौकर हूॅ। योर वरशिप आज क्या कर रहे हैं।"

"हम थोड़ा सैर सपाटे के लिये आये हैं। तुम जाओ चाचा कैप्रियानो तुम जा कर खाना खाओ आज का तुम्हारा काम हम कर

[102] Uncle Capriano. Tale No 105. From Sicily. Giuseppe Pitre. (Tale No 157)

देते हैं।" यह सुन कर वह खाना खाने चला जाता और वे डाकू उसकी जगह काम कर देते।

आखीर में तुम क्या सोचते हो कि चाचा कैप्रियानो ने क्या किया होगा। उन्होंने सोचा क्यों न इन डाकुओं से कुछ पैसे ऐंठे जायें। सो जब वह अपने घर गये तो उन्होंने अपनी पत्नी से कहा — "कुछ डाकू अब मेरे दोस्त बन गये हैं। अब मैं उनसे कुछ पैसे निकलवाना चाहूँगा। देखूँ निकलवा सकता हूँ या नहीं।

मैंने उनसे कहने के लिये एक कहानी भी गढ़ ली है। मेरे पास एक खरगोश है जिसे मैं हर शाम आग जलाने की लकड़ियों और सूप बनाने के कुछ सामान के साथ घर भेजता हूँ जिसे मेरी पत्नी पकाती है।"

उसके बाद उसने अपनी बेटी से कहा जब मैं डाकुओं के साथ यहाँ आऊँ तो तुम खरगोश को पानी से नहलाना और फिर दरवाजे से बाहर मुझसे मिलने के लिये आना और कहना — "क्या इतने छोटे से जानवर को इतना सारा बोझ ले कर इस तरह भेजा जाता है कि वह बेचारा मर ही जाये।"

जब डाकुओं ने सुना कि चाचा कैप्रियानो के पास एक ऐसा खरगोश है जो उनका सामान उनके घर ले जाता है तो उनको लगा कि वह खरगोश तो उनके पास होना चाहिये। सो उन्होंने सोचा — "हम उस खरगोश को लेना चाहते हैं। अगर हमारे पास वह

खरगोश होता तो हम भी अपना पैसा सामान खाना आदि अपने घर भेज सकते हैं।"

चाचा कैप्रियानो ने एक दिन उनसे कहा — "मैं चाहता हूँ कि आप लोग एक दिन मेरे घर आयें।"

वे लोग तो **13** थे। सो किसी ने हाँ कहा तो किसी ने ना कहा पर उनका सरदार बोला — "चलो न। हमें उसका खरगोश देख कर आना चाहिये।"

जब वे चाचा कैप्रियानो के घर के दरवाजे तक पहुँचे तो चाचा कैप्रियानो की बेटी अन्दर से आयी और कुछ ज़ोर से बोली — "क्या यही तरीका है इस बेचारे छोटे से जानवर के ऊपर सामान लादने का कि वह बेचारा घर तक आते आते मर ही जाये।"

सो जब वे घर में घुसे तभी से वे सब खरगोश के हमदर्द हो गये और बोले — "ओह बेचारा छोटा सा जानवर। देखो न बेचारा पसीने से कैसा नहाया हुआ है।"

जब डाकुओं ने उसे देखा तो आँखों ही आँखों में उन्होंने एक दूसरे से पूछा "क्या हमें इससे इसका खरगोश माँगना चाहिये।"

फिर उन्होंने चाचा कैप्रियानो से कहा — "चाचा कैप्रियानो। आपको यह खरगोश बिना कुछ कहे सुने हमें दे देना चाहिये। और इसके लिये आप हमसे जो भी माँगेंगे वह हम आपको दे देंगे।"

चाचा कैप्रियानो बोले — "इसको देना तो बहुत मुश्किल है आपको कुछ और चाहिये तो माँग लें। क्योंकि अगर मैंने इसे आपको दे दिया तो मैं तो बिल्कुल ही बर्बाद हो जाऊँगा।"

डाकू बोले — "मगर आपको तो इसे हमें देना ही पड़ेगा चाहे आप बर्बाद हों या नहीं।"

अन्त में चाचा कैप्रियानो को वह खरगोश उनको देना ही पड़ा — **200** औंस में। उन्होंने ऊपर से उनको **20** औंस और दिये अपने लिये कोई भी चीज़ खरीदने के लिये।

अब जब खरगोश डाकुओं के हाथ में आ गया तो वे खेत पर एक घर में गये ताकि उसकी जाँच कर सकें। उन्होंने हर एक ने एक एक पैसों का थैला उठाया और कहा कि चलो पहले इस थैले को ही घर भेजते हैं।

सरदार बोला — "पहले यह मेरा थैला ले जायेगा।"

सो उन्होंने खरगोश को लिया उसे लादा और जब उसे थैलों से लाद दिया तो खरगोश तो एक इंच भी नहीं हिल सका। तो एक डाकू ने उसकी पीठ पर एक कोड़ा मारा। इससे खरगोश तुरन्त ही भाग गया।

डाकू लोग चाचा कैप्रियानो के पास उसकी शिकायत करने पहुँचे — "आपकी इतनी हिम्मत कैसे हुई हमारे साथ ऐसी चाल खेलने की। आपने हमें एक ऐसा खरगोश बेचा जो केवल कुछ थैले रखने के बाद भी एक इंच भी नहीं हिला।"

चाचा कैप्रियानो ने पूछा — "क्या आपने उसे मारा था?"

उनमें से एक डाकू बोला — "हॉ हॉ मारा था।"

दूसरा डाकू बोला — "मेरे साथी ने उसे पीठ पर मारा था।"

"पर आपने उसको किस तरफ मारा था बॉयी तरफ या दॉयी तरफ?"

"बॉयी तरफ।"

"इसी लिये वह भाग गया। आपको उसकी दॉयी तरफ मारना था। अगर आपने मेरा कहा नहीं माना तो फिर इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।"

डाकू बोले — "यह तो ठीक है। चाचा कैप्रियानो ठीक कह रहे हैं। इसलिये आप जायें और खाना खायें। इस बीच आपका काम हम किये देते हैं।"

और उनकी दोस्ती नहीं टूटी।

X X X X X X X

कुछ समय बाद चाचा कैप्रियानो ने अपनी पत्नी से कहा — अब हमारा डाकुओं से फिर से पैसा लेने का समय आ गया है।"

"अब हम कैसे लेंगे।"

"कल तुम एक नया बर्तन खरीदना पर तुम अपने पुराने बर्तन में ही खाना पकाना। जब मैं शाम को आऊँगा तो बस उससे थोड़ी ही देर पहले उसे नये बर्तन में पलट देना। और उसे चूल्हे पर रख देना

और उसके नीचे आग नहीं जलाना। सो कल जब मैं घर आऊँगा तो में उनसे कहूँगा कि मेरे पास एक ऐसा बर्तन है जो बिना आग के खाना पकाता है।"

अगली शाम चाचा कैप्रियानो ने डाकुओं को अपने घर आने के लिये फिर से मना लिया।

जब उन्होंने बर्तन देखा तो उन्होंने आपस में कहा कि हमें चाचा कैप्रियानो से इस बर्तन को हमें देने के लिये कहना चाहिये। कुछ देर की हिचकिचाहट के साथ चाचा कैप्रियानो ने वह बरतन उनको **400** औंस में बेच दिया।

जब डाकू अपने घर लौटे तो उन्होंने एक बहुत सुन्दर मेमना मारा और उस बर्तन के नीचे बिना आग जलाये ही उसे पकने रख दिया और चले गये।

शाम को जब वे घर लौटे तो सब में एक होड़ लगी हुई थी कि कौन सबसे पहले घर पहुँचेगा और यह बतायेगा कि खाना बन गया है। जो सबसे पहले घर पहुँचा उसने उसमें से मॉस का एक टुकड़ा निकाला और खा कर देखा तो वह तो वैसा ही था जैसा कि वे उसे छोड़ कर गये थे।

उन्होंने बर्तन में एक ठोकर मारी और उसे दो हिस्सों में तोड़ दिया। जब दूसरे लोग घर आये और उन्होंने देखा कि खाना अभी नहीं पका है तो वे चाचा कैप्रियानो की तरफ चल दिये उनसे शिकायत करने।

उन्होंने कहा — "आपने हमें एक ऐसा बर्तन बेचा था जो सब कुछ पका सकता था पर हमने उसमें मॉस पकने के लिये रखा तो वह तो पका नहीं कच्चा ही रहा।"

चाचा कैप्रियानो ने पूछा — "क्या आपने वह बर्तन तोड़ दिया?"

"बिल्कुल। हमने उसे तोड़ दिया।"

"आपका चूल्हा कैसा था ऊँचा या नीचा?"

एक डाकू थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला — "थोड़ा सा ऊँचा था।"

"इसी लिये वह ठीक से नहीं पक सका। उसे थोड़े से नीचे चूल्हे पर रखा जाना चाहिये था। आप लोगों ने उसको ठीक से रखा नहीं और बर्तन तोड़ दिया। तो इसमें मेरा क्या कुसूर है।"

डाकू बोले — "चाचा कैप्रियानो ठीक कह रहे हैं। जाइये चाचा कैप्रियानो आप जा कर खाना खाइये आपका काम हम कर देंगे।"

और उनकी दोस्ती बनी रही।

X X X X X X X

कुछ समय बाद चाचा कैप्रियानो ने फिर अपनी पत्नी से कहा — "अब फिर से डाकुओं से पैसा लेने का समय आ गया है।"

"पर इस बार हम यह सब कैसे सँभालेंगे?"

"तुम्हें याद है कि हमारी आलमारी में एक सीटी पड़ी हुई है। उसको तुम ठीक करा लो। कल तुम कसाई की दूकान पर जाना और उससे एक ब्लैडर[103] भर कर खून ले आना।

फिर उसे तुम अपनी गर्दन के चारों तरफ लपट लेना। फिर अपना शाल ओढ़ लेना। शाम को जब मैं घर आऊँ तो तुम मुझे बहुत गुस्से में भरी बैठी दिखायी देना। मोमबत्ती मत जलाना।

जब मैं देखूँगा कि घर में मोमबत्ती भी नहीं जली है तो मैं तुम पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाऊँगा और तुम एक शब्द भी नहीं बोलना। तब मैं अपना चाकू उठाऊँगा और तुम्हारी गर्दन काट दूँगा। तुम जमीन पर गिर जाना। क्योंकि मैं केवल ब्लैडर में ही अपना चाकू घुसाऊँगा तो ब्लैडर में से खून बहने लगेगा। इससे डाकू यह समझेंगे कि तुम मर गयी हो।"

फिर उसने अपनी बेटी से कहा — "और तुम। जब मैं कहूँ "मुझे सीटी ला कर दो।" तब तुम मुझे सीटी ला कर दे देना।"

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "जब मैं उसे तीन बार बजाऊँ तब तुम उठ कर खड़ी हो जाना। जब डाकू लोग यह सब देखेंगे तो वे यह सीटी खरीदना चाहेंगे। फिर हम यह सीटी उन्हें **600** औंस में बेच देंगे।"

जैसा चाचा कैप्रियानो ने प्लान किया था वैसा ही हुआ। सीटी का कारनामा देख कर डाकुओं ने सीटी खरीदनी चाही और चाचा

[103] Bladder – a part of the body where the urine is collected.

कैप्रियानो ने उसे डाकुओं को 600 औंस में बेच दिया। उन्होंने पहले की तरह से चाचा कैप्रियानो को 20 औंस और दिये।

घर जा कर तुरन्त ही उन्होंने यह प्रयोग अपनी अपनी पत्नियों पर किया। पर वह कोई जादू की सीटी तो थी नहीं जो मरे हुओं को ज़िन्दा कर देती। यह देख कर डाकू लोग तो गुस्से में भर गये। उनको लगा कि चाचा कैप्रियानो ने उन्हें फिर से धोखा दे दिया है।

X X X X X X X

इन धोखों का बदला लेने के लिये डाकू लोगों ने एक थैला उठाया और चाचा कैप्रियानो को उसमें उनसे बिना कुछ पूछे गछे बन्द किया और घोड़े पर ले जाने लगे। कुछ देर बाद वे एक फ़ार्म हाउस पर आये और वहॉ खाने के लिये रुक गये।

चाचा कैप्रियानो थैले के अन्दर ही थे। उन्होंने वहॉ चिल्लाना शुरू कर दिया — "वे मेरी शादी एक राजा की बेटी से करना चाहते हैं पर मुझे उससे शादी नहीं करनी।"

वहीं पास में एक गड़रिया भेड़ें चरा रहा था। उसने यह सुना कि कहीं कोई आदमी चिल्ला रहा है कि उसकी शादी किसी राजकुमारी से होने जा रही है पर वह उससे शादी करना नहीं चाहता। उसने सोचा कि "मैं कर लेता हूँ उससे शादी।"

सो वह उस थैले के पास गया और वहॉ जा कर उससे पूछा — "तुम्हें क्या हो गया है। तुम क्यों चिल्ला रहे हो।"

चाचा कैप्रियानो थैले के अन्दर से बोले — "वे लोग मेरी शादी किसी राजकुमारी से करवाना चाहते हैं पर मैं उससे शादी नहीं करना चाहता क्योंकि मैं तो पहले से ही शादीशुदा हूँ।"

गड़रिया बोला — "तो मैं कर लेता हूँ उससे शादी। मेरी शादी तो अभी हुई नहीं है। पर हम यह करेंगे कैसे।"

चाचा कैप्रियानो बोले — "ऐसा करो तुम इस थैले में बैठ जाओ। जब वे आयेंगे तो वह तुम्हें ले जायेंगे और तुम्हारी शादी राजकुमारी से करा देंगे। मैं भी बच जाऊँगा और तुम्हारा काम भी बन जायेगा।"

गड़रिया बोला — "यह तो बहुत अच्छा है।" कह कर उसने तुरन्त ही चाचा कैप्रियानो को आजाद कर दिया और खुद उसमें बन्द हो गया। चाचा कैप्रियानो ने थैले का मुँह कस कर बन्द किया उसका डंडा उठाया और भेड़ें चराने चला गया।

गड़रिये ने भी तुरन्त ही चिल्लाना शुरू कर दिया — "वे मुझे राजकुमारी देना चाहते हैं। मुझे उससे शादी करनी है। मुझे उससे शादी करनी है।"

कुछ ही देर में डाकू खाना खा कर आ गये। उन्होंने थैला अपने घोड़े पर लादा और आगे समुद्र की तरफ चल दिये। उधर गड़रिया सारे रास्ते यही चिल्लाता रहा "वे मुझे राजकुमारी देना चाहते हैं। मुझे उससे शादी करनी है। मुझे उससे शादी करनी है।"

कुछ ही देर में वे समुद्र के किनारे आ गये। उन्होंने थैला समुद्र में फेंका और वहॉ से चले गये। जब वे वापस जा रहे थे तो उनकी निगाह पहाड़ के ऊपर पड़ी तो वे चिल्ला पड़े — "अरे उधर देखो। क्या वह चाचा कैप्रियानो नहीं है।"

"हॉ हॉ है तो।"

"पर यह चाचा कैप्रियानो कैसे हो सकता है। क्या हमने उसे अभी अभी समुद्र नहीं फेंक दिया था। और यह अभी भी यहीं है। चलो उसी से चल कर पूछते हैं।"

सो वे उसके पास गये और उससे पूछा — "तुम यहॉ कैसे। क्या हमने तुम्हें अभी समुद्र में नहीं फेंक दिया था।"

चाचा कैप्रियानो बोले — "वह तो तुम लोगों ने मुझे किनारे के पास ही फेंका था। वहॉ मुझे ये भेड़ें और बैल मिल गये। अगर तुम लोगों ने मुझे समुद्र में दूर फेंका होता तब तो मुझे और भी ज़्यादा जानवर मिल गये होते।"

यह सुन कर उन्होंने चाचा कैप्रियानो से कहा कि वह उन सबको समुद्र में काफी दूर ले जा कर फेंक दे ताकि वे जानवर उनको मिल सकें। सो वे सब समुद्र की तरफ चल दिये और चाचा कैप्रियानो ने सबको एक एक कर के जल्दी जल्दी समुद्र के किनारे से दूर पानी में फेंक दिया।

उनमें से जब भी किसी को फेंका जाता तो वह कहता — "चाचा कैप्रियानो। मुझे जल्दी से फेंक दो कहीं ऐसा न हो कि मेरा साथी वे सब जानवर ले जाये।"

जब चाचा कैप्रियानो ने सारे डाकुओं को पानी में फेंक दिया तब उन्होंने सारे घोड़ों और गड़रिये के जानवरों को लिया और घर चले आये।

बाद में उन्होंने कई महल बनवाये। वह बहुत अमीर हो गये। उन्होंने अपनी बेटी की शादी भी खूब धूमधाम से की।

जियूसैप्पे पित्रे की लिखी हुई कहानियों में एक बहुत ही मजेदार तरह की कहानी पायी जाती है।[104] ये कहानियॉ कहावतों पर लिखी गयी हैं। पहली कहानी है – "कोई जो ज़्यादा ज़िन्दा रहता है ज़्यादा सीखता है।"

इस कहानी में एक बच्चा एक बूढ़े के पास आता है और उससे आग जलाने के लिये कुछ कोयले मॉगता है। बूढ़ा कहता है कि वह कोयला उसको बड़ी खुशी से दे देता पर बच्चे के पास उसे ले जाने के लिये कुछ है तो है ही नहीं वह उस कोयले को रखेगा कहॉ। खैर बच्चा अपने हाथों में पहले राख भरता है और फिर उसके ऊपर कोयला रख कर उसे ले जाता है।

बूढ़ा अपने सिर पर हाथ मार कर कहता है — "मेरे इतने सालों के जीने और अनुभव के बाद भी मुझे यह नहीं आया। कोई जो ज़्यादा ज़िन्दा रहता है ज़्यादा सीखता है।" और तभी से यह कहावत चल निकली।

एक दूसरी कहानी[105] जियूफ़ा की शरारातों की याद दिलाती है। एक पति जो अदालत में काम करता है अपनी पत्नी और दोस्त के अपने लिये वफादारी की जॉच करने के लिये एक बकरे का सिर कुॅए में फेंक देता है और अपनी पत्नी से कह देता है कि उसने एक आदमी का सिर काट कर कुॅए में फेंक दिया है ताकि उसका शरीर न पहचाना जा सके।

---

[104] Giuseppe Pitre. (Tales Nos 246-270) about illustrious proverb sayings.

[105] Giuseppe Pitre. (Tale No 252)

पत्नी उसको विश्वास दिलाती है कि वह यह बात छिपा कर रखेगी किसी को नहीं बतायेगी पर बहुत जल्दी ही ये सब बातें अपनी एक दोस्त से कह देती है जो जज के सामने कातिल के खिलाफ गवाही दे देती है। एक लकड़ी के खॉचे की सहायता से पति के घर में घुसा जाता है और उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। उसको कुॅए के पास ले जाया जाता है। अदालत का एक आदमी उसमें उतरता है तो उसको उसमें उसको एक बकरे का सिर मिलता है।

तब पति अपनी चाल बताता है जिससे यह कहावत निकली "कभी अपना भेद स्त्री को मत बताओ किसी अदालत वाले को अपना दोस्त मत बनाओ और लकड़ी के खॉचे के साथ वाले घर में मत रहो।"

एक और कहानी यह बताती है कि किस तरह से क्लासिक कहानियॉ लोगों में काफी समय तक ज़िन्दा रहती हैं — "एक राजा है नीरो।[106] वह जनता के बीच इसलिये घूमता रहता है ताकि वह यह जान सके कि लोग उसके बारे में क्या बात कर रहे हैं। एक दिन वह मैदानों में एक बुढ़िया से मिलता है। वह उससे नीरो के बारे में बात करता है तो बजाय उसे कोसने के जैसा कि और लोग कर रहे थे वह उसके लिये कहती है — "भगवान उसको सलामत रखे।"

नीरो कुछ समझ नहीं पाता सो वह उससे इसकी वजह पूछता है। वह अपने इन शब्दों का मतलब उसको इन शब्दों में समझाती है कि उनके कई राजा थे और हर एक पहले से ज़्यादा बुरा था और अब नीरो उनका राजा है जो मॉ से उसका हर बेटा छीन लेता है। भगवान उसकी रक्षा करे और उसे बनाये रखे क्योंकि "बुराई का कोई अन्त नहीं है।"

एक बार एक खब्ती[107] राजकुमार था। उसने सोचा कि वह दुनियॉ के जानवरों और आदमियों को मनचाहे तरीके से रख कर उनके प्राकृतिक स्वभाव को बदल सकता है। उसने अपने घोड़े को मॉस खाना सिखाया। कुत्तें को घास खाना सिखाया। उसने गधे को नाचने की शिक्षा दी और अपनी आवाज पर अपना साथ देना सिखाया। और फिर इस बात की शान बघारी कि कला से प्राकृतिक स्वभाव को काबू में किया जा सकता है।

दूसरी चीज़ों के साथ साथ उसने बिल्ली को मेज पर खड़ा होना सिखाया और जब वह खाना खा रहा होता था तब उसको अपने हाथ में मोमबत्ती पकड़े रखना सिखाया। इसमें उसने

---

[106] Nero – name of the King

[107] Translated for the word "Whimsical". This story is similar to the story of Solomon and Markolf mentioned in my book "Raja Solomon", published by Prabhat Prakashan. 2019.
The same story is given by Giuseppe Pitre (Tale No 200) too.

उसको इतनी अच्छी तरह से शिक्षा दी कि मेज पर कुछ भी होता रहे वह बिल्ली हिलती भी नहीं थी। वह अपने हाथ में मोमबत्ती लिये ऐसे ही खड़ी रहती थै जैसे कोई लकड़ी की मूर्ति हो।

राजकुमार ने इस बिल्ली को अपने दोस्तों को दिखाया और शान बघारते हुए कहा — "प्रकृति तो कुछ भी नहीं मेरी कला उससे ज़्यादा ताकतवर है जो यह सब कर सकती है और दूसरे काम भी कर सकती है।" पर उसका दोस्त अक्सर कहता था कि हर चीज़ अपने स्वभाव से ही काम करती है – "कला तो चली जाती है प्रकृति बनी रहती है।"[108]

इस पर एक दिन राजकुमार ने यह सोच कर कि बिल्ली उसका सिखाया कभी नहीं भूल सकती अपने दोस्त को अपने घर आने और किसी भी तरह इसकी जॉच करने के लिये बुलाया। उस दिन उसके एक दोस्त ने एक चूहा पकड़ लिया और जब वह राजकुमार के घर गया तो उसको साथ ले गया। जब बिल्ली ने चूहे को देखा और सुना उसने तुरन्त ही अपने हाथ में लगी मोमबत्ती नीचे गिरा दी और चूहे के पीछे भाग गयी।

दोस्त हॅसने लगा और राजकुमार तो बस अपना मुॅह खोले उसका देखता का देखता ही रहा गया। यह करके दोस्त बोला — "दोस्त मैंने तुमसे पहले ही कहा था "कला तो चली जाती है प्रकृति बनी रहती है।"

अब तक बेवकूफ लोगों की कहानियों दी गयीं अब हम यह अध्याय कुछ अक्ल्मन्द लोगों की कहानियॉ दे कर खत्म करेंगे।

[108] "Art departs and Nature prevails."

106 पीटर फुलोन और अंडा[109]

जियूसैप्पै पित्रे की लिखी हुई एक और कहानी है "पीटर फुलोन और अंडा"। कहते हैं कि इसे दान्ते ने भी लिखा है।

बहुत पहले की बात है कि पीटर फुलोन नाम का एक आदमी रहता था जो एक कब्रिस्तान के पास पत्थर काटा करता था। यह कब्रिस्तान सेंटो स्पिरीटो के चर्च के पास था।[110]

एक दिन एक आदमी उधर से गुजरा तो उसने पीटर से पूछा — "पीटर सबसे अच्छा खाना क्या है।"

पीटर बोला — "अंडा।" और रुक गया।

एक साल बाद फुलोन फिर वहीं काम कर रहा था। इत्तफाक से वही आदमी जो एक साल पहले वहॉ से गुजरा था वहॉ से फिर से गुजरा। पीटर जमीन पर बैठा बैठा पत्थर तोड़ रहा था।

अबकी बार उस आदमी ने पूछा — "किसके साथ?"

जिसका मतलब यह था कि "अंडा किसके साथ अच्छा लगता है।"

पीटर फुलोन ने तुरन्त ही जवाब दिया — "नमक से।"

---

[109] Peter Fulone and the Egg. Tale No 106. By Giuseppe Pitre. (Tale No 200). This story has been attributed to Dante also. This story in Giuseppe Pitre (Tale No 200) is also attributed to Dante.

[110] There lived a stone-cutter, named Peter Fullone near a cemetery near the Santo Spirito.

पीटर फुलोन इतना अक्लमन्द था कि एक साल बाद भी एक चलते हुए राहगीर की बात याद रख सकता था।

जियूसैप्पे पित्रे का कहना है कि यह कबिस्तान जो इस कहानी में दिया हुआ है सेंट अगाथा के दरवाजे से आगे है – सेंटो स्पिरीटो के पुराने चर्च के पास।

फ्लोरैन्स में एक घूमने वाले ने यह बात महसूस की है कि चौराहे के पूर्व की तरफ जहॉ कैथेड्रल है एक घर की दीवार में एक पत्थर लगा है जिस पर लिखा है "सासो दी दान्ते"।[111] गाइड किताबों से उस घूमने वाले को पता चला है कि गर्मियों की शामों में दान्ते वहॉ बैठा करता था। लोगों का कहना कि एक बार एक अनजान आदमी ने दान्ते को अपनी प्रिय जगह बैठा दखा तो उससे पूछा "सबसे अच्छा खाना क्या है?"

तो दान्ते ने जवाब दिया "अंडा।"

एक साल बाद वही आदमी फिर वहॉ आया जिसे दान्ते ने बहुत दिनों से देखा नहीं था तो उसने पूछा — "किसके साथ?" दान्ते ने तुरन्त ही जवाब दिया "नमक के साथ।"

[111] Sasso di Dante

107 होशियार किसान[112]

अक्लमन्दों की ये कहानियॉ जो अभी हम यहॉ देंगे वे बहुत पुराने समय में यानी मध्यकालीन समय में बहुत लोकप्रिय थीं। यह पहली कहानी सिसिली की है।

एक बार की बात है कि एक राजा था। वह शिकार के लिये गया तो उसने एक किसान को अपने खेत में करते हुए देखा तो उससे पूछा — "तुम एक दिन में कितना कमा लेते हो?"

"चार कार्लिनी योर मैजेस्टी।"

"उसका तुम क्या करते हो?"

किसान बोला — "एक कार्लिनी मैं खाता हूॅ। दूसरी मैं ब्याज पर दे देता हूॅ। तीसरी मैं वापस कर देता हूॅ और चौथी मैं फेंक देता हूॅ।"

राजा यह सुन कर चल दिया पर वह किसान का जवाब भूला नहीं सो वह उस पर विचार करता रहा । वह जवाब उसको कुछ अजीब सा लगा तो वह वापस किसान के पास पहुॅचा और उससे पूछा — "जो अभी तुमने मुझसे कहा ज़रा मुझे इसका मतलब तो बताओ कि "एक कार्लिनी मैं खा लेता हूॅ दूसरी ब्याज पर दे देता हूॅ तीसरी वापस कर देता हूॅ और चौथी फेंक देता हूॅ।"

[112] The Clever Peasant. Tale No 107. Laura Gonzenbach (Tale No 50)

किसान बोला — "योर मैजेस्टी एक कार्लिनी का तो मैं अपना खाना खरीदता हूँ। दूसरा कार्लिनी मैं अपने बच्चों को खिला देता हूँ। तीसरे कार्लिनी का मैं अपने पिता को खाना खिला देता हूँ ऐसा करके मैं उन्हें वह वापस लौटाता हूँ जो उन्होंने मेरे लिये किया है।

और चौथी कार्लिनी से मैं अपनी पत्नी को खाना खिलाता हूँ वह मेरा बेकार जाता है क्योंकि उसको दिया गया मेरा पैसा तो बेकार ही गया न।"

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक ही कह रहे हो। तुम मुझसे वायदा करो कि तुम इस बात को तब तक नहीं किसी और से नहीं कहोगे जब तक कि तुम मेरा चेहरा **100** बार न देख लो।"

किसान ने वायदा किया और राजा खुशी खुशी घर वापस चला गया। एक बार राजा अपने मन्त्रियों के साथ मेज पर बैठा हुआ था तो उसने सबसे कहा — "मैं तुम लोगों को एक पहेली देता हूँ। एक किसान चार कार्लिनी रोज कमाता है। उसमें से एक वह खुद खा लेता है। दूसरी वह ब्याज पर दे देता है। तीसरी वह वापस लौटाता है और चौथी वह फेंक देता है। इसका क्या मतलब है।"

कोई भी इसका जवाब नहीं दे सका। कि अचानक एक मन्त्री को याद आया कि परसों राजा एक किसान के बारे में बात कर रहे थे सो हो सकता है इसका पता उनके उसी से चला हो। सो उसने उसी किसान से उसका मतलब जानने का प्लान बनाया।

वह किसान के पास पहुँचा तो उसने किसान से इस पहेली का मतलब पूछा पर किसान ने जवाब दिया — "अफसोस यह बात मैं तुम्हें नहीं बता सकता। मैंने राजा साहब से वायदा किया है कि मैं इसका जवाब किसी को नहीं बताऊँगा जब तक कि मैं राजा साहब का चेहरा 100 बार न देख लूँ।"

मन्त्री बोला — "अच्छा। तो अगर मैंने तुम्हें राजा साहब का चेहरा 100 बार दिखा दिया तो क्या तुम मुझे वह बात बता सकते हो?"

"क्यों नहीं।"

"तो मैं तुम्हें राजा का चेहरा दिखा सकता हूँ।" कह कर उसने अपने बटुए में 100 सिक्के निकाले जिन पर राजा की तस्वीर बनी हुई थी और किसान को दे दिये।

हर एक सिक्के को देखने के बाद किसान बोला — "अब मैंने राजा साहब का चेहरा 100 बार देख लिया है अब मैं तुम्हें इस पहेली का जवाब बता सकता हूँ।" और उसने उसको जवाब बता दिया।

मन्त्री यह जान कर बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी वह राजा साहब के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी। मुझे इस पहेली का जवाब पता चल गया है।" और उसने उन्हें पहेली का हल बता दिया।

राजा बोला — "यह सब तो लगता है कि तुमने खुद किसान के मुँह से सुना होगा।"

उन्होंने किसान को बुलाया और उससे पूछताछ की — "क्या तुमने मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि तुम मेरा चेहरा जब तक 100 बार नहीं देख लोगे तब तक तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे।"

किसान बोला — "पर योर मैजेस्टी। आपके मन्त्री ने आपकी तस्वीर मुझे 100 बार दिखा दी थी।"

उसके बाद उसने वह सिक्कों का थैला भी राजा साहब को दिखा दिया जो उसे मन्त्री ने दिया था।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उस किसान की होशियारी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसको इनाम दिया और ज़िन्दगी भर के लिये उसको अमीर बना दिया।[113]

[113] Almost the same story has been given by Giuseppe Pitre with the title "The Peasant and the King". (Tale No 297).

108 होशियार लड़की[114]

एक बार की बात है कि एक शिकारी था जिसके एक पत्नी और दो बच्चे थे – एक बेटा और एक बेटी। वे सब एक जंगल में रहते थे जहॉ कभी कोई नहीं आता था। इसलिये वे दुनियॉ के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। कभी कभी उनक पिता ही शहर जाया करता था और वहॉ से खबरें लाया करता था।

एक बार एक राजा का बेटा शिकार खेलने निकला तो जंगल में रास्ता भटक गया। और जब वह अपना रास्ता ढूँढ रहा था कि रात हो गयी। वह थका हुआ था और भूखा था। ज़रा सोचो कि उसे कैसा लग रहा होगा।

पर तभी दूर उसने एक रोशनी चमकती हुई देखी तो वह उसकी तरफ बढ़ चला और शिकारी के घर आ गया। वहॉ आ कर उसने कुछ खाने के लिये और रहने की जगह मॉगी।

शिकारी ने तुरन्त ही उसे पहचान लिया तो वह बोला — "योर हाईनैस। हमने तो हमारे पास जो कुछ था वह खा लिया है पर अगर हम आपके लिये कुछ भी ला सकें तो आप मेहरबानी कर के उससे सन्तुष्ट हो जाइयेगा। हम क्या कर सकते हैं? हम शहर से बहुत दूर रहते हैं। हम तो वह चीज़ भी रोज रोज नहीं ला सकते जो हमें रोज चाहिये।"

[114] The Clever Girl. Tale No 108.

इस बीच उसके पास एक मुर्गा पका हुआ रखा हुआ था। राजकुमार उसको अकेला नहीं खाना चाहता था सो उसने शिकारी के परिवार को बुलाया। मुर्गे का सिर उसने शिकारी को दिया। उसकी पीठ उसकी मॉ को दी। टॉगें उसके बेटे को दीं। उसके पंख बेटी को दिये और बाकी बचा हुआ उसने खुद खा लिया।

इस घर में केवल दो पलंग थे जो एक ही कमरे में थे। बूढ़े लोग तो घुड़साल में जा कर सो गये। उन्होंने अपना कमरा राजकुमार को दे दिया था।

जब लड़की ने देखा कि राजकुमार सो गया तो उसने अपने भाई से कहा — "मैं तुमसे शर्त लगाती हूॅ कि तुम यह नहीं बता पाओगे कि राजकुमार ने जिस तरह से मुर्गे का हम सब में बॉटा उस तरह से उसने क्यों बॉटा।"

"क्या तुम जानती हो? तो मुझे बताओ।"

लड़की बोली — "उसने मुर्गे का सिर पिता जी को इसलिये दिया क्योंकि वह परिवार के सरदार हैं। उसकी पीठ मॉ को इसलिये दी क्योंकि घर की सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर है। तुमको टॉगें उसने इसलिये दीं ताकि तुम जल्दी जल्दी बाहर के काम कर सको। पंख उसने मुझे इसलिये दिये ताकि मैं उड़ कर अपने लिये अपना पति पकड़ सकूॅ।"

राजकुमार ने तो केवल बहाना बना रखा था सोने का। वह अभी सोया नहीं था। वह तो अभी तक जाग हुआ था। वह ये सब

बातें सुन रहा था। लड़की की बातों से उसे लगा कि यह लड़की तो बड़ी होशियार है। वह सुन्दर भी थी सो वह उससे प्रेम करने लगा।

अगले दिन सुबह उसने शिकारी का घर छोड़ दिया और दरबार में पहुँचा। तुरन्त ही उसने शिकारी के लिये पैसों का एक थैला भेजा और लड़की के लिये उसने पूरे चाँद की शक्ल का एक केक भेजा। **30** पैटीज़ भेजीं और एक पका हुआ मुर्गा भेजा जिनके साथ तीन सवाल थे —

जंगल में क्या वह महीने की **30**वीं रात थी या चाँद पूरा था और क्या मुर्गा रात को बोला था।"

अब नौकर हालाँकि बहुत ही विश्वास वाला था पर फिर भी उस खाने को देख कर उसके मुँह में पानी भर आया। उसने उनमें से **15** पैटीज़ तुरन्त ही खा लीं। एक अच्छा बड़ा टुकड़ा केक का खा लिया और सारा मुर्गा खा लिया।

नौजवान लड़की सब समझ गयी। उसने राजकुमार को वापस सन्देश भेजा – चाँद पूरा नहीं था उतार पर था। **15**वीं रात थी और मुर्गा चक्की पर गया था।" उसके बाद उसने लिखा था कि चिड़िया को तीतर के लिये माफ कर दिया जाये।

राजकुमार ने उसके सन्देश का मतलब समझ लिया। उसने नौकर को बुलाया और डाँटते हुए कहा — "अरे ओ रोग। तूने मुर्गा भी खा लिया **15** पैटीज़ भी खा लीं और एक बड़ा टुकड़ा केक

का भी खा लिया। उस लड़की को धन्यवाद दे कि उसने तेरी जान बचा ली वरना मैं तुझे अभी फॉसी पर लटकवा देता।"

X X X X X X X

इसके कुछ महीने बाद शिकारी को कहीं से एक सोने की ओखली मिल गयी तो उसने सोचा कि वह उसको राजकुमार को दे आता है। पर उसकी बेटी बोली — "पिता जी आपकी इस भेंट पर आपकी हॅसी उड़ायी जायेगी। पता है राजकुमार क्या कहेंगे "यह ओखली तो बहुत सुन्दर और अच्छी है पर इसका मूसल कहॉ है।"

पिता ने अपनी बेटी की बातों पर ध्यान नहीं दिया और वह सोने की ओखली राजकुमार को देने के लिये चल दिया। पर जब वह राजकुमार के पास पहुॅचा तो वैसा ही हुआ जैसा उसकी बेटी ने कहा था।

राजकुमार का जवाब सुन कर शिकारी के मुॅह से निकला — "ओह। यही मेरी बेटी ने कहा था। काश मैं उसकी बात सुनी होती।"

यह सुन कर राजकुमार की उत्सुकता बढ़ गयी उसने तुरन्त ही पूछा — "आपकी बेटी ने क्या कहा था।"

"यही योर मैजेस्टी जो आपने अभी कहा।"

राजकुमार बोला — "अगर तुम्हारी बेटी अपने आपको इतना ही होशियार समझती है तो उससे कहना कि वह चार औंस रुई से

मेरे लिये 100 ऐल[115] लम्बा कपड़ा बुन कर दे। अगर वह नहीं बना कर देगी तो मैं तुम दोनों को फॉसी पर लटकवा दूँगा।"

पिता बेचारा रोता हुआ घर वापस आया। उसको यकीन था कि बस अब दोनों पिता और बेटी मर जायेंगे। जब उसकी बेटी उससे मिलने आयी तो उसने पिता से पूछा — "पिता जी आप रो क्यों रहे हैं।"

पिता ने उसे बताया कि वह क्यों रो रहा था। तो वह सुन कर बोली — "अरे पिता जी बस इतनी सी बात। आप मुझे रुई ला कर दे दें और बाकी मैं सॅभाल लूँगी।"

पिता ने उसे रुई ला कर दे दी तो उसने उसकी चार रस्सियॉ बनायीं और अपने पिता को राजकुमार को देने के लिये कहा और कहा कि उनसे जा कर कहियेगा कि जब भी इसमें से वह धागा बनवा लेंगे मैं 100 ऐल कपड़ा बुन दूँगी।"

राजकुमार ने जब यह जवाब सुन उसको तो यही समझ नहीं आया कि वह इसके जवाब में क्या कहे। फिर उसने पिता और बेटी को सजा देने के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा।

अगले दिन वह लड़की से मिलने जंगल गया। उसकी मॉ तो मर गयी थी और उसका पिता खेत पर उसे खोदने गया हुआ था।

राजकुमार ने दरवाजा खटखटाया पर दरवाजा किसी ने नहीं खोला। उसने दरवाजा और ज़ोर से खटखटाया पर फिर भी किसी

[115] One Ell = 18". So 100 Ell long means 50 yards.

ने दरवाजा नहीं खोला। वह लड़की तो उसकी तरफ से जैसे बहरी थी।

अन्त में जब वह बाहर इन्तजार करते करते थक गया तो उसने पैर मार कर दरवाजा तोड़ दिया और अन्दर जा कर बोला — "ओ बेशऊर लड़की तुझे यह किसने सिखाया कि मेरे जैसे आदमी के लिये तू दरवाजा न खोले। तेरे माता पिता कहॉ हैं।"

"किसको पता था कि वहॉ आप हैं। मेरे पिता तो वहीं हैं जहॉ उन्हें होना चाहिये और मेरी मॉ अपने पापों के लिये रो रही है। अब आप यहॉ से चले जायें क्योंकि मुझे आपकी बात सुनने की बजाय और भी काम करने हैं।"

यह सुन कर राजकुमार गुस्से में भर कर वहॉ से चला गया और उसके पिता से उसकी बेटी के भद्दे व्यवहार की शिकायत की पर पिता ने उसे माफ कर दिया।

आखिर में यह देख कर कि लड़की कितनी होशियार थी उसने उससे शादी कर ली। शादी बड़े धूमधाम से हुई पर इसमें एक घटना घट गयी जिससे राजकुमारी बेचारी परेशानी में फॅस गयी।

एक रविवार को दो किसान चर्च जा रहे थे। उनमें से एक किसान के पास एक हाथ गाड़ी थी और दूसरे के पास एक गधी थी जिसको बच्चा होने वाला था।

मास के लिये घंटी बजी तो दोनों चर्च में घुस गये। गाड़ी वाले ने अपनी गाड़ी बाहर छोड़ दी थी और गधी वाले ने अपनी गधी गाड़ी से बॉध दी थी।

जब वे लोग चर्च में थे तो गधी ने बच्चा दे दिया। अब गधी का मालिक और गाड़ी का मालिक दोनों ही यह कहने लगे कि गधी का बच्चा मेरा है।

जब मामला नहीं सुलझा तो वे राजकुमार के पास गये। राजकुमार ने फैसला सुनाया कि गधी का बच्चा गाड़ी वाले का है। उसका कहना था कि इस बात की ज़्यादा सम्भावना थी कि गधी के मालिक ने गधी को गाड़ी से बॉध दिया हो ताकि वह गधी के बच्चे पर अपना झूठा दावा कर सके। बजाय इसके कि गाड़ी वाले ने अपनी गाड़ी गधी के साथ बॉधी हो।

गधी का मालिक अपने अधिकार के लिये पक्का था। सारे लोग भी उसी की तरफ थे। पर राजकुमार ने तो उसके लिये सजा सुना दी थी और अब कहने के लिये कुछ रह नहीं गया था।

गधी का मालिक बेचारा राजकुमारी के पास गया। तो राजकुमारी ने उसे सलाह दी कि वह शहर के चौराहे पर अपना मछली पकड़ने वाला जाल डाल दे। राजकुमार वहॉ से जरूर गुजरेगा और उसे देखेगा।

उसने वैसा ही किया। जब राजकुमार उधर से गुजरा तो उसने गधी के मालिक से पूछा — "यह तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

गधी के मालिक ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी। मैं यहॉ मछलियॉ पकड़ रहा हूँ।"

राजकुमार बोला — "तुम बेवकूफ हो। तुम क्या समझते हो कि तुम्हें यहॉ चौराहे पर मछलियॉ मिल जायेंगी?"

गधी के मालिक ने जैसा राजकुमारी ने उसे सिखाया था उसी तरह से जवाब देते हुए कहा — "मेरे लिये चौराहे पर मछलियॉ पकड़ना आसान है बजाय उस गाड़ी के जिसने गधे का बच्चा दिया हो।"

यह सुन कर राजकुमार ने उसकी सजा वापस ले ली पर जब वह महल वापस आया तो यह जानते हुए कि यह जवाब राजकुमारी का था उसने राजकुमारी को तुरन्त ही बुलाया। उसके आ जाने पर उसने उससे कहा — "अब तुम एक घंटे के अन्दर अन्दर अपने घर जाने के लिये तैयार हो जाओ। तुम अपने साथ अपनी एक सबसे प्रिय चीज़ को ले जा सकती हो।"

राजकुमारी को यह सुन कर कोई दुख नहीं हुआ। उसने रोज से ज़्यादा अच्छी तरह से खाना खाया। राजकुमार के लिये शराब बनायी जिसमे उसने थोड़ी सी सोने की दवा मिल दी।

जब वह गहरी नींद सो गया तो उसको एक गाड़ी में डलवाया और अपने घर ले गयी। यह जनवरी का महीना था सो उसके घर की छत खुली पड़ी थी। रात को जब बर्फ पड़ी तो वह राजकुमार के ऊपर भी पड़ी।

राजकुमार ने उससे पूछा — "यह सब क्या है।"

पत्नी बोली — "यह मैं हूँ। आपने कहा था कि में अपनी सबसे प्रिय चीज़ ले कर अपने घर चली जाऊँ सो मैं आपको ले कर अपने घर आ गयी।"

राजकुमार यह सुन कर बेतहाशा हँस पड़ा। उसके बाद दोनों में सुलह हो गयी। राजकुमार राजकुमारी को ले कर महल चला गया।

109 केंकड़ा[116]

यह कहानी ग्रिम्स की कहानी "डाक्टर नोऔल"[117] का इटली में कहा सुना जाने वाला रूप है। इसका सिसिली में कहा सुना जाने वाला एक रूप भी है जिसे जियूसैप्पे पित्रे ने लिखा है।[118] इसमें हमारी यह घटना उसकी केवल एक घटना है। यह मैन्टुआन में कहे सुने जाने वाले रूप में अकेली ही कही सुनी जाती है। यह कहानी हमने वहीं से ली है। बस इसका नाम बदल दिया गया है।

एक बार एक राजा था जिसकी एक बहुत कीमती अँगूठी खो गयी। उसने उसे सब जगह ढूँढा पर वह उसको नहीं मिली। तो उसने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि अगर कोई ज्योतिषी उसे यह बतायेगा कि उसकी अँगूठी कहाँ है तो वह उसे बहुत सारा इनाम देगा।

उस राज्य में केंकड़े नाम का एक गरीब किसान भी रहता था। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था पर उसने यह निश्चय कर लिया कि वह राजा की अँगूठी ढूँढ कर रहेगा। सो वह राजा के पास गया और उससे कहा — "योर मैजेस्टी। हालाँकि आप मुझे फटे हाल देख रहे हैं पर मैं एक ज्यातिषी हूँ। मुझे मालूम है कि आपकी अँगूठी खो गयी है। मैं अपने ज्ञान के अनुसार उसे ढूँढने की कोशिश करूँगा।"

---

[116] The Crab. Tale No 109.
This story is given in Italo Calvino's book "Folktales of Italy", tr in English by Martin, and translated in Hindi as "Italy KI Lok Kathayen-2", by Sushma Gupta, the 25th tale under the heading of "The Peasant Astroger".

[117] Doctor Knowall. By Grimm. (Tale No 98)

[118] Giuseppe Pitre. (Tale No 167)

राजा बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। और हॉ जब तुम उसे ढूँढ लो तब तुम्हें क्या इनाम चाहिये यह भी बता दो मुझे।"

"योर मैजेस्टी जो आपकी मर्जी हो वह दे दीजियेगा।"

"ठीक है। जाओ और पढ़ लिख कर मुझे बताओ कि मेरी अँगूठी कहॉ है। देखते हैं तुम किस तरह के ज्योतिषी निकलते हो।"

उसको एक कमरा दे दिया गया जिसमें उसको अध्ययन करने के लिये बन्द कर दिया गया। उसमें केवल एक बिस्तर था एक मेज थी जिस पर एक बहुत बड़ी सी किताब रखी थी और कलम दवात रखे हुए थे।

केंकड़ा मेज पर बैठ गया और बस उस किताब के पन्ने पलटने लगा और कभी कभी कागज पर कुछ बेमतलब के निशान बना देता। उसे पढ़ना लिखना तो आता नहीं था।

नौकर जो उसके लिये खाना लाते थे वे समझे कि वह बहुत बड़ा ज्येतिषी था। वास्तव में उन्होंने ही राजा की अँगूठी चुरायी थी। पर जब भी वह उस कमरे में आता तो किसान उनको बड़ी तेज़ नजरों से देखता तो उनको शक हो गया कि "लगता है कि ज्योतिषी को पता चल गया है कि हम ही ने राजा की अँगूठी चुरायी है।" उनको डर लगने लगा कि अब वे उन्हें पकड़ लेंगे।

इसलिये अब जब भी वे कमरे में आते तो दसियों बार उसके सामने अपना सिर झुकाते और बिना "मिस्टर ज्योतिषी" कहे उससे बात ही नहीं करते।

अब केंकड़ा बेपढ़ा लिखा जरूर था पर वह बुद्धू नहीं था। वह बहुत चालाक था। नौकरों के ऐसे व्यवहार से उसने भॉप लिया कि इन्हीं नौकरों ने राजा की अँगूठी चुरायी है। उसका शक फिर इस तरह से पक्का हुआ।

वह एक महीने से अपने बन्द कमरे में बैठा हुआ किताब के पन्ने पलट रहा था और कागजों पर बेमतलब निशान बना रहा था कि एक दिन उसकी पत्नी उससे मिलने के लिये आयी। उसने उससे कहा कि वह पलंग के नीचे छिप जाये। और जब एक नौकर कमरे में घुसे तो बोलना "एक तो यह है।" और जब दूसरा आये तो कहना "यह दूसरा है।" उसकी पत्नी पलंग के नीचे छिप गयी।

जब नौकर खाना देने आये तो अभी एक नौकर ही कमरे में घुस पाया था कि वह पलंग के नीचे से ही बोली "यह एक है।" और फिर जैसे ही दूसरा घुसा तो वह बोली "यह दूसरा है।"

नौकर ये आवाजें सुन कर डर गये क्योंकि उनको यह पता ही नहीं चल रहा था कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी।

उन्होंने आपस में सलाह की और फिर उनमें से एक बोला — "हम पहचान लिये गये हैं। अगर ज्योतिषी हमारा राज़ राजा से कह

देगा तो वह राजा की नजरों में हमें बदनाम कर देगा और हम फिर कहीं के नहीं रहेंगे।"

दूसरा बोला — "पता है अब हमें क्या करना चाहिये।"

"बोलो।"

"हमको अब ज्योतिषी के पास जाना चाहिये और उससे कह देना चाहिये कि राजा की अँगूठी हमने चुरायी है और उससे विनती करनी चाहिये कि वह हमें धोखा न दे। इसके लिये हमें उसे कुछ पैसे भी देने चाहिये। क्या तुम तैयार हो?"

"हॉ बिल्कुल।"

वे दोनों मिल कर ज्योतिषी के पास गये और रोज से भी ज़्यादा नीचे झुक कर एक ने शुरू किया — "मिस्टर ज्योतिषी जी। आपने हमें पहचान लिया है कि हमने राजा साहब की अँगूठी चुरायी है। हम लोग बहुत गरीब हैं। अगर आप यह बात राजा साहब को बता देंगे तो हमारे किये धरे पर पानी फिर जायेगा।

हम आपसे विनती करते हैं कि आप राजा से हमारी शिकायत न करें और इसके लिये यह पैसों का थैला स्वीकार करें।"

केंकड़े ने उनसे वह पैसों का थैला ले लिया और बोला — "मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा। पर अगर तुम्हें अपनी ज़िन्दगी बचानी है तो तुम्हें मेरा कहा करना पड़ेगा। तुम लोग अँगूठी लो और एक टर्की को निगलवा दो। बाकी सब मैं देख लूँगा।"

नौकरों को यह सुन कर सन्तोष हो गया और वे किसान को सिर झुका कर चले गये। अगले दिन केंकड़ा राजा के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी एक महीना मेहनत करने के बाद मुझे पता चल गया है कि आपकी अँगूठी कहाँ है।"

राजा खुशी से बोला — "अच्छा। कहाँ है वह।"

"एक टर्की ने उसको निगल लिया है।"

"क्या टर्की ने। अच्छा। देखते हैं।"

वे टर्की के पास गये उसका पेट फाड़ा गया तो उसके पेट से राजा की अँगूठी निकल आयी। राजा को यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी बहुत हुई। उसने ज्योतिषी को बहुत सारा पैसा इनाम में दिया और उसे एक दावत के लिये न्यौता दिया।

और बहुत सारे खानों के साथ उस दावत में केंकड़े भी लाये गये थे। केंकड़े उन दिनों एक बहुत ही खास खाना हुआ करता था जिसे केवल राजा लोग ही खाते थे। बहुत सारे लोगों को तो उसका नाम भी पता नहीं था।

तो किसान की तरफ घूमते हुए राजा ने कहा — "तुम तो एक ज्योतिषी हो तो तुमको तो इस खाने का नाम पता हो सकता है।"

किसान बेचारा यह सुन कर सकपका गया। वह फुसफुसाया "आह केंकड़े तू किस मुसीबत में पड़ गया।"

जिन लोगों को उसका नाम पता नहीं था कि उसका नाम केंकड़ा है वे उठे और उन्होंने उसे दुनियॉ का सबसे बड़ा ज्योतिषी घोषित कर दिया।

टस्कन की एक कहानी है "डाक्टर किकेट"। इस कहानी में यह एक नकली डाक्टर है जो एक राजा की बेटी को उसको बहुत ज़ोर से हॅसा कर ठीक करता है क्योंकि उसके गले में मछली की हड्डी अटक गयी थी। इतनी ज़ोर से हॅसने पर उसके गले की हड्डी गले से बाहर आ जाती है।

इससे डाक्टर किकेट इतना लोकप्रिय हो जाता है कि दूसरे डाक्टरों को कोई नहीं पूछता। दूसरे डाक्टर आखिर राजा के पास जाते हैं कि उसको मरवा दिया जाये। राजा उसको मरवाने से मना कर देता है पर उसको एक बहुत ही मुश्किल काम सौंप देता है जैसे एक अस्पताल के सारे मरीजों को ठीक करने का। अगर वह इस काम को पूरा नहीं कर पाता तो या तो उसे डाक्टर का धन्धा छोड़ना पड़ेगा या फिर मरना पड़ेगा।

डाक्टर किकेट के पास एक बहुत बड़ा बर्तन है जिसको पानी से भर कर वह आग पर रख कर गर्म करता है और फिर अस्पताल के सारे मरीजों से कहता है कि जब पानी गर्म हो जायेगा तो उनको सबको उस गर्म पानी में डाल दिया जायेगा। पर अगर कोई यहॉ से जाना चाहे तो जा सकता है। स्पष्ट है कि सारे के सारे मरीज अस्पताल से भाग गये। और जब राजा आया तो सारा अस्पताल खाली था। वहॉ एक भी मरीज नहीं था।

राजा यह देख कर दंग रह गया उसने डाक्टर को बहुत सारा इनाम दे कर घर वापस भेज दिया गया।

एक और कहानी है जो हमारी इसी कहानी से मिलती जुलती है। यह कहानी स्ट्रापरोला की कहानी है[119] जिसमें एक मॉ अपने बेवकूफ बेटे को "गुड डे" ढूॅढने के लिये भेजती है। वह

[119] Straparola. (Tale No 13-6)

नौजवान शहर के दरवाजे के पास रास्ते में लेट जाता है जहॉ से वह उन सबको देख सकता है जो उस शहर में आते जाते हैं। अब ऐसा होता है कि तीन आदमी अपना खजाना जो उन्होंने ढूँढा है लेने के लिये शहर से बाहर जाते हैं। जब वे वापस लौट कर आते हैं तो उस नौजवान को "गुड डे" कह कर नमस्ते करते हैं।

जब उनमें से पहला आदमी उसको गुड डे कहता है तो वह अपने मन में कहता है कि मुझे एक गुड डे तो मिल गया। और दूसरे दो भी उसको गुड डे कह कर नमस्ते करते हैं तब तो उसको तीन गुड डे मिल जाते है। उधर वे तीनों लोग यह समझते हैं कि शायद वे पकड़े गये हैं सो इस डर से कि वह नौजवान कहीं मजिस्ट्रेट से उनकी शिकायत न कर दे उससे अपना खजाना बॉटने के लिये तैयार हो जाते हैं।

Some Names and Sources Used in This Book

Basile, Giambattista. "The Pentamerone or the Story of Stories." Translated by John Edward Taylor. London. 1850. Availabale with Sushma Gupta in Hindi.

Bernoni, Dom. Giuseppe. "Leggende fantastiche…."

Busk R H.
Hahn. "Griechische und Albanesische Marchen". Leipzig. 1864. 2 vols.

Comparetti, Domenico.
de Gub. Sto Stefano.
Gianandrea, Antonio
Gonzenbach, Laura. "Fiabe Siciliane".
Imbriani, Vittorio
Knust, Hermann
Morosi, Prof Dott Giuseppe
Nerucci, Prof Gherardo
Pitre, Giuseppe
Schneller, Christian. "Marchen und Saggen aus Walschtirol". 1867.
Straparola, Giovanni Francesco. 1562.

List of the Tales of "Italian Popular Tales"

Part 1

1. King of Love
2. Zelinda and the Monster
3. King Bean
4. The Dancing Water, the Singing Apple and the Talking Bird
5. The Fair Angiola
6. The Cloud
7. The Cistern
8. The Griffin
9. Cinderella
10. Fair Maria Wood
11. The Curse of the Seven Children
12. Oraggio and Blanchinetta
13. The Fair Florita
14. Bierde
15. Snow-White-Fire-Red
16. How the Devil Married Three Sisters
17. In Love With a Statue
18. Thirteenth
19. The Cobbler
20. Sir Florante Magician
21. The Cystal Casket
22. The Stepmother
23. Water and Salt
24. The Love of the Three Oranges

Part 2

25. The King Who Wanted a Beautiful Wife
26. The Bucket
27. The Two Humpbacks
28. The Story of Catherine and Her Fate
29. The Crumb in the Beard
30. The Fairy Orlanda
31. The Shepherd Who Made the King's Daughter Laugh
32. The Ass That Lays Money
33. Don Joseph Pear
34. Puss in Boots
35. Fair Brow

36. Lionbruno
37. The Peasant and the Master
38. The Ingrates
39. The Treasure
40. The Shepherd
41. The Three Admonitions
42. Vineyard I Was and Vineyard I Am
43. The Language of the Animals
44. The Mason and His Son
45. The Parrot: First Version
46. The Parrot: Second Version
47. The Parrot Which tells Three Stories: Third Version
48. Truthful Joseph
49. The Man the Serpent and the Fox
50. Lord Saint Peter and Apostles

Part 3
51. The Lord, St Peter and the Blacksmith
52. In This World One Weeps and Another Laughs
53. The Ass
54. Saint Peter and His Sisters
55. Pilate
56. Story of Judas
57. Desperate Malchus
58. Malchus at the Column
59. The Srory of Buttadeu
60. The Story of Crivoliu
61. The Story of St James of Galacia
62. The Baker's Apprentice
63. Occasion
64. Brother Giovannone
65. Godfather Misery
66. Beppe Pipetta
67. The Just Man
68. Of a Godfather and Godmother of St John Who Made Love
69. The Groomsman
70. The Parrish Priest of San Marcuola
71. The Gentlemen Who kicked a Skull
72. The Gossips of St John
73. Saddaedda

Part 4

74. Mr Attentive
75. The Story of the Barber
76. Don Firriyulieddu
77. The Little Chickpea
78. Pitidda
79. Saxton's Nose
80. The Cock and the Mouse
81. Godmother Fox
82. The Cat and the Mouse
83. A Feast Day
84. The Three Brothers
85. Buchettino
86. Three Goslings
87. The Cock
88. The Cock and That Wished to Become Pope
89. The Goat and the Fox
90. The Ant and the Mouse
91. The Cook
92. The Thoughtless Abbot
93. Bastianelo
94. Christmas
95. The Wager
96. Scissiors They Were
97. The Doctor's Apprentice
98. Firrazzanu's Wife and the Queen
99. Giufa and the Plaster Statue
100. Giufa and the Judge
101. The Little Omelet
102. Eat My Clothes
103. Giufa's Exploits
104. The Fool
105. Uncle Capriano
106. Peter Fullone and the Egg
107. The Clever Peasant
108. The Clever Girl
109. The Crab

Classic Books of European Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio.
Translated in 3 volumes

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales.
Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। दो भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। चार भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **1998**। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। दो भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टील। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.
इन्डियन ऐन्टीक्वैरी — जरनल की लोक कथाओं का संग्रह। **2022**

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated : 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022